

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180757

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/H27G Accession No. G.H. 2500

Author हाडी, थामस ।

Vol. III

Title ज्वालिन ।

This book should be returned on or before the date
ist marked below.

वालिनी

(तीसरा भाग)

लेखक
थामस हार्डी

अनुवादक
मधुसूदनदास चतुर्वेदी

चेतना प्रकाशन लिमिटेड

प्रकाशक :

देवेन्द्र कुमार गोस्वामी

मेनेजिंग डायरेक्टर

चेतना प्रकाशन लिमिटेड

भाबिद रोड, हैदराबाद

प्रथम संस्करण

मूल्य तीन रुपये

मुद्रक :

केदार शर्मा

व्यवस्थापक

कमर्शियल प्रिंटिंग प्रेस

हैदराबाद

: मा. न. मंडल के अन्य प्रकाशन :



			रु. आ. पा.
१. टैस	खंड १	(उपन्यास)	२ ८ ०
२. „	खंड २	„	३ ० ०
३. „	खंड ३	„	२ ८ ०
४. वासन्ती	ले. चातक	(कविता)	२ ८ ०
५. वेद में कविता—	ले. आर्येन्द्र शर्मा	(निबन्ध)	० ४ ०
६. मैथिलीशरल गुप्त—	ले. पं. भीष्मदेव शास्त्री	„	० ४ ०

टैस

खण्ड—३

छठवीं-झलक

४५

जब से टैस त्रैन्विज से चली आई थी तब से अब तक उसने न तो कभी दरबारविल को देखा था और न उसका कोई सन्देश ही सुना था ।

उनकी यह नई भेंट एक कठिन समय पर हुई; यह एक ऐसा अवसर था जब कि टैस के हृदय में इस भेंट के द्वारा कम से कम भावनाओं के जागृत होने की संभावना थी । परन्तु टैस की स्मरणशक्ति इस समय कुछ ऐसी विवेकशून्य बन गई कि उसको एक परिवर्तित और पश्चात्तापपूर्ण व्यक्ति के रूप में देखकर भी वह उससे भयभीत होगई; उस की गति रुक गई; न वह आगे बढ़ सकी और न पीछे हट सकी ।

वह सोचने लगी कि यही आनन जब उसने पहले देखा था, तब कैसा था और अब कैसा है । आनन पर अब भी वही सुन्दर अप्रियता विद्यमान थी परन्तु अब उसकी स्मृति विधिवत कटी-छटी थीं यद्यपि उनका ढंग पुराना ही था; पूर्व की रेखें विलीन हो चुकी थीं;

उसके वल्ल भाषे से अधिक धार्मिक जीवन के अनुसार थे; इस परिवर्तन ने उसके आनन से छेलापन दूर कर दिया था और टैस को उसे पहचान कर उस पर विश्वास करने में इमी कारण कुछ क्षण लगे ।

टैस के मन में पहले तो गंभीर असम्यद्धता की भावना छा-गई । बाइबिल के पवित्र शब्द ऐसे मुख से कैसे निकल रहे थे । यही आवश्यकता से अधिक परिचित उच्चारण चार वर्ष पूर्व उसके श्रवणों में दूसरे ही प्रकार के भाव व्यक्त करता रहा था । यही सोच कर वह इस तुलना से मन ही मन खीझ उठी ।

इस स्थिति को सुधार न कह कर आमूल परिवर्तन कहना चाहिये । पहिले की कामुकता अब भक्ति में बदल गई थी । वही अब जो पहले दूसरों को बहकाते रहते थे-अब भगवान के प्रति आदरभाव स्थापित करने में लीन थे । कपोलों की चमक जो पहले विद्रोह प्रदर्शित करती रही थी आज धर्म का प्रकाश फैला रही थी । साधारण मानवता कट्टर धार्मिकता में बदल चुकी थी । अधार्मिकता का स्थान धर्म की एक विशेष धारा ने ग्रहण कर लिया था । जो आज वही धूमकर पहले टैम पर अपना आतंक छा देती थी, आज वही धार्मिक कट्टरता की शक्ति का विज्ञापन कर रही थी । उसके आनन पर उसकी इच्छा की पूर्ति न होने पर जो रेखाएँ अंकित होती थीं आज वही रेखाएँ कर्तव्य-पालन में रत थीं क्योंकि उन के द्वारा वह उन व्यक्तियों के प्रति असंतोष प्रकट कर रहा था, जो उसके उपदेश से प्रभावित न हों ।

इस स्थिति में उसके अवयव कुछ उपालंभ सा दे रहे थे । ऐसा प्रतीत होता था कि प्रकृति ने उन्हें जिन क्रिया-कलापों की पूर्ति के लिये बनाया था, उनके विपरीत उन्हें कार्य करना पड़ रहा था । अजीब

बात तो उनकी उन्नति ही थी जो असंगत जान पड़ती थी तथा जिसमें सत्य की अपेक्षा झूठ का अधिक महत्व प्रतीत होता था ।

क्या यह संभव है ? टैस इस परिवर्तन को असंभव मानकर उसके प्रति अब और अधिक अनुदार न बनना चाहती थी । दरबारबिल पहला व्यक्ति न था जिसने अपने कलुषित जीवन को इस प्रकार बदल लिया था; अपनी आत्मा की इसी जीवन में रक्षा करने के लिये और भी व्यक्तियों में ऐसे परिवर्तन देखे जा चुके थे—फिर उमी में वह क्यों इसे अस्वाभाविक माने ? वास्तव में टैस की विचार-ग्रहण-प्रणाली में यह बात खटक रहा थी; उसे जिन स्वरो में बुरी-बुरी बातें सुनने को मिल चुकी थीं—आज उन्हीं स्वरो में अच्छे नवीन शब्द सुनाई दे रहे थे । कहावत है कि जितना ही बड़ा पापी होता है वह उतना ही बड़ा महात्मा बनता है । इस बात को प्रमाणित करने के लिये ईसाइयों के इतिहास में बहुत खोज करना आवश्यक न था ।

इस प्रकार के विचारों ने टैस पर अनिश्चित प्रभाव डाला परन्तु फिर भी वह किसी अन्तिम निश्चय पर न पहुँच सकी । ज्योंही उसके आश्चर्य की सीमा कुछ कम हुई, उसका पहला विचार उसके सामने से हट जाने का हुआ । प्रत्यक्ष ही उसने टैस को इन नवीन स्थिति में सूर्य-रश्मियों के सम्पूर्ण प्रकाश में न देख पाया था ।

परन्तु ज्योंही टैस अपने स्थान से हटी, उसने उसे पहचान लिया । उसके पुराने प्रेमी पर विद्युत जैसा प्रभाव पड़ा; टैस पर उसकी उपस्थिति का जो प्रभाव पड़ा था, उससे यह कहीं अधिक था । उसके व्याख्यान की आग यकामक बुझती सी प्रतीत हुई । उसके अधर शब्दों के भार से दब कर काँपने लगे । जब तक टैस वहाँ खड़ी रही, वे

उन शब्दों का जनता तक न पहुंचा सके। ज्योंही उसकी आंखों में टैस का मुख देखा, वे सब कुछ भूल गईं। अब वे इधर उधर देखने के प्रयास में अधीर बनकर फिर कुछ ही क्षणों में सवेग टैस ही की ओर आकर्षित हो जाती थीं। यह क्रिया-हीनता बहुतही थोड़े समय तक रही क्योंकि टैसने ज्योंही इसका अनुभव किया, वह शीघ्रता से घेरे के बाहर चली आई और अपने घर की ओर चल दी।

ज्योंही टैस को सोचने का अवसर मिला, वह इस परिवर्तन में विकल हो उठी। इस समय वह अपनी तथा दरभरयिल की स्थितियों में उलट फेर देख रही थी। जिस व्यक्ति ने उसके जीवन को दुःखमय बना दिया था, आज वही आत्मा की पवित्रता के पाठ पढ़ा रहा था - टैस स्वयं सम्प्रति पापिनी ही थी। और जैसा कि एक पुरानी कथा में कहा जाता है - इस उपदेशक के समक्ष एक प्रतिमा ऐसी आसड़ी हुई कि उसका समस्त उत्साह क्षीण हो गया।

टैस बिना पीछे देखे आगे बढ़ने लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी पीठ में ही यह शक्ति आ गई है कि यदि कोई पीछे से उसकी ओर देखेगा तो वह पहचान लेगी। यहां तक सम्पूर्ण मार्ग में उसका हृदय किसी सुप्त दुःख के जाग जाने से पीड़ित था; अब उस दुःख के प्रकार में भी कुछ परिवर्तन होने लगा। बहुत समय से प्रेम की अतृप्त क्षुधा उसे व्याकुल बनाए थी; अब अपने उस अतीत का भी उसे स्मरण हो आया, जो उसे अब तक घेरे हुए था। उसे अब अपनी भूल का ज्ञान पूर्णतया निराशा के गर्त में धकेलने लगा। वह समझने लगी थी कि अतीत से उसका सभी सम्बन्ध टूट चुका है, परन्तु आज उराने जाना कि यह बात न थी। अतीत सब तक पूर्णतया विस्मृत न होस केगा जब तक वह स्वयं अतीत की वस्तु न बने।

इन्हीं सोच-विचारों में लौन वह उत्तरी भाग के चौराहे तक आ गई। यहाँ से उसके निवास स्थल के पठार की चढ़ाई प्रारंभ होती थी। इस मार्ग पर किसी गाड़ी के पहियों के चिन्ह न थे—हां—कहीं कहीं घोड़ों के सुमों के कुछ चिन्ह दिखलाई दे जाते थे। इस चढ़ाई पर जब वह सांस फूल जाने के कारण धीरे धीरे अग्रसर हो रही थी, तब उसे अपने पीछे किसी के पैरो की आहट सुन पड़ी। मुड़कर उसने पीछे देखा तो चिर परिचित कलेवर दिखलाई दिया। संसार में केवल यही एक व्यक्ति था, जिससे वह मृत्यु के पूर्व एकान्त में न मिलना चाहती थी।

सोच-विचार के लिये अधिक समय न था। और न वह किसी प्रकार उसे धोखे में डाल सकती थी। उसका टैस के समीप आ जाना अवश्य भावी था और इस परिस्थिति को समझ कर उसने अत्यन्त शान्तिपूर्वक उसे अपने समीप तक आ जाने दिया। टैसने अनुभव किया कि वह आवेश में है परन्तु इस आवेश का कारण उसकी त्वरित गति न थी— उसकी आन्तरिक भावनाएं ही उसे आतुर बना रही थी।

“टैस !” उसने कहा।

टैस ने बिना पीछे देखे अपनी गति धीमी कर दी।

“टैस!” उसने पुनः कहा—“यह मैं हूँ—एलैक दरबार विल।

टैस ने अब मुड़कर उसकी ओर देखा और वह भी समीप ही आगया।

“हां—यह तो मैं समझ गई।” इसने नीरास भावसे उत्तर दिया।

“अरे— केवल इतना ही ! हां— इससे अधिक तो मेरे लिये उचित भी नहीं ” फिर कुछ बिहंस कर वह बोला—“तुम्हारी आंखों में

कुछ उपहास की भावना विद्यमान है-सचमुच मेरे इस स्वरूप पर तुम्हें हंसने का अधिकार है-परन्तु मैं यह सब सह लूँगा।.....मैंने सुना था कि तुम कहीं चली गई हो और किसी को यह पता न था कि तुम किधर गई हो। ठेस! तुम आश्चर्य कर रही होगी कि मैं क्यों तुम्हारे पीछे पीछे चला आया हूँ !”

“हैं- मुझे अचम्भा तो हो रहा है और मेरी हार्दिक इच्छा भी यही है कि तुम इस प्रकार न आते।”

“हां—तुम यह भलीभांति कह सकती हो—” उसने कुछ मंभीरता से कहा। अब दोनों साथ साथ आगे बढ़े परन्तु ट्रेस के पैर उसके साथ आगे बढ़ने को उद्यत न थे। “लेकिन मुझे ग़लत न समझिये। मैं इस बात की प्रार्थना करता हूँ उसका कारण है। तुम्हारे इस प्रकार के विचार का भी कारण है। तुमने मुझे उस अवसर पर देखा होगा-तुम्हारे अचानक आ जाने से मेरी कैसी विचित्र दशा हो गई थी। यद्यपि यह क्षणिक दौर्बल्य था परन्तु जब मुझे स्मरण आया कि मेरे-तुम्हारे सम्बन्ध किने धनिष्ठ रह चुके हैं-तो मैं सोचने लगा कि यह तो स्वाभाविक ही था। परन्तु मेरे संकल्प ने मेरी सहायता की; कदाचित् तुम मेरी ऐसी बातों को ऊट पटांग ही समझोगी-परन्तु मैंने तुरन्त ही अपने मन में अनुभव किया कि संसार में यदि किसी का उद्धार करना मेरा कर्त्तव्य है—यदि किसी की भावी संकटों से रक्षा करना मेरे लिये आवश्यक है- तो सर्वप्रथम इसका प्रयास उस महिला के लिये होना चाहिये जिसके प्रति मैंने भयानक अत्याचार किया है। तुम यह सुनकर मेरा निरादर कर सकती हो परन्तु इस समय मैं केवल इसी उद्देश्य को लेकर आया हूँ - और कोई कार्य नहीं है।”

टैस ने हमका जो प्रत्युत्तर दिया उसमें कुछ थोड़ी घृणा की भावना थी। “क्या तुमने अपनी रक्षा करली है ? कहावत तो यह है कि दानशीलता की आदत अपने घर में ही पड़ जाती है।”

“मैंने कुछ भी नहीं किया है।” उसने बिना टैस के कथन पर विशेष ध्यान दिये ही उत्तर दिया। “यह सब ईश्वर की ही लीला है - सब उसीने किया है। यही बात मैं अपने श्रोताओं को समझाता रहता हूँ। टैस तुम जितनी भी घृणा मेरे प्रति प्रदर्शित करोगी वह उस घृणा की तुलना में कम ठहरेगी - जो मैंने अपने प्रति अनुभव की है। अपनी युवावस्था में मैं भी आदि पुरुष की भांति ही अपराधी था - परन्तु यह भी एक अद्भुत कहानी है।” तुम चाहे इस पर विश्वास करो या न करो; परन्तु मैं तुम्हें बतला सकता हूँ कि किन साधनों से मुझ में यह परिवर्तन संभव हो सका और मैं आशा करता हूँ कि तुम कमसे कम मेरी यह कहानी तो सुन ही लोगी। क्या तुमने कभी ए मिन्स्टर के पुजारी का नाम सुना है ? - तुमने अवश्य सुना होगा - वह हैं वृद्ध श्रीमान् क्लेअर; पुजारी समूह में कदाचित् वही अपने कर्त्तव्य - पालन के सम्बन्ध में सब से अधिक चिन्तित रहते हैं; गिरजा घरों में ऐसे महान् व्यक्ति कम ही बचे हैं; उनकी महानता उन जोशीले प्रचारकों के समान नहीं है, जिनमें आजकल में भी गिन लिया जाता है; वह तो प्रशंसित पुजारियों में भी अपनी विशेषता के कारण विख्यात हैं; इन पुजारियों में भी नई उम्र के लोग सब धर्म को भुलकर अपने अपने मतों का प्रचार करने लगते हैं तथा अन्त में वे केवल अपने पुराने स्वरूप के प्रति सिम्ह या परछाई के समान धन जाते हैं। मेरा भी वृद्ध श्रीमान् क्लेअर से मस्तभेद है परन्तु वह है केवल

गिरजा घर और राज्य के सम्बन्धों के विषय में - बाइबिल में एक कथन है - “ उनके मध्य से निकल कर तुम पृथक हो जाओ - यह मसीह कहता है । ” इसका क्या अर्थ समझा जावे, इस सम्बन्ध में हमारा मतभेद है परन्तु इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं। वह एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके सम्बन्ध में मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे अकेले ही इस देशकी जितनी आत्माओं को पतन से बचाने में सफल हुए हैं उतनी आत्माओं को बचानेवाले किसी दूसरे पुजारी का नाम नहीं लिया जा सकता। तुमने उनके सम्बन्ध में अवश्य सुना होगा। ”

“ मैंने सुना है ” —वह बोली।

“ दो या तीन वर्ष हुए तब यही श्रीमान् त्रैविज मैं किसी धर्म-प्रचार-समिति की ओर से प्रचार-कार्य के लिये पधारे थे; और मैंने—मैं तो अभागा व्यक्ति था ही - मैंने उनका निरादर किया और उसी समय उन्होंने मुझे समझाने की चेष्टा की और मुझे उचित मार्ग प्रतिलब्ध। उन्होंने मेरे व्यवहार पर बुरा न माना और आशीर्वाद दिया कि किसी दिन मुझे भी आत्मा का अनुभव होगा। क्यों कि जो लोग धर्म पर हंसते हैं, अन्त में वहीं ईश्वर की प्रार्थना में रत देखे जाते हैं। उनके इन शब्दों में अद्भुत जादू था। ये शब्द मेरे मस्तिष्क से जम गये। मुझ पर इसमें भी अधिक प्रभाव मेरी माँ की मृत्यु का पड़ा और धीरे धीरे मेरे हृदय में प्रकाश का उदय हुआ। तब से मेरी केवल एकही कामना है और वह है सच्चाई को दूसरों को समझाते रहना और आज भी मैं इसी कार्य में लगा हुआ था; यद्यपि इस क्षेत्र में तो मैं अभी थोड़े समय पूर्व ही आया हूँ। मेरे प्रचार के प्रारंभिक महीने तो उत्तर इंग्लैण्ड में व्यतीत हुए जहाँ मैं किसीसे परिचित न

था। मेरे प्रारंभिक प्रयास वहीं किए गये ताकि मुझ में साहस आ जावे। मनुष्य की सच्चाई की सब से कड़ी परीक्षा तब होती है जब वह अपने उन साथियों को उन्नित मार्ग पर चलने का उपदेश दे सके जो उसके दुष्टतापूर्ण जीवन में उसके परिचित थे। ठेस यदि तुम जान सकती कि गाल पर एक चपत खाने में क्या सुख है-तो मुझे विश्वास है—”

“अब यह कथा वन्द कीजिये-” वह, आवेश में आकर कहने लगी।- मार्ग के एक ओर एक टीलासा था-उसका सहारा लेते हुए ठेसने उसकी ओरसे मुंह फेर लिया। “मैं इन आकस्मिक बातों पर विश्वास नहीं कर सकती। मुझे तुम पर क्रोध आता है-जब मैं तुम्हें इस प्रकार की बातें मुझसे करते देखती हूँ-तो मुझे क्रोध आता है। तुम जानते हो कि तुमने मेरी कितनी हानि की है। तुम और तुम्हारे जैसे लोग पृथ्वी पर मेरे जैसे प्राणियों का जीवन कटु-और विषादमय बनाकर अपने संपूर्ण सुख-भोग लेते हैं-और तब-तब यह भी एक मजे की बात है कि जब इस प्रकार के सुख-भोग से जी ऊब उठता है तो, अपने विचार बदल कर स्वर्ग में भी अपने लिए सुख की कामना रख कर उस की व्यवस्था कर लेते हैं। ऐसे लोगों से दूर ही रहना चाहिए। मुझे तुम पर विश्वास नहीं है। मुझे इन बातों से घृणा है।”

“ठेस! तुम ऐसा न कहो”—उसने अनुरोध किया “यह परिवर्तन अचानक नवीन विचारों के उदय से हुआ है और तुम मुझ पर विश्वास नहीं करती? तुम को किस बात पर विश्वास नहीं है।”

“तुम्हारे परिवर्तन पर! तुम्हारी धर्म की योजनापर “क्यों”?

ठेस ने अपना स्वर धीमा कर दिया- “क्यों कि तुमसे अच्छे एक व्यक्ति का ऐसी बातों में विश्वास नहीं है।”

“यह भी कैसा औरतों-जैसा तर्क है ! यह और भी अच्छा व्यक्ति कौन है ? ”

“यह मैं तुम्हें नहीं बतला सकती । ”

“अच्छी बात है । ” वह बोला । उसके शब्दों में छिपी हुई विरोध की भावना अब अविर्लम्ब प्रकट होने को उद्यत थी । “ईश्वर न करे कि मैं तुम से कहूँ कि मैं एक अच्छा आदमी हूँ—और तुम जानती हो कि मैं ऐसी कोई बात नहीं कहता हूँ; सचमुच भलाई मेरे लिए नवीन वस्तु है; परन्तु कभी कभी नवागन्तुक ही सब से अधिक देख लेते हैं । ”

“हां—” उसने उदास होकर उत्तर दिया । “परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम में इस प्रकार परिवर्तन होकर नवीन उत्साह आ सकता है । एलैक, जो मातृकता तुम में कभी कभी दिखलाई दे जाती है—मैं नहीं समझती कि वह अधिक समय तक ठहर सकेगी । ”

यह कह कर वह उन टीले से उठ खड़ी हुई जिसका सहारा अभी उसने ले लिया था । अब वे दोनों आमने-सामने खड़े थे । इस अवसर पर उसकी आंखें जो चिर परिचित कलेवर तथा आनन अबसर पाकर निहार रही थीं—अब उसी के विचार में निमग्न होगईं । उसके मन की क्षुद्रता इस समय शान्त थी परन्तु वह उसके मन से दूर न हो सकती थी और न उसका पूर्णतया दमन ही किया जा सका था ।

“मेरी ओर इस प्रकार न देखिये”—वह यकायक बोला टैग को पता न था कि वह क्या कर रही है तथा उसका व्यवहार कैसा है । उसने तुरन्त ही अपनी आंखों की स्थिर दृष्टि उधर से हटा ली तथा लजा कर धीमे स्वर में बोली—“मैं आपसे क्षमा मांगती हूँ । ” टैग में पुनः

उसी दुःख-द भावना का संचार हुआ जो बहुधा पहले भी उसमें देखी जा चुकी थी। वह सोचा करती थी कि इस पार्थिव शरीर में उसकी आत्मा का निवास जो प्रकृति द्वारा दिया गया है वह भी कोई भूल है।

“नहीं—नहीं—मुझ से धमा न मांगिये। परन्तु तुम अपनी अच्छी दृष्टि को छिराए रखने के लिए यह धूँघट पहने हौं—इसे तुम मुख पर डाल क्यों नहीं लेती।”

टैस ने धूँघट नीचा कर लिया। वह बोली “यह तो वायु के प्रकोप से संरक्षण था।”

“मेरा इस प्रकार कहना तुम्हें कठोर प्रतीत हो सकता है—” वह कहता रहा—“परन्तु यह उत्तम होगा कि मैं बहुधा तुम्हारी ओर न देख पाऊँ। इसका परिणाम भयंकर हो सकता है।”

“श-श-” टैस बोली

“अरे—वात तो यह है कि स्त्रियों के आनन का मुझ पर पहले से ही इतना प्रभाव है कि उनका भय माने बिना काम नहीं चलता। किसी धार्मिक व्यक्ति को तो ऐसे प्राणियों के सम्पर्क में कमी आना ही न चाहिये, और देखिये—मुझे भी उस अतीत का स्मरण हो आया, जिसे मैं भूल जाना चाहता हूँ।”

इसके पश्चात् उनका वार्त्तालाप एकाघ सामयिक कथनोय कथन तक सीमित हो गया। वे धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे। टैस अपने मन में सोच रही थी कि वह न जाने कहां तक उसके साथ जायगा। उसे यह उचित न जंचता था कि उससे स्पष्ट शब्दों में लौट जाने को कहा जावे। बहुधा जब वे किसी फाटक या टीले के समीप होकर निकलते, तो उन्हें लाल या नीले अक्षरों में कुछ न कुछ बाइबिल

के अंग लिखे हुए दिखलाई दे जाते थे। टैम ने उससे पूछा कि इन घोषणाओं को प्रकाश में लाने का कष्ट किम ने उठाया है? क्या वह उन पहचानता है? उसने बतलाया कि वह लिखनेवाला व्यक्ति तो उसीने इसी काम पर रखा है। उस जिले में और भी कई लोग धर्म प्रचार की इस विधि पर विश्वास करनेवाले हैं। वे सब इन स्मरणीया वाक्यांशों को दीवारों पर लिखवाते हैं ताकि आधुनिक युग की असज्जनता अपनातेवाली पीढ़ी के हृदयों को परिवर्तित करने का कोई भी साधन बिना प्रयोग में आए न शेष रह जाय।

अन्त में मड़क एक प्रमुख चौराहे पर आ निकली। विवर्ण और उजाड़ पठार में यह स्थल सबसे अधिक निर्जन था। कलाकार तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रेमी जिस आकर्षण का विभिन्न प्रकार की भूमि में खोजा करते हैं उस से यह स्थान इतना भिन्न था कि इस में एक नवोन प्रकार का सौन्दर्य आ गया था, जो वहां हर प्रकार के सौन्दर्य के अभाव के कारण उत्पन्न हो रहा था। यह सौन्दर्य कुछ दुःखभनी भावना लिए था। यहां एक विचित्र पत्थर के खम्भे पर एक हाथ बना हुआ था जिसके कारण इसे 'हाथ वाला चौराहा' कहा जाता था। इस स्तम्भ के उद्देश तथा इतिहास के सन्बन्ध में विभिन्न प्रकार के मत थे। कुछ विद्वान कहते थे कि यहां पहले एक संपूर्ण 'क्रौस' बना हुआ था जो ईसाइयों का धार्मिक चिन्ह है, यह स्तम्भ उसी का अवशिष्ट अंश है, दूसरों का मत था कि केवल इतना ही पत्थर किसी की सीमा बतलाने के निमित्त वहां लगा दिया गया था। कुछ भी हो, इस पुरानी वस्तु का उद्गम किसी भी कारण से क्यों न हुआ हो, उसमें कुछ गम्भीरता अवश्य विद्यमान थी जिसके कारण उसके समीप हांकर जाने वाले शुष्क से शुष्क हृदयों पर भी कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ जाता था।

“ मैं सोचता हूँ कि मेरे लिए अब आप में विदा आवश्यक है । ” जब वे दोनों इस स्थान के समीप आ गए, तो उसने कहा । “ आज संझा के ६ बजे मुझे जहाँ व्याख्यान देना है, उस स्थान के लिये मार्ग यहाँ से जाता है । और टेसी-तुम मेरे चित्त में कुछ उद्विग्नता उत्पन्न कर रही हो-मैं इस के कारण के सम्बन्ध में न तो कुछ कह ही सकता हूँ और न कहूँगा ही । मुझे तुम से दूर जाकर शक्ति-संचय करनी पड़ेगी ।.....अच्छा यह तो बताओ तुम इतनी सुन्दर भाषा कैसे बोलने लगी । इतनी अच्छी अंग्रेजी तुम्हें किसने सिखाई ? ”

“ अपने दुःखों को भुलाने के प्रयास में मैंने बहुत सी बातें भीखली हैं । ” उसने बात डालते हुए कहा । “ ऐसे कौन से दुःख तुम्हें झेलने पड़े हैं ? ”

टैस ने अपने पहले दुःख का वर्णन किया—यही केवल ऐसा था जिसका सम्बन्ध उस व्यक्ति से था ।

दरबारधिल इसे सुनकर अवाक् रह गया । वह बाद में धीरे से बोला—“ इसके विषय में अब तक मुझे कुछ भी जान न था । जब तुम्हें पहले पहल इस बात का अनुभव हुआ कि निपत्ति आनेवाली है, तो तुमने मुझ को पत्र क्यों नहीं लिखा ? ”

टैस ने कोई उत्तर न दिया । उसने यह कह कर शान्ति भंग की—“अच्छा, अब मैं तुम से फिर मिलूँगा । ”

“ नहीं—” उसने उत्तर दिया—“ मेरे समीप फिर कभी न आना । ”

“ मैं इस पर विचार करूँगा । लेकिन विदा होने के पूर्व यहाँ आओ । ” वह उस स्तंभ के समीप चला गया । “ यह पहले एक पवित्र

कूस था । मैं पुरानी वस्तुओं का उनकी प्राचीनता ही के कारण आदर नहीं करता, परन्तु कभी कभी मुझे तुम से डर लगता है; इस परिस्थिति में तुम्हें मुझ से डरने की आवश्यकता नहीं है; और मेरे मन को कब करने के लिये अपना हाथ उस पत्थर के हाथ पर रखा और शपथ लो कि अपने आकर्षण अथवा अन्य किसी प्रकार से तुम मुझे प्रोत्साहन न दोगी । ”

“ हे भगवन् । तुम उस बात को क्यों कहलाना चाहते हो, जो नितान्त अनादश्यक है । यही बात तो मेरे विचारों से सर्वथा विपरीत है । ”

“ हां—परन्तु यह शपथ तो ले लो । ”

टैसने अर्द्ध-संशंकित भाव से उसकी प्रार्थना मानली और उस पत्थर पर हाथ रखकर शपथ गृहण की ।

“ मुझे दुःख है कि धर्म में तुम्हारा विश्वास नहीं है ”—वह बोला । “ किसी अधार्मिक का तुम पर अधिकार है तथा तुम्हारा चित्त ठिकाने नहीं रहता—यह भी मुझे दुःखी बना रहा है । परन्तु इस समय मैं और अधिक बात न करूंगा । चाहे घर पर रहूँ, या किसी दावत में जाऊँ, मैं हर समय तुम्हारी मंगल-कामना तो कर ही सकता हूँ और इसके लिए भगवान से प्रार्थना भी करूंगा; और कौन जानता है कि क्या-क्या होना संभव नहीं है ? अब मैं चला । नमस्ते । ”

झाड़ी पास ही कुछ नीची थी । वह बिना टैस की ओर देखे ही एक छलांग मारकर उस पार होगया तथा शीघ्रता से निश्चित ग्राम की ओर अग्रसर हुआ चलते समय उसके पैरों में उसकी मानसिक चिन्ता का आभास मिलता था । धीरे धीरे किसी पुरानी बात का स्मरण कर

उसने एक छोटी पुस्तक अपनी जेब से निकाली जिसके पन्नों के मध्य एक पत्र लिपटा हुआ रखा था। कदाचित् बार बार पढ़े जाने के कारण वह इतना जीर्ण तथा मैला हो गया था। दरबरविलने पत्र खोला। उस पर आज से कई महीने पूर्व की तिथि लिखी थी और पुजारी क्लेअर के हस्ताक्षर थे।

पत्र का प्रारंभ लेखक ने दरबरविल के परिवर्तन पर अपनी सच्ची प्रसन्नता प्रकट करते करते हुए किया था। उसने इस विषय पर पुजारी जीसे पत्र-व्यवहार स्वयं ही प्रारंभ किया था इस कारण पुजारी जीने उसे धन्यवाद भी दिया था। श्रीमान् क्लेअर ने उदारतापूर्वक दरबर-विल के पुराने दुर्घ्यवहार को क्षमा कर दिया था और पत्र में इस सम्बन्ध में उसे विश्वास दिलाया गया था। उन्होंने यह भी जानना चाहा था कि नवयुवक का भविष्य में क्या कार्यक्रम रहेगा। श्रीमान् क्लेअर ने यह इच्छा प्रकट की थी कि दरबरविल भी गिरजाघर का जीवन स्वीकार करले और जिस कार्य को सम्पन्न करने में उन्होंने अपने जीवन के अनेकों वर्ष बिता दिए थे, उसी कार्य का वह भी अपना लेवे। इस निमित्त यदि वह किसी धार्मिक कालिज में प्रविष्ट होना चाहें, तो वे उसकी सहायता करने को उत्तम थे। अन्त में उन्होंने लिखा था—... चूंकि तुमने इस विषय में कुछ भी नहीं लिखा है, मैं इस पर अधिक जोर भी नहीं दे सकती; संभव है इस प्रकार प्रचार-कार्य में बहुत विलम्ब हो जावे। प्रत्येक मनुष्य को वही करना चाहिए जो वह सबसे अधिक अच्छे ढंग से कर सके और उसी ढंगसे कार्य करना चाहिए जैसा उसकी आत्म उसको प्रेरित करे।”

दरबरविल ने यह पत्र पढ़ा और फिर पढ़ा। इसका उस के मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने अपनी नोटबुक में से कुछ उद्धरण भी

चलते चलते पड़े। धीरे धीरे उसका आनन शान्त और गंभीर बन गया और कमसे कम प्रत्यक्ष में टैस का आनन अब उसके मन को अशान्त न किये था।

इसी बीच टैसने पहाड़ी के किनारे पर वह पगडंडी पकड़ी जो उसके घर की सबसे सीधी राह थी। एक मील जाने के पूर्व एक गड़रिये से उसकी भेंट हुई।

टैसने उससे पूछा—“जिस पत्थर के समीप से मैं अभी आ रही हूँ, उसका इतिहास अथवा प्रयोजन क्या है? क्या कभी यह पवित्र क्रम था?”

“कूत—अरे नहीं। कूत तो वह कभी न था।

कुमारी—यह तो एक अपशकुन की वस्तु है। पुराने असभ्य युग में यह किसी संतत व्यक्ति के संबंधियोंने यहां धनवा दिया था। उस व्यक्ति का हाथ पहले इसी स्थान में एक खंभे में कीठ ठोक कर जड़ दिया गया था—तथा बाद में उसे फांसी दी गई थी। उसकी हड्डियां उसी पत्थर के नीचे हैं। कहते हैं कि वह भूत हो गया है तथा कभी कभी वहां टहलता हुआ भी दिखलाई देता है।

यह आशा के विपरीत सूचन पाकर वह बहुत घबरा गई तथा उस एकाकी व्यक्ति को वहां छोड़कर आगे बढ़ी। फ्लिण्टकूम्बएश तक आते आते संध्या का आवरण फैलने लगा था। गांव में प्रवेश करते समय गली के छोर पर उसने एक युवती और उसके प्रेमी को साथ साथ टहलते हुए देखा। उन दोनों ने टैस को न देख पाया था। वे लुक्-छिपकर कोई बात न कर रहे थे तथा युवक के उग्र प्रेम भरे शब्दों के प्रत्युत्तर में नवयुवती के स्पष्ट तथा निधडक स्वर शीतल वायु में व्याप्त

होकर घुंघले क्षितिज तक फैलनेवाली अन्धकार की एकरसता में शान्ति भर रहे थे। इस सन्ध और कोई वस्तु उस एकरसता में किसी प्रकार की बाधा न डाल रही थी। कुछ क्षणतक इन शब्दों ने टैस के मन का प्रसन्नता प्रदान की। फिर उसकी तर्क शक्ति ने अनुभव किया कि इस वार्तालाप की जड़ में भी, चाहे इधर से अथवा उधर से वैसा ही आकर्षण विद्यमान है, जो उसके दुःख का कारण बन चुका है। जब वह और भी समीप आई तो नवयुवती शान्त भाव से उसकी ओर मुड़ी तथा उसने टैस को पहचान लिया; नवयुवक कुछ शिष्टक कर दूर हट गया। युवती इज्जदुवेत थी—परन्तु इस समय टैस की यात्रा से भी अधिक महत्वपूर्ण उस का वर्तमान कार्य था। टैसने अपनी यात्रा के परिणाम उसी समय उसे न समझाए और इज्ज भी कम चतुर न थी वह अपने वर्तमान के सम्बन्ध में परिस्थिति स्पष्ट करने लगी जिसकी एक झलक टैसने अभी ही देखी थी।

“वह एम्मी सीडलिंग है—वही जो कभी कभी तालबोथे में आया करता था—” उसने तटस्थ की भांति समझाया। उसने पता लगा कर जान लिया कि मैं यहाँ आगई हूँ; और अब वह मेरे पीछे वहाँ आ गया है। वह कहता है कि पिछले दो वर्षों से वह मुझ से प्रेम करता रहा है। अभी तो मैंने उसको कुछ उत्तर नहीं दिया।”

४६

उसकी असफल यात्रा के पश्चात् कई दिन बीत गए थे और टैस खेत पर काम कर रही थी। शीत वस्तु की शुष्क हवा अब भी चल रही थी; परन्तु हवा के मार्ग में निर्मित कुछ टट्टियों के कारण उसका

वग टैस को व्यग्र न कर सकता था । संरक्षित दिशा में एक शलजम्ब काटने की मशीन थी जिसका चक्कीला नीलारंग नया कराए जाने के कारण उस मूक वातावरण में बोल-सा उठता था । इसके सामने एक लम्बा टीठा था जिसमें शीत के प्रारंभ से ही जड़ें गाड़ कर सुरक्षित कर दी गई थीं । टैस खुले हुए भाग में खड़ी थी; उसके हाथ में एक हंतिया था जिससे वह जड़ों से गेशे व धूल पृथक कर देती थी । इस क्रिया के पश्चात् हर एक जड़ मशीन में डाल दी जाती थी । एक मनुष्य मशीन को चला रहा था—इस में से नए कटे हुए टुकड़े बाहर निकलते आते थे उस वायुमण्डल में इन पीले टुकड़ों की मधुर मंड़क के अतिरिक्त हवा की खड़ खड़ाहट, मशीन की खटरखट तथा टैसके चमड़े के दस्तानों से ढंके हुए हाथों द्वारा चलाए गए हंसिए का शब्द भी व्याप्त था ।

जहां जहां जड़ें उखाड़ी जा चुकीं थीं—वहां भूरा मृत्ता कृषि-प्रदंश दूर तक फैला दिग्विह्वल देता था । अब वहां कुछ पट्टियां गहरे भूरे रंग की बनती जा रही थीं । इन में से प्रत्येक के किनारे-किनारे कोई बस्तु दस टांगों पर आधारित धीरे धीरे चल रही थी—न तो उसे विश्राम की आवश्यकता थी और न शीघ्रता की । खेत में एक ओर से दूसरी ओर तक जाना ही उसका कार्य था । वास्तव में एक हल में दो छोड़े जुते ध तथा एक व्यक्ति उन्हें चला रहा था ताकि भूमि वसन्तऋतु में पुनः बाने योग्य बन जावे ।

कई घंटों तक इस प्रसन्नता रहित कार्यप्रणाली में कोई परिवर्तन न हुआ । तब जोतनेवाले समूह में बहुत दूर एक काला चिन्ह

दिखलाई दिया। यह स्वाई के एक कोने से निकला था तथा ढाल पर ऊँचा चढ़ता आता था। वह शलजम काटनेवालों की ओर ही बढ़ता आ रहा था तथा एक लघुविन्दु के आकार से बढ़कर वह नव-विन्दु के समान बन चुका था। शीघ्र ही वह काले वस्त्र पहने हुए एक व्यक्ति समझ पड़ा जो प्लिण्ट-कूम्ब-ऐश की दिशा से आ रहा था। मशीन के चालक को अपनी आँखों से तो कुछ काम न था इस कारण वह लगातार आगन्तुक की ओर देखता रहा परन्तु टैस तो काम में रत थी; वह तब तक उसे न देख पाई जब तक कि उसके साथी ने नवागन्तुक के समीप आ जाने की ओर उसका ध्यान आकर्षित न किया।

यह व्यक्ति उस खेत का मालिक कृषक मोत्री न था; यह तो धार्मिक जीवन के आधेसे अधिक वस्त्र पहने हुए था तथा यह पुराने एलैक दरवरविल का नवीन स्वरूप था। इस समय वह किसी धार्मिक प्रचार में संलग्न न था इस कारण उसमें उत्साह की कमी थी तथा मशीन के चालक की उपस्थिति उसे अपने मनकी बात कहने से रोक रही थी। टैस के आनन पर दुःख की पीली झलक अब तक छा चुकी थी और उसे ढकने को उसने अपना शिर का वस्त्र और नीचा खोंच लिया।

दरवरविल समीप आया और शान्तभाव से बोला — “टैम, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।”

“तुमने मेरी अन्तिम प्रार्थना को ठुकरा दिया। मैंने कहा था कि तुम मेरे पास न आना।” वह बोली “हाँ, परन्तु मेरे पास उसका एक कारण भी था।”

“तो उसे बतलाइये ।”

“यह कारण जितना तुम समझ रही हो उसमें अधिक गहन है ।”

उसने चारों ओर देखा कि कहीं कोई उसकी बात तो नहीं सुन रहा । वे लोग उस मशीन-चालक से कुछ दूर थे तथा मशीन के चलने से जो आहट होती थी वह भी एलैक के गद्गो को किन्हीं अन्य कानों में पहुँचने से रोक रही थी । दरबारविल ने अपनी पीठ उस श्रमिक की ओर कर ली ताकि टैम का आनन उसे न दिखमाई दे ।

भावनाओं में भरकर वह बोला “बात यह है—जब मेरी आपकी पिछली बार भेंट हुई थी—तब मैं यह पूछना तो भूल ही गया कि आपका निर्वाह किस प्रकार होता है—उस समय हमें केवल अपनी अपनी भात्माओं की चिन्ता थी । तुम बहुत सुन्दर कपड़े पहने थीं और इसी कारण मुझे कुछ ध्यान न रहा । लेकिन अब मैं देखता हूँ कि तुम्हारा जीवन कष्टमय है—उस समय से कहीं अधिक कष्टमय है जब मेरा-तुम्हारा परिचय हुआ था । ऐसा कष्ट तुम्हें तो न मिलना चाहिए । कदाचित् इसका अधिकांश मेरे कारण ही है ।”

टैम ने कोई उत्तर न दिया और वह प्रश्नसूचक भाव से उसकी ओर देखता रहा । टैम का सर झुका हुआ था, आनन पर वस्तु था, वह फिर गलजम काटने में लग गई । अपने काम में लगे रहने में उसके लिये यह संभव था कि दरबारविल के कारण किसी प्रकार का भावोद्रेक न हो ।

उसने बहुत असंतोषभरी उसांस लेकर कहा “टैस, जिन महिलाओं से मेरा संबंध रहा है, उन में सबसे अधिक दुःखःमय तुम्हारी स्थिति है। मुझे कुछ भी ध्यान न था कि क्या परिणाम हुआ है। जब तुमने मुझे बताया, तभी मुझे यह ज्ञात हुआ। मैं भी कैसा नीच था ! उस पवन जीवन को मैं ने कलुषित कर डाला !! सारा अपराध मेरा ही था त्रैन्विज में जो अनियमित व्यापार हुआ—उसका समस्त भार मुझ पर ही है। तुममें उस वंश का पवित्र रक्त है जिस की मैं केवल तुच्छ प्रतिलिपि हूँ। उस समय तुम्हारे भावी जीवन में कितने उत्थान की सम्भावनाएँ थीं। मैं गंभीर भाव से कहता हूँ कि मातापिता के लिए यह लज्जा की बात है यदि वे अपनी बालिकाओं के लालन-पालन में उन्हें यह न बतलावें कि संसार में नीच व्यक्ति उन्हें फँसाने को कैसे कैसे जाल फैलाते हैं, चाहे ऐसा करने में उनका विचार अच्छा ही क्यों न हो अथवा इसका कारण उनकी साधारण तटस्थता ही क्यों न हो।”

टैस ने इसको भी केवल सुन-भर लिया, वह एक के बाद दूसरी जड़ नियमित दृग से मशीन में फँकती रही, उसके आनन पर केवल एक कृपक-महिला की विचार शीलता विद्यमान थी।

दरबरेविल ने पुनः निवेदन किया लेकिन मैं केवल यही कहने को यहां नहीं आया हूँ मेरी स्थिति यह है जब तुम त्रैन्विज से चली आई उसके बाद मेरी माता का शरीरान्त होगया और अब वह सब भूमि मेरी है। परन्तु मेरा विचार है कि उसे बेचकर अफ्रीका जाकर धर्म प्रचार करूं। इस कार्य में मुझ जैसा शैतान कुछ विशेष सफल तो न होगा फिरभी

अब मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या तुम मुझे अपने कर्तव्य पालन का अवसर दोगी। मुझ से जा भूल बन पड़ी है उसका केवल एक ही प्रतिकार है। मतलब यह है कि क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी और मेरे साथ चलेगी। मेरे पास यह मूल्यवान पत्रक भी है। यही मेरी वृद्धा माता की मृत्यु के समय की अभिलाषा थी। ”

उसने कुछ धवड़ाहत के साथ अपनी जेबमें एक पत्रक निकाला।

“ यह क्या है। ” टैसने पूछा।

“ यह विवाह का आज्ञा पत्र है। ”

टैस चौक पड़ी—उसने तुरन्त ही कहा “ नहीं—श्रामान—नहीं ”

“ तुम विवाह न करोगी। यह क्या। ”

और जब यह प्रश्न पूछ रहा था, उसके आनन पर निराशा का भाव छा गया। यह निराशा अपने कर्तव्य से विमुख होने के कारण न थी। निश्चय ही यह एक लक्षण था जिससे यह प्रकट हो रहा था कि उसकी टैस के प्रति पुरानी वासना जागारूक हो रही है; उस समय कर्तव्य और वासना साथ-साथ अग्रसर हो रहे थे।

“ अवश्य ” उसने पुनः कहना प्रारंभ किया। अब उसका स्वर रुक्ष बन गया था। वह मशीन के चालक की ओर देखने लगा।

टैस ने भी अनुभव किया कि यह विवाह यहाँ समाप्त नहीं किया जा सकता। उसने श्रमिक को सूचना दे दी कि एक महानुभव पधारे हैं जिनके साथ वह कुछ दूर तक जाएगी है। फिर वह जैब्रा जैसी धारियाँ

थाले ज्वेत में दरवरविल के साथ चल दी। जब वे पहले नए जुते हुए भाग में आए, तो उसने अपना हाथ टैमकी सहायता के लिए बढ़ाया; परन्तु टैम उस ऊँची नीची मिट्टी में आगे बढ़ गई मानों उसने उससे देखा भी न था।

“टैम तुम मेरे साथ विवाद कर मुझे स्वाभिमानी व्यक्ति न बनाओगी?” ज्योंही वे उन कड़ों में पहुँचे उसने फिर दुहराया।

“मैं नहीं कर सकती।”

“लेकिन क्या।”

“तुम जानते हो कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करती।”

“लेकिन धीरे धीरे समय आने पर तुम प्रेम करने लगोगी कदाचित् ज्योंही तुम मुझ क्षमा कर दोगी-त्योही तुम्हारा प्रेम भी बढ़ जायगा।”

“कभी नहीं।”

“इतना दृढ़ निश्चय क्यों है।”

“मे किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम करती हूँ।”

इन शब्दों को सुनकर उसे आश्चर्य होने लगा।

“क्या यह सत्य है।” उसने चिल्लाकर कहा “किसी अन्य ध्याक्ति से। परन्तु क्या तुम्हें इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं है कि कौन सी बात धर्म की दृष्टि से तथा नैतिक रीति से सर्वथा उचित है।”

“नहीं नहीं-नहीं मुझ से यह मत कहो।”

“कैसे भी-तब इस नए व्याक्ति के लिए तुम्हारा प्रेम धार्मिक होसकता है-जिसपर तुम विजय प्राप्त कर सकती हो।”

“ नहीं-नहीं । ”

“ हां-हां । क्यों नहीं ? ”

“ मे तुमसे नहीं कह सकती । ”

“ अपने सम्मान की रक्षा के निमित्त तुम्हें कहना ही चाहिए । ”

“ अच्छा तो मुनो ।... मेरा उसके साथ विवाह हो गया है । ”

“ अरे । ” वह चिन्ता कर बोला । वह चित्रवत खड़ा हो गया तथा उसकी ओर देखने लगा ।

“ मैं यह कहना नहीं चाहती थी यह मेरा आशय न था । ” उसने अपने पक्ष का समर्थन करते हुए कहा “यहां यह बात किसी का ज्ञात नहीं है, यदि कोई जानता भी है तो इस सम्बन्ध में बहुत ही कम जानता है । इस लिए क्या आप कृपा करके मुझ से प्रश्न प्रच्छेद बन्द कर देंगे ? तुम्हें स्मरण रखना चाहिये कि अब हम लोग अपरिचित हैं ? अपरिचित ? ”

एक क्षण के लिए व्यंग के पुराने विन्द उसके आनन पर प्रकट हुए परन्तु उसने दृढ़ता से उन्हें दबा दिया ।

“क्या वह व्यक्ति तुम्हारा पति है ? ” उसने यत्न-चालक श्रमिक की ओर संकेत करते हुए पूछा ।

“वह व्यक्ति । ” टैस ने अभिमान से कहा “मैं समझती हूँ कि नहीं । ”

“फिर वह कौन है ? ”

“जो बात मैं नहीं बतलाना चाहती. वह मुझ से न प्रसिद्ध है । ” टैस ने प्रार्थना की तथा इस विनम्र प्रार्थना में उसने अपने उन्नत आनन तथा भ्रू-रक्षित नेत्रों का सहयोग भी सम्मिलित कर लिया ।

दरबारविल अब व्यग्र हो उठा । उसने कुछ स्थिर होकर कहा-

“लेकिन मैं तो यह सब तुम्हारे हित में ही पूछ रहा हूँ। स्वर्ग के दूतों ! हे ईश्वर ! मुझे क्षमा करो। मैं यह शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि मैं यहाँ केवल तुम्हारे हित की कामना के लिए ही आया था। ठीक ! तुम इस प्रकार मेरी ओर मत देखो। मैं तुम्हारी इस दृष्टि को सहन नहीं कर सकता। ऐसे विशाल चक्षु तो कभी देखे ही नहीं गए—न तो ईसा मसीह के पूर्व ही वे कर्मा श्रे और न बाद में ही हुए। देखो ! कहीं मैं पागल तो न हो जाऊँ। मेरा साहस नहीं है। मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे दर्शनों ने मेरे उर में तुम्हारे प्रेम को पुनः जागृत कर दिया है जिससे मैं समझता था कि नवीन भावनाओं ने सदैव के लिए समाप्त कर दिया है। परन्तु मैं सोचता था कि हमारे विवाह द्वारा दोनों के पाप मोक्ष हो जावेंगे। “जो पति ईश्वर में विश्वास नहीं रखता, वह पत्नी के प्रभाव से पवित्र बनकर मोक्ष लाभ करता है तथा इसी प्रकार अविश्वासी पत्नी अपने पति के द्वारा पवित्रता प्राप्त करती है।” मैं इसी वाक्य को मन में दुहराता रहता था। परन्तु मेरी योजना चूर-चूर हो गई तथा अब मुझे यह निराशा ही सहनी पड़ेगी।”

वह पृथ्वी पर आंख गड़ाए भाव भरी मुद्रा से विचारों में निमग्न खड़ा रह गया।

“विवाहित ! विवाहित ! अच्छा ! जब यह बात है तब मेरी योजना तो असफल हो ही गई परन्तु फिर भी मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा तथा तुम्हारे पति का जो भी बन सके उपकार करूँ—तुम्हारा पति कोई भी क्यों न हो।” यह कहते कहते बहुत शान्ति-भाव से उसने आशा-पत्र के दो तुकड़े कर उसे जेब में रख लिया। कई प्रश्न हैं जिनको मैं

धूमसे पूछना चाहता हूँ लेकिन तुम्हारी रुचि के बिगरीत में कुछ न पूछुंगा। यद्यपि यदि मुझे तुम्हारे पति का परिचय मिल जावे, तो मेरे तुम्हारा और उसका दोनों का हित कर सकता हूँ। क्या वह इसी खेत पर है ?”

“नहीं ! वह बहुत दूर है।” उसने धीरे से कहा।

“बहुत दूर ? तुमसे बहुत दूर ? वह किस प्रकार का पति हो सकता है ?”

“आप उनके विरुद्ध कुछ न कहिए। इस सब का कारण आप ही हैं। उसे पता चल गया— ---”

“अच्छा, यह बात है ? यह तो दुःख की बात है, टैस !”

“हां !”

“फिर भी तुमसे दूर रहना तथा तुम्हें इस प्रकार काम करने देना !”

“वह मुझे इस प्रकार काम करने का नहीं छोड़ गये।” टैस अमने अनुपस्थित पति का समर्थन उत्साह के साथ करने लगी “उन्हें तो इस बात का कुछ भी ज्ञान नहीं है। यह काम तो मैंने स्वयं ढूँढ़ निकाला है।”

“तब क्या उनका पत्र तुम्हारे पास आता है ?”

“मैं यह सब भेद तुम्हें नहीं बतला सकती। कुछ ऐसी बातें हैं जो हम दोनों तक ही सीमित हैं।”

“तो प्रत्यक्ष ही इसका यह मतलब है कि वह तुमको पत्र भी नहीं लिखता ! मेरी मुन्दरी टैस ! तुम एक परिन्यक्ता पत्नी हो।”

किमी आन्तरिक प्रेरणा के प्रभाव में उसने मुडकर ट्रेस का हाथ पकड़ लिया। वह गुलाबी दस्ताना पहने था, एलैक केवल खुरदरे चमड़े की अंगुलिया पकड़ सका 'जनसे वास्तविक अंगुलियों के आकार व जीवन से कोई संबंध न था।

“तुम यह क्या कर रहे हो ! ऐसा न करो।” ट्रेसने भयभीत होकर कहा। उसने अपना हाथ दस्ताने के बाहर खींच लिया मानो किसी जंघ से बाहर निकाल लिया हो। एलैक के हाथ में केवल दस्ताना रह गया।

“क्या तुम जाओगे नहीं ? मेरे और मेरे पति का ज्वाला करके चले जाइये। कम से कम अपने ईसाई-धर्म का ज्वाला करके ही चले जाइये।”

“हां - हा - मैं चला जाऊंगा।” उसने बात समाप्त करने हुए कहा। उसने दस्ताना ट्रेस के समीप पटक दिया तथा बड़ा मचलने को उद्यत हुआ। फिरभी मुडकर वह बोला “ट्रेस ! ईश्वर मेरा साक्षी है—तुम्हारा हाथ पकड़ने में मेरा कोई दृष्ट अभिप्राय न था।”

खेत की भूमि पर घोड़े के पैरों की आहट उनके पीछे धीमी-धीमी सुन पड़ी। अपनी बातचीत में उन्होंने अब तक यह आहट न सुनी थी। ट्रेस के कानों में एक शब्द सुनाई दिया।

“दिन में इस समय तुम काम छोड़कर यहाँ क्या कर रही हो?”

कृषक गोबी ने दोनों की कुछ दुरी से देख लिया था और कौतूहलवश यह जानने के लिए कि खेत में उनका क्या काम है इधर ही घोड़े को हाँक लाया था।

“उस से ईतनी बुरी तरह न बोलो ।” दरवरबिल ने कहा ।
उसके आनन पर क्रोध का जो भाव छा रहा था वह ईसाई-धर्म के
प्रतिकूल था ।

“मच्चमुच श्रीमान् ! और तुम जैसे प्रचारकों का ऐसी स्त्रियों
से क्या काम है ?”

“यह कौन है !” दरवरबिल ने मुड़कर टैस में पूछा । वह
उसके पास चली आई ।

“जाइए—मैं आपसे फिर भी यही प्रार्थना करती हूँ ।” वह
बोली ।

“क्या ? क्या तुम्हें मैं इस कमर शामन के आधीन छोड़ जाऊँ ।
मैं उसकी मुखाकृति से पहचान सकता हूँ कि वह कौनसा दुष्ट है ।”

“वह मुझे कोई हानि न पहुंचावेगा । वह मुझ से प्रेम नहीं
करता । मैं ‘महिला-दिवस’ के पश्चात् उसे छोड़ सकती हूँ ।”

“अच्छा तो मैं समझता हूँ कि मुझे आपकी आज्ञा मानने के
अतिरिक्त और कोई अधिकार नहीं है । लेकिन — अच्छा ! नमस्ते ।”

उसका रक्षक, जिसका टैस को अपने आक्रमणकारीसंभी
अधिक भय था—अपनी अनिच्छा से उस स्थान से दूर गया । अब
कृपक ने अपनी डाट-फटकार जारी रखी जिसे टैस ने शान्त होकर सुन
लिया क्योंकि इस प्रकार के आक्रमण में टैस के स्त्रीत्व का कोई विशेष
ध्यान न था । इस पाप्राण-हृदय कृपक के आधीन रहना भी टैस को
एक सुख ही था क्योंकि उसे भूतपूर्व जीवन के कई कष्ट अनुभव थे ।
यह किसान यदि अवसर पाता तो टैस को हथकड़ियाँ पहनाने में भी

मंकोच न करता । टेस अपने भ्रम के स्थल पर ध्या-निमग्न लौट आई । वह नवीन भेंट के विचार में ऐसी निमग्न थी कि उसे पता ही न चला कि पोथी के घोड़े का मुख उसके कंधे के समीप ही आ गया है ।

“ यदि तुम्हारा यही व्यवहार रहा तो तुम्हें एक प्रतिज्ञा-पत्र भरना पड़ेगा कि महिला-दिवस तक तुम काम करती रहोगी । मैं इस का ध्यान रखूंगा कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो । ” उसने गुरीते हुए कहा- “ ईश्वर इन औरतों का नाश करे ! आज इनका एक रंग रहता है कल दूसरा । लेकिन यह स्थिति मैं और अधिक न चलने दूंगा । ”

टेस इस बात को भली भांति जानती थी कि एकबार उसके कारण मार खाजाने के सबब से वह कृषक जितना उसे सताता था । खेत की किसी अन्य स्त्री को न सताता था । कुछ क्षण तक वह यही सोचती रही कि यदि वह धनवान एलैक की पत्नी बनना स्वीकार करले तो क्या परिणाम होगा । इस से वह दासता से सदैव के लिये मुक्त हो जाती । उसका वर्तमान कष्टप्रद शासक तथा उसके प्रति अन्य घृणा से देखने वाले व्यक्ति-सभी की दृष्टि में उसका सम्मान बढ़ जाता । “ परन्तु-नहीं-नहीं । अब मैं उसके साथ विवाह नहीं कर सकती । वह तो मुझे ऐसा घृणित प्रतीत होता है । ” यह कहते-कहते उसका श्वास फूलने लगा ।

उसी रात उसने एक विनम्र प्रार्थना-युक्त पत्र बलेभर को लिखना प्रारंभ किया । अपनी कठिनाइयाँ उसमें उसने प्रकट न की तथा उसे विश्वास दिलाया कि उसका प्रेम उसके प्रति अक्षय्य है । कोई भी व्यक्ति यदि उन पंक्तियों के मर्म को समझता हो उसे ज्ञात होता कि उसके प्रेम के पीछे कोई बड़ा भय छिपा है, इसमें कतिपय ऐसी बातों की

शलक विद्यमान थी जिनका पत्र में स्पर्शीकरण न किया गया था। फिर भी उसने अपनी निराशा का भाव न छोड़ा था। क्लेअर ने इज से अपने साथ चलने को कहा था; संभव है कि अब वह उसे (टैस को) बिल्कुल भी न चाहता हो। उसने पत्र अपने बक्स में रख दिया और आश्चर्य करने लगी कि क्या यह पत्र कभी भी क्लेअर के हाथ लगेगा।

इसके पश्चात् उसके नित्य नियम निमिते रहे यद्यपि उनमें श्रम अधिक था। अन्त में वह दिन भी आ पाहुँचा जो कृषकों के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। इस दिन एक मेला लगता था जिस में किसान 'महिला दिवस' से एक वर्ष के लिये अपने सेवकों से प्रतिज्ञाएँ लेते थे। जो लोग अपने पुराने कामों को बदल कर नए काम करना चाहते थे वे सब समीप के मेले में पहुँच जाते थे। फ्लिण्ट-कूम्ब-ऐश खेत पर काम करने वाले सभी श्रमिक भागना चाहते थे और प्रभात से ही खेत से नगर की ओर भगदड़ मची हुई थी। खेत से इस नगर की दूरी दश या बारह मील होगी। मार्ग पहाड़ी प्रदेश में होकर जाता था। यद्यपि टैस भी प्रथम प्रहर में ही जाना चाहती थी, परन्तु फिर भी वह गई नहीं। उस के चित्त में एक धुंधली आशा थी कि कोई न कीई ऐसी घटना हो जावेगी जिसके कारण अब उसे आगामी वर्ष में बाहर कार्य करना अनावश्यक हो जायगा।

आज फरवरी का शान्तिपूर्ण दिवस था। उस समय आश्चर्य जनक कोमलता व्याप्त थी। कोई भी व्यक्ति सोच सकता था कि शीत ऋतु समाप्त होगई। उसने अपना दोपहर का भोजन समाप्त ही किया था कि दस्वरविल की आकृति ने उस कुटीर की खिड़की के प्रकाश को

धूमिल कर दिया जिस में वह निवास करती थी । आज इस कुटीर में वह अकेली ही थी ।

टैम उछल पड़ी परन्तु तबतक उसके अतिथि ने द्वार खटखटाया । इस स्थिति में उसे भागने का अवसर न मिल सका । दरवाज़िल का द्वार खटखटाना तथा द्वार तक आना-इन कामों में तथा उसके पिछली भेंटेके अवसर पर किए गए व्यवहार में अन्तर था । उस समय के कार्यों में कर्त्ता की उज्जवा मन्निहित थी । टैम सोचने लगी कि वह द्वार न खोलेंगी; परन्तु बाद में इसका भी औचित्य कुछ विशेष सूचिकर न जैचा वह उठी तथा चाभी लेकर द्वार खोलकर तुरन्त पीछे हट गई । वह अन्दर आया-तथा टैम को देख कर बिना बोल एक कुर्सी पर बैठ गया ।

“ टैस ! मुझे से रहा न गया-” वह अधीर होकर कहने लगा । साथ ही वह अपने उष्णानन को पोंछता जाता था जिसपर भावश का भाव भी भली भांति व्याप्त था । “ मेरी इच्छा हुई कि चलकर देख तो आऊँ कि तुम कैसे हो । मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे तुम्हारा बिल्कुल ही ध्यान न था परन्तु उस दिन रविवार को तुम्हारी छवि निरख लेने के पश्चात् तुम्हें भुलाना संभव नहीं है—मैं चाहें जितना प्रयास करूँ । यह भी कैसा कठिनाई है कि एक भली महिला एक दुराचारी व्यक्ति को हानि कर रही है । फिर भी बात ऐसी ही है । टैस ! तुम मेरी उन्नति प्रथवा सुधार की भावना से प्रार्थना करो तो बड़ी दया होगी । ”

उसके कथन की शैली में जो अधीरता विद्यमान थी वह वास्तव में क्षयनीय थी और तो भी टैस ने उस पर दया न की ।

“ मैं आपके लिये कैसे प्रार्थना कर सकती हूँ - ” वह बोली-
 “ मुझे मे तो इस बात में विश्वास करने से मना किया गया है कि वह
 मन्त्र शक्ति जो संसार को चलाती है मेरी प्रार्थना सुनकर अपना कार्य
 क्रम बदल देगी । ”

“ क्या तुम वास्तव में इस में विश्वास करती हो ! ”

“ हाँ । किसी अन्य प्रकार के विचारों को अपनाने के रांग का
 उपचार हो चुका है । ”

“ उपचार ? किसने उपचार किया ? ”

“ यदि यह बतलाना आवश्यक है, तो मैं कहती हूँ कि मेरे पति
 ने ” - “ अरे हाँ - तुम्हारे पति - तुम्हारे पति ! यह कैसा विचित्र
 प्रतीत होता है । मुझे स्मरण है कि उस दिन भी तुमने कुछ इसी प्रकार
 की चर्चा चलाई थी । टेस ! क्या तुम वास्तव में इन बातों में विश्वास
 रखती हो । ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारा कोई धर्म ही नहीं है - कदा-
 चित् इसका कारण मैं ही हूँ । ”

“ धर्म तो मेरा है । यद्यपि मैं किसी भी अभाननीय अथवा दैवी
 शक्ति में विश्वास नहीं करती । ”

दरबारविल उमकी और संदेह भरी दृष्टि से देखने लगा ।

“ तब तुम्हारे विचारसे मैं जिस मार्ग को अपना रहा हूँ वह सब
 मश्रूण है । ”

“ इसका अधिकांश तो है ही । ”

“ हूँ-और तो भी मुझे इसपर इतना दृढ़ विश्वास था ” - उसने
 प्रत्यक्ष होकर कहा ।

“ मैं पर्वत के उपदेशों की आत्मा में विश्वास करती हूँ, और यही मेरे प्रिय पति का भी विश्वास है परन्तु मुझे बहुत सी बातों पर विश्वास नहीं है — ”

अब टैस ने उन बातों का वर्णन किया जिन में उसे विश्वास न था ।

दरबारबिल ने यह सुनकर कहा—“ सच तो यह है कि जिस बात में तुम्हारे प्रिय पति का विश्वास है, उसमें तुम्हारा भी विश्वास है और जिन वस्तुओं को वह अप्राप्त्य मानता है, उन्हें तुम भी स्वीकार नहीं कर सकती । तुम अपनी ओर से कोई तर्क नहीं करती । औरतों का ऐसा ही स्वभाव है । तुम्हारा मस्तिष्क उसकी दासता स्वीकार कर चुका है । ”

“ अरे इस में क्या बात है । क्योंकि वह सभी बातें जानता है, मैं उस पर विश्वास कर लेती हूँ । ” टैसने इस कथन द्वारा एंजिल क्लेअर में अपना सरल एवम सम्पूर्ण विश्वास प्रकट कर दिया यद्यपि इतनी प्रशंसा तो किसी सर्वगुण सम्पन्न मानव की भी नहीं की जा सकनी उसके पति की तो बात ही क्या है ।

“ हां—लेकिन तुम्हें दूसरे व्यक्तियों की उलटी सम्मति इस प्रकार न मान लेनी चाहिये । जिसने तुम्हें इस प्रकार के विचित्र विश्वासों को अपनाने की बुद्धि दी है वह भी एक विचित्र व्यक्ति ही होगा । ”

“ उसने कभी भी अपना निर्णय मुझ पर बलात् नहीं लादा है ! वह किसी भी विषय में मुझ से विवाद नहीं करता । लेकिन मैं तो इन विषयों में अपना निजी दृष्टिकोण रखती हूँ । जिस बात पर वह गहन अध्ययन के पश्चात् विश्वास करता है, वह अवश्य ठीक होगी और मैं

बिना किसी अध्ययन के यदि किसी निर्णय पर पहुँचूं, तो वह भ्रमपूर्ण हो सकता है । ” .. वह क्या कहा करते थे ? कुछ तो वह कहते ही होंगे ? ”

टैस सोचने लगी । एजिल क्लेअर के कथनों के लिये उसकी स्मरणशक्ति बहुत तीव्र थी । उसे क्लेअर के वे समस्त शब्द ज्यों के त्यों स्मरण थे जिन्हें वह कभी कभी उसके साथ टहलते टहलते कहा करता था । उन शब्दों को दुहराते समय टैसने एन्जिल की शैली को भी अपना लिया ।

“ इस को पुनः कहिए ” दरबरविल दे कहा । वह इस कथन को बड़े ध्यान से सुनता रहा था ।

टैसने कथन दुहरा दिया और दरबरविल उसके साथ साथ विचास्पूरक प्रत्येक शब्द का उच्चारण करता रहा ।

“ और कुछ ? ” अब उसने मूछा ।

“ दूसरे अवसर पर वह यह भी कहता था ” यह कहकर टैसने दूसरा कथन सुनाया जो कई प्राचीन तथा कुछ नवीन पुस्तकों के अध्ययन का परिणाम था ।

“ आश्चर्य है ! तुम्हें यह सब स्मरण कैसे रहा ? ”

“ क्योंकि मैं उसी बात पर विश्वास करना चाहती थी जिस पर उसका विश्वास हो यद्यपि वह यह नहीं चाहता था । मैं उसे विवश कर देती थी-तब वह अपने कुछ विचार बतलाता था । मैं यह तो नहीं कहती कि मैं इस विचार को समझती हूँ परन्तु मैं यह कह सकती हूँ कि यह ठीक है । ”

“ हां ! तुम कल्पना कर सकती हो कि तुम मुझे वह बातें समझा रही हो,, जो स्वयं तुम नहीं जानती । ”

वह विचार-विमग्न होगया ।

“ और इसी लिये मैंने अपनी आंतिमक उन्नति का भाग उस पर लाद दिया था; ” वह कहने लगी । “ और मैं इस में किसी प्रकार का परिवर्तन भी नहीं चाहती । जो वस्तु उसके लिये भली है, वही मेरे लिये भी भली है । ”

“ क्या उसे ज्ञात है कि तुम भी उसी के समान नास्तिक हो ? ”

“ नहीं—मैंने तो उनसे कभी भी यह न कहा था कि मैं नास्तिक हूं । ”

“ ठेस—सच तो यह है कि तुम्हारी दशा से मुझ से आज भी अच्छी है । तुम्हारा यह विश्वास नहीं है कि तुम्हें किसी मत का प्रचार करना है इस लिये किसी बात से उदासीन रहने में तुम्हारी अंतरात्मा तुम्हें विकल नहीं बना सकती । मैं विश्वास रखता हूं कि मुझे इस धर्म का प्रचार करना है परन्तु शैतान की भांति सब कुछ समझते हुए भी अपने कर्त्तव्य पथ से हटा जा रहा हूं क्योंकि मैं धर्म प्रचार छोड़कर तुम्हारे प्रेम के सामने हार मान रहा हूं । ”

“ कैसे ? ”

“ क्यों नहीं ? ” उसने शुष्कता से कहा । “ मैं यहां एक लम्बा मार्ग तै करके तुमसे मिलने चला आया । परन्तु घर से तो मैं कैस्टरब्रिज के मेले में जाने के लिये चला था । वहां मुझे टोक २-३०

बजे एक धार्मिक उपदेश देना था। इस समय वहां मेरे सब भाई मेरी प्रतीक्षा में होंगे। देखो यह है उसकी सूचना।

उसने अपनी जेब से एक विज्ञप्ति निकाली जिस पर स्थान दिन व समय सभी कुछ छपा था जहां दरबारविल को धर्म प्रचार करना था इस विज्ञप्ति से उसके कथन की पुष्टि हो गई।

“लेकिन तुम वहां कैसे पहुंच सकते हो?” घड़ी देख कर टैस बोली।

“मैं वहां नहीं पहुंच सकता। मैं तो इधर आ गया हूं।”

“अरं—क्या तुमने वास्तव में धार्मिक प्रचार की व्यवस्था की थी—और—”

“हां—मेरा कार्यक्रम तो प्रचार का ही था लेकिन मैं वहां पहुंच न सकूंगा क्योंकि मेरे हृदय में एकतीव्र कामना जग उठी। मैं एक ऐसी स्त्री को देखने को अधीर हो उठा, जिसमें एक समय उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। नहीं—नहीं—मैं सत्य की शपथ ग्वाकर कहता हूं कि मैंने तुम्हारी उपेक्षा कभी नहीं की। यदि मैं तुम्हारी उपेक्षा करता, तो इस समय तुम से प्रेम भी न कर सकता था। मैं तुम्हारा निरादर नहीं करता था इसका भी एक कारण था। सब परिस्थितियां तुम्हारे प्रतिकूल रहों, फिर भी तुमने स्वयं को पवित्र रखा। ज्योंही तुमने वास्तविक परिस्थिति को पहचाना, तुम तुरन्त ही मेरे पास से दृढ़ता के साथ चली आई। तुमने कभी भी मेरी प्रसन्नता के निमित्त वहां रहना उचित न समझा; इसी कारण संसार में मैं केवल एकही ऐसी महिला को जानता हूं जिसके प्रति मेरे मन में कभी भी निरादर के भाव उदय नहीं हो सकते। यदि मैं किसी महिला को

आदर देता हूँ-तो वह तुम्हीं हो। फिर भी तुम मुझसे घृणा कर सकती हो। मैं समझता था कि मैं पहाड़ों पर पूजा करता हूँ लेकिन मैं देखता हूँ कि अभी मैं घने जंगलों में ही हूँ। हा ! हा ! ”

“ अरे एलैक दरबरविल ! इसका क्या आशय है ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड किया है ? ”

“ बिगाड ? ” वह बहुत झुंझलाहट के साथ बोला, “ तुमने जान बूझ कर तो कुछ भी नहीं किया। परन्तु मेरे धर्म-प्रचार में जो शिथिलता आ रही है उसका अनजान में तुम्हीं कारण बन गई हो। मैं स्वयं स पूछता हूँ कि क्या मैं उन्हीं अनाचार के दासों में हूँ जो संसार के कल्मष से एक बार निकल कर फिर उसी पाध-पंक में फँसते हैं तथा जिनका द्वितीय पापमय जीवन प्रारंभिक जीवन से भी बुरा होता है ? ” उसने अपना हाथ टैस के कंधे पर रख दिया। “ टैस ! मेरी बालिके ! जब तक मेरी तुम से भेंट न हुई थी—मैं मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो रहा था। कमसे कम समाज में तो मैं सम्मान प्राप्त कर रहा था ”। यह कहते कहते उसने टैस को झकझोर डाला मानों वह कोई शिशु हो। “ और तब फिर तुमने मुझे क्यों प्रलोभन दिया ? मैं उतना ही दृढ़ था जितना कोई भी अन्य व्यक्ति हो सकता है लेकिन तुम्हारी वे आंखें और वह मुख देख लेने के बाद — ! वास्तव में आदि नारी के पश्चात् ऐसा मोहक मुख कदाचित् ही कभी निर्मित हुआ होगा ! ” उसका स्वर धीमा पड़ गया। उसकी काली आंखों से एक तीव्रता फूट निकली। “ तुम मोहिनी हो टैस ! तुम अभागी जादूगरनी के समान प्रिय। ज्योंही मैंने तुम्हें देखा, मैं स्वयं को संभाल न सका। ”

प्रत्युत्तर में टैस बोली—“ मैं इस बात को कैसे रोक सकती थी । मैं तुम को स्वयं को देखने से कैसे मना कर सकती थी । ”

“ मैं यह जानता हूँ । मैं दुवारा कहता हूँ कि मैं इसके लिये तुम्हें दोषी नहीं ठहराता । परन्तु सच बात तो कहनी ही पड़ती है । जब मैंने उस दिन तुम्हें खेत पर इस प्रकार दुर्व्यवहार से संतप्त देखा, तो मैं यह सोचकर अधीर हो उठा कि मेरे पास तुम्हारी रक्षा का कोई कानूनी अधिकार नहीं है और न मैं ऐसा अधिकार प्राप्त ही कर सकता हूँ; साथही साथ जिसे यह अधिकार प्राप्त है, वह उसका बिलकुल चिन्ता ही नहीं करता ।

“ उनके विरुद्ध आप कुछ न कहिये । वे यहां उपस्थित नहीं हैं । ” बहुत आवेश में आकर टैस कहने लगी । “ उनके प्रति आदर के भाव रखिये । उन्होंने कभी तुम्हारा उपकार नहीं किया है । तुम्हें चाहिये कि उनकी पत्नी से दूर ही रहो ताकि कोई ऐसा अपवाद न फैल जावे जो उनके पवित्र नाम पर कलंक बन जावे । ”

“ मैं यही करूँगा । मैं यही करूँगा । ” वह एक ऐसे व्यक्ति की भांति बोला जो किसी मोहक स्वप्न से जाग पड़ा हो । “ मैंने आज अपनी प्रतिज्ञा भंग की है—मुझे मेले में उन शराबी ग्रामीणों को उपदेश देना था । यह पहला ही अवसर है जब मैंने ऐसी व्यावहारिक असावधानी की है । एक मास पूर्व मैं ऐसी संभावना का विचार कर भयभीत हो उड़ता था । मैं जाता हूँ और शपथ लेता हूँ । अरे क्या मैं शपथ ले सकता हूँ ? क्या मैं तुमसे दूर रहने की शपथ लेकर उसका निर्वाह कर सकता हूँ । ” तब फिर यकायक वह बोल उठा—“टैसी—एक आर्लिगन—केवल एक ! परानी मित्रता के निर्वाह के निमित्त ! ”

“ एलैक ! मैं इस समय अरक्षित हूँ । एक भले व्यक्ति का सम्मान मेरे साथ है । यह सोचो और लज्जित हो । ”

“ इस में क्या है ? “ अच्छा ! हाँ-हाँ, ”

उसने अपने ओठ दाब कर अपनी निर्बलता को दृढ़ता से वश में कर लिया । इस समय उसकी आँखों में न तो धार्मिक विश्वास का ही कोई चिन्ह था और न सांसारिक राग का । उसके सुधार के दिनसे जो पुराने मनमाने आवेगों की मृतात्मायें उसके आननकी रेखाओं में निर्जीव पड़ी थीं आज जाग उठीं तथा सब वहीं एकत्रित होगईं । अनिश्चय की भावना में लीन वह बाहर चला आया ।

यद्यपि दरबरविलने घोषणा की थी कि उसका आज का प्रतिज्ञा-भंग किसी धार्मिक व्यक्ति की साधारण असावधानी थी परन्तु वास्तव में टैस के शब्दोंने एन्जिल क्लेअर के स्वरो में व्यक्त किए जाने के कारण उस पर अत्यधिक प्रभाव डाला था । टैसके समीप से चले आने पर भी उन शब्दों का प्रभाव कम न हो सका । वह मौन धारण किए आगे बढ़ता रहा, मानों उसकी शक्ति सम्प्रति अज्ञात संभावना के यकायक उपस्थित हो जाने के कारण क्षीण हो गई हो । अब तक तो वह अपनी स्थिति को दृढ़ मानता था । उसके आकस्मिक परिवर्तन में तर्क की विशेष स्थान न था । उसकी माता की मृत्यु के पश्चात् वह किसी नवीन आकर्षण की खोज में था और अचानक यह धार्मिक भावना उस पर प्रभाव डाल गई । चिन्ता रहित व्यक्तियों में ऐसे अनायास परिवर्तन सुगम ही है ।

टैसने तर्क की जो बूंदें उसके उत्साह के समुद्र में डालदी थीं, उन से उस में अबाध तरंगों का उड़ना रुक गया और वह शान्त और सीमित बन गया । जब वह टैस द्वारा कथित शब्द-समूहों को

मनही मन बार बार सोचा करता था तो स्वयं से कहा करता—“वह चतुर व्यक्ति नहीं जानता होगा कि अनुभव की यह बातें टैस को बतला देने से उसने मेरे लिये टैस के समीप पुनः पहुंचने का मार्ग सुगम बना दिया है । ”

४७

प्लिण्टकूम्यऐश खेत पर गेहूं के अन्तिम बोझ की दांय हो रही थी । मार्च का प्रभात विशेष रूपसे अनाकर्षक था क्योंकि कोई ऐसा चिन्ह न दिखलाई देता था जिसके पूर्वीय क्षितिज का कुछ भी आभास मिल सके । धूंधले प्रकाश में पूंज का मिरा उठा हुआ दिखलाई देता था । समस्त शीत ऋतु में यह एकान्त में खड़े रहकर अपनी धूलों और विवर्णता झेलता रहा था ।

जब इज हुवेत और टैस इस क्रियाम्थल पर आईं तो समीप की खड खडाहतने उन्हें बतला दिया कि अन्य श्रमिक उनसे भी पड़ले वहां आ चुके हैं । जब कुछ प्रकाश और फैला तो दो मानवों के मिर उस पूंज के सिरे पर दीख पड़े । वे दोनों बांझ को उतिन रहे थे जिस का प्रयोजन यह था कि बालों को पृथक करने से पूर्व फूस हटा दिया जावे । जिस समय यह क्रिया चालु थी इज, टैस तथा अन्य श्रमी स्त्रियां अपने स्वेत-भूर वस्त्र पहने, प्रतीक्षा में खड़ी खड़ी कांप रही थीं । कृषक ग्रीबीने अनुरोध किया था कि उन सब को इतने शीघ्र ही वहां आ जाना चाहिये ताकि दिवस की समाप्ति के पूर्व ही उनका कार्य समाप्त हो जावे । पूंज के समीप ही वह रक्ताभक्कर शासक विद्यमान था जिसकी सेवा में यह श्रमी स्त्रियां उपस्थित थीं । अभी उसकी केवल एक झलक

दिखलाई देती थी। वह लकड़ी का बना था तथा उस में पट्टियाँ तथा पहिये लगे थे। यही दाँय करने की मशीन थी। जब यह चलती थी तो उन महिलाओं के पुठों और छायाओं की सहनशक्ति पर क्रूरशासक की भाँति शासन करती थी।

कुछ ही दूर एक दूसरा अस्पष्ट आकार था; यह काला था; तथा इसका स्वर नियंत्रित तथा जो उसकी सुरक्षित शक्ति की सूचना देना था। एक श्वेत-तरु के समीप उसकी लम्बी चिमनी तथा उस स्थल से विकीर्ण होनेवाली उष्णता अधिक प्रकाश के अभावमें भी यह स्पष्ट कर रही थी कि यहाँ वह इंजन खड़ा है जो आज इस छोटे सप्ता में समस्त हलचल का कारण बनेगा। इंजन के समीप एक कृष्ण वर्ण स्थिर प्राणी खड़ा था जो लम्बाई का साक्षात् अवतार प्रतीत होता था तथा जिसमें घुँए की कृष्णता का आभास भी सर्वत्र विद्यमान था। उसके पार्श्व में कोयलों का एक ढेर था। वह स्वयं कुछ निद्रा-निमग्न सा था। वही व्यक्ति उस इंजन का चालक था। उसके व्यवहार तथा वर्ण की विभिन्नता उसे किसी अन्य देश का निवासी प्रमाणित कर रही थी जो मानों इस पीले अनाज तथा पीलीमिट्ट वाले प्रदेश में अचानक आ गया था तथा इससे उसका कोई समंजस्य भी न था। वह यहाँ के मूल निवासियों को आश्चर्य में डाल देता था तथा उन्हें कभी व्यग्र भी बना देता था।

वह जो कुछ देखता था, उसका उसके हृदय पर प्रभाव पड़ता था। वह कृषि-संसार में था परन्तु फिर भी वह उसका अंग न बन सका था। वह आग और धूँए की सेवा में रहता था !। खेतों के निवासी वनस्पति, ऋतु, हिम तथा मृत्यु की सेवा करते थे। वह अपने

इंजन के साथ एक खेत में दूसरे तक एक तहसील से दूसरी में घूमा करता था क्योंकि सम्प्रति वैसैक्स के इस भाग में ढांग की मशीन चलती-फिरती रहती थी। वह मनुष्य एक अद्भुत उत्तर की शैली में बोलता था उसके विचार स्वयं उस तक ही सीमित रहते थे तथा उसकी दृष्टि अपने आधीन उस लौह-यंत्र पर रहती थी वह अपने चारों ओर के दृश्यों पर कदाचित् ही कभी दृष्टि डालता होगा और उसे उसकी कुछ भी चिन्ता न थी कि उसके आस पास क्या हो रहा है। स्थानीय निवासियों से वह केवल आवश्यक बातचीत ही करता था मानों किसी पुरातन अभिजाप ने उसे यहां उसकी रुचि के प्रतिकूल भ्रमण करने पर विवश किया हो। इंजन के चालक-चक्र से लाल यंत्र तक जानेवाली लम्बी पट्टी ही कृषि संसार और उसके मध्य संपर्क स्थापित करने का एक मात्र माध्यम थी।

जब श्रमिक-समूह बोझों को खोल रहा था, यह व्यक्ति अपने चलते-फिरते शक्ति के भंडार के पार्श्व में निर्लिप्त भांव से खड़ा था, इस यंत्र की उष्ण कृष्णता के समीप आकर प्रभात की पवन भी कांद उठती थी। प्रारंभिक श्रम में उस व्यक्ति को कुछ भी सहयोग न देना था। उसके इंजन की आग प्रज्वलित थी: उसकी वाष्प का दबाव बढ़ रहा था। कुछ ही सैकण्डों में वह उस लम्बी पट्टी को असाधारण गति में घुमा सकता था। इसके दूसरे किनारे पर चाहे अनाज हो, चाहे मूसा हो और चाहे कोई अन्य वस्तु हो, उस के लिये सभी एकसा था। उस स्थान पर भ्रमण करनेवाले व्यक्तियों में से यदि कोई उसका परिचय पूछ बैठता तो यह तुरन्त उत्तर दे देता कि वह एक इंजीनियर है।

दिवस का प्रकाश पूर्ण रूपसे व्याप्त होने के पूर्व ही पुंज विधिवत खुल चुका था। मनुष्यों ने तब अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लिया। क्रिया यंत्र पर निश्चित स्थान में खड़ी होगई तथा अब कार्य आरंभ हुआ। कृपक गोवी अथवा 'वह' जैसा कि सभी श्रमिक उसे पुकारते थे—इसके पूर्व ही यहां आ चुका था और उसी की आज्ञानुसार टैस मशीन के चौरस भाग पर रखी गई थी। उसके समीप ही मशीन में अनाज डालने वाला व्यक्ति खड़ा था। दूसरी ओर पूंज पर इजहुवत खड़ी थी। वह जो भी बोझ टैस को देती, टैस उसे लेकर खोलकर समीप के व्यक्ति को देती जाती थी, जो उसे घूमते हुए यंत्र में डालता रहता था। यंत्र अविलम्ब उसमें से अनाज के दाने पृथक् कर बाहर फेंक देता था।

शीघ्र ही उनका कार्य पूर्ण गति से चलने लगा। प्रारंभ में एक दो बार जब कोई कठिनाई उपस्थित हुई तो यंत्रों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वालों के हृदयों को कुछ आनन्द मिला। कार्य नाशता के समय तक अबाध गति में चलता रहा। उसके बाद यंत्र को आधे घंटे का विश्राम दिया गया। और जब नाशता के पश्चात् कार्य पुनः आरंभ हुआ तो खेत के समस्त खाली श्रमिकों को भी काम में जुटना पड़ा क्योंकि अनाज के ढेर के पार्श्व में भूसा का ढेर भी तैयार होता जा रहा था। उन्होंने दोपहर का जलपान अपने स्थानों पर खड़े-खड़े ही शीघ्रता में समाप्त कर लिया तथा और कुछ घंटे व्यतीत होते होते मध्याह्न के भोजन का समय आगया। कभी न थकने वाल चक्र अब भी घूम रहे थे तथा यंत्र का रव अब भी समस्त समीपस्थ प्राणियों में कंपन तथा उत्साह जगा रहा था।

भूसे के बढ़ते हुए ढेर पर जो वयप्राम व्यक्ति काम कर रहे थे वे अतीत के उन दिनों की चर्चा चला रहे थे जब कि वे डंडों से बलूत की लकड़ी के बने फर्शपर अनाज को पीट-पीट कर दौंय किया करते थे, जब प्रत्येक कार्य हस्त-कौशल द्वारा ही सम्पन्न किया जाता था। उनकी सम्मति में सब कार्य की प्रगति धीमी रहती थी परन्तु उसका परिणाम उत्तम था। जो लोग अनाज की ढेरी पर काम कर रहे थे वह भी थोड़ी-बहुत बातें कर लेते थे लेकिन मशीन पर काम करने वाले तो पसीने से लथपथ हो रहे थे तथा अपने भार को शङ्ख-विनिमय द्वारा कम न कर सकते थे। टैस भी इन्हीं में थी। काम रुकता ही न था तथा इस कारण टैस इतनी अधिक थक जाती कि कभी-कभी वह यह सोचने लगती कि फ्लिण्टकुम्भ पेश में न आई होती तो अच्छा रहता। अनाज की ढेरी पर काम करने वाली औरतों में मेरियन भी थी। यह औरतें कभी कभी अपने पात्रों से मदिरा या शीतलचीय पीने को ठहर जाती थी, या कभी अपने आननों से स्वेद पोंछते समय अथवा अपने वस्त्रों से तिनके हटाते समय एक दूसरे से कुछ मनोरंजक वार्त्तालाप भी कर लेती थीं परन्तु टैस के लिए कोई विश्राम न था। वह घुमने वाला ढोल तो कभी भी न रुकता था, इसी कारण जो मनुष्य उसमें वालोंके बोझ डालता था—वह भी न रुक सकता था और तब वह कैसे रुक सकती थी जिसे उस मनुष्य को खुले हुए बोझ देने पड़ते थे। हाँ कभी-कभी मेरियन उसके स्थान पर आजाती थी—तो टैस विश्राम कर लेती थी। प्रति दिन कम से कम आधा घंटा तो मेरियन यहां आ ही जाती था यद्यपि श्रोत्री इसका घोर विरोध करता था। उसकी सम्मति में इस स्थानपर कार्य करने में मेरियन बहुत सुस्त थी।

संभवतः किन्हीं आर्थिक कारणों से इस कार्य के लिए साधारण तः किसी स्त्री-श्रमिक को ही चुना जाता था। टैस को इस कार्य के लिए रखते समय ग्रोबी कहता कि उसमें फुर्ती और शक्ति दोनों हैं तथा साथ ही साथ वह देर तक काम पर टिक सकती है ! दौए करने वाले यंत्र का रव जैसे ही वार्त्तालाप में वाद्या डालता था, इसके अतिरिक्त यदि कहीं उसमें आवश्यक मात्रा से कम अनाज पड़ता, तो वह रव एक चित्कार में बदल जाता। इसी से टैस तथा उसके समीप का श्रमिक मिना सिर घुमाए काम में लगे रहते थे। इसी कारण टैस को पता भी न चल सका कि भोजन के समय के पूर्व एक महाशय ने फाटक में होकर चुपचाप खेत में प्रवेश किया है और वह एक दूसरे ढेर की आड़ में खड़े होकर इस दृश्य को तथा विशेष रूप से टैस को निहार रहे हैं। वह अच्छे ढंग का ट्वीड का वस्त्र पहने थे तथा उनके हाथ में एक सुन्दर छड़ी धूम रही थी।

“ वह कौन है ? ” इजहुवेत ने मेरिअन से पूछा। उसके पहले यही प्रश्न टैस से पूछा था परन्तु टैस उसे सुन न सकी !

“ किसी का चादनेवाला होगा—मैं तो यही समझती हूँ। मेरिअन ने हँसते हुए कहा।

“ मैं एक गिन्नी का शर्त लगा सकती हूँ—यह व्यक्ति टैस को चाहता है। ”

“ अरे नहीं। यह तो वही पुजारी है जो कुछ दिनों से टैन के पाम आने-जाने लगा है। कोई ऐसा छैला नहीं है। ”

“ हाँ—है तो यह वही व्यक्ति। ”

“ क्या यह वही व्यक्ति है— जो कभी पुजारी भी था ? लेकिन अब तो वह बिल्कुल बदल गया है । ”

“ अब उसने अपना काला कोट तथा श्वेत गल-बंध छोड़ दिया है तथा अपनी मूँछें कटा डाली हैं ; परन्तु यह है तो वही व्यक्ति । ”

“ क्या तुम वास्तव में यही समझती हो । तो मैं उस से कहे देती हूँ । ” मेरिअन ने कहा ।

“ तुम कुछ मत कहो । वह शीघ्र ही स्वयं सब कुछ देख लेगी । ”

“ मैं समझती हूँ कि उस व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं है कि धर्म-प्रचार के साथ-साथ किसी विवाहित महिला से प्रणय-निवेदन करे । यद्यपि मैं मानती हं कि उसका पति स्वदेश में है तथा एक प्रकार से वह एक विधवा का जीवन ही व्यतीत कर रही है । ”

“ परन्तु वह टेस की कुछ हानी नहीं कर सकता । ” इज ने गुप्तता से कहा । “ उसका मन जहाँ लग गया है वहाँ से हटाया नहीं जा सकता । प्रेम दृढ़ होना चाहिये फिर न तो दूसरा प्रणय-निवेदन, न प्रचार और न वज्र-प्रहार ही किसी स्त्री को उस मार्ग से बिचलित कर सकते हैं ; चाहे उस के लिये उस प्रेम को त्यागना हितकर भी क्यों न हो । ”

भोजन का समय आते ही यंत्र का रव बन्द हो गया । टेस भी अपने स्थान से चल दी । यंत्र की हलचल से उसकी टाँगें ऐसी डगमगा रही थीं कि उसके लिये चलना भी कठिन हो गया था ।

“ तुम्हें भी स्फूर्ति लाने के लिए एक चौथाई पी लेना चाहिये जैसा अभी मैंने किया है । ” मेरिअन ने कहा । “ तब तुम इतनी श्रुत तथा थकित न दिखाई दोगी । हे भगवन्—तुम्हारा आभन ऐसा व्यथित क्यों दिखाई दे रहा है । ”

अच्छे स्वभाव वाली मेरिअन की समझ में आया कि टैस इस समय बहुत थकी हुई है ; यदि वह इसी समय अपने दर्शनाभिलाषी की उपस्थिति का पता पा लेगी, तो संभव है कि उसका भूक जाती रहे । वह सोच रही थी कि टैस को समझावुझा कर पूंज के दूसरी ओर लगी सीडी से उतार ले चले । ठीक इसी समय वह भद्रपुरुष सामने आया और उपर की ओर देखने लगा ।

टैस ने एक संक्षिप्त शब्द “ओहो” कहा । एक क्षण उपरान्त वह बोली “ मैं तो यहीं इसी ढेरी पर बैठकर भोजन करूंगी । ”

कभी कभी जब वे सब अपनी आंपांडियों से दूर होती—तो सब की सब इसी प्रकार पूंजों पर ही भोजन करने बैठ जाती थीं परन्तु आज तो हवा भी उग्र ही चल रही थी । इस कारण मेरिअन तथा उसकी सहेलियों पूंज से उतर कर चल दी तथा भूसे की ढेरी के समीप भोजन के लिए जा बैठी ।

नवागन्तुक वास्तव में एलैस दरबरबिल ही था जो अभी थोड़े समय पूर्व ही धर्मप्रचारक बना था ; यद्यपि आज उस का पहनावा तथा बनाव दुसरे ही ढंग का था । एक दृष्टि में ही यह समझ में आजाता था कि इसका पुराना ढंग फिर प्रकट हो रहा है । उसकी वय तीन या चार वर्ष अधिक हो चुकी थी, फिर भी उसने स्वयं को यथा संभव उसी रूप में टैस के सामने उपस्थित किया था, जिसमें टैसने उसे

पहले अपने चाहक अथवा यथाकथित चचेरे भाई के रूप में देखा था ।
 टैस निश्चय कर चुकी थी कि वह वहीं ठहरेगी इस लिये वह उन बोझों
 के मध्य में बैठ गई । नीचे जमीन पर बैठे हुए व्यक्ति अब उसे न
 देख सकते थे । उसने भोजन प्रारंभ कर दिया । धीरे धीरे उसे सीड़ी
 पर वगध्वनि सुन पड़ी । तुरन्त ही एलैक पूंज पर दिखलाई दिया । इस
 समय तक वह पूंज एक चौरस प्लेटफार्म सा बन चुका था । एक किनारे
 में दूसरे तक चलकर वह टैस के सामने बिना कुछ कहे मुने आ बैठा ।

टैस अपना साधारण भोजन खाती रही ; जिसे वह अपने साथ
 लाई थी । अन्य श्रमिक इस समय में भोजन समाप्त कर उसी पुजी के
 नीचे एकत्रित हो गये जहां बिखरे हुए भूसे में उनके विश्राम के लिये
 उपयुक्त स्थान था ।

“ तुम देख रही हो कि मे यहां फिर आगया हूं ” दग्बरविल
 ने कहा ।

“ तुम मुझे इतना क्यों सताते हो ? ” उसने जोर से कहा ।
 धृणा तथा तिरस्कार उसकी ऊँगलियों के छोरों से व्यक्त हो रहा था ।

“ मैं तुम्हें सताता हूं ? मैं सोचता हूं कि मुझे पूछना चाहिए
 कि तुम मुझे क्यों सताती हो ? ”

“ मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हें कभी नहीं सताती । ”

“ तुम कहते हो कि तुम मुझे नहीं सताती ? परन्तु वास्तव में
 तुम मुझे सताती हो । तुम मेरी स्मृति में आकर मुझे व्यग्र बनाती हो ।
 एक क्षण पूर्व दिन आंखों को तुमने मेरी ओर ऐसी कटुता से घुमाया
 था, वे ही आंखें मेरे सामने रात में तथा दिन में—घूमा करती हैं !
 टैस ! जब से तुमने हमारे उस शिशु की बात बतलाई है तब से ऐसा

प्रतीत होता है कि मेरी समस्त भावनाएँ जो किसी अन्य धारा में प्रगहित थीं—उनकी दिशा तुम्हारी ओर पलट गई है और सबकी सब इसी ओर आरही हैं। अब धार्मिक-मार्ग सूखा पड़ा है ; और इस सब का कारण केवल तुम्हीं हो। ”

वह चुपचाप उसकी ओर देखती रही।

“ क्या—क्या तुमने धार्मिक प्रचार बिल्कुल छोड़ दिया ”
उसने पूछा।

एँजिल से उसने आधुनिक विचार कों में अविश्वास करना तो पर्याप्त मात्रा में सीख लिया था क्योंकि उनके आकस्मित उत्साह को वह धुगा की दृष्टि से देखता था। परन्तु एक महिला होने के नाते वह कुछ घबड़ा गई।

कृत्रिम कटुता को अपनाए हुए दरबारविल बोला—

“ बिल्कुल छोड़ दिया। उस दिन तीसरे प्रहर में जब मुझे कैस्टरब्रिज मेले के शराबियों को उपदेश देना था—तब से मैं प्रत्येक ऐले कार्यक्रम को टुकराता आ रहा हूँ। भगवान जाने मेरे धर्म-बन्धु मेरे सम्बन्ध में क्या सोचते होंगे ! हाँ - हाँ ! बन्धुगण ! निस्संदेह व मेरे सुधार के लिये भगवान से प्रार्थना करते हैं ; मेरे लिए दुःखी है क्योंकि अपने ढंगमें वे दयालु है। परन्तु मुझे उन सब की क्या चिन्ता है ? जब किसी वस्तु में मेरा विश्वास ही नहीं रहा, तो मैं कैसे उसे अपना सकता हूँ ? मेरे लिए अब धर्म-प्रचार का कार्य अत्यन्त निम्न-कोटि का पाखंड है। अपने धर्म-बन्धुओं के मध्य में मेरी स्थिति एक पाखंडी की ही थी। मुझे तो नर्क में भेजकर यह सिखलाया जाना चाहिये कि मैं ईश्वर का अपयश न फैलाऊँ। तुमने भी कैसा सुन्दर

प्रतिकार लिया है। मैं ने तुम्हें पवित्र रूप में देखा था तथा तुम्हें धोका दिया। चार वर्ष के पश्चात् तुम एक ईसाई-प्रचारक को उत्साह से ओतओत देखती हो : तब तुम उस पर अपना जादू डालती हो तथा अब तुमने उसे पूर्णतया नर्कगामी बना डाला है। लेकिन ठेस ! मेरी साथिनि ! जैसे कि मैं पहले तुम से कहा था—मेरा तो बातचीत का ढंग ही ऐसा है—तुम्हें इस विषय में अधिक चिन्ता न करनी चाहिये। वास्तव में तुमने कोई अपराध नहीं किया। यदि तुम्हारा कोई अपराध है, तो बस यही कि तुमने अपने आकर्षक आनन तथा सुल कलेवर के सौंदर्य को अक्षुण्ण रक्खा है। मैं ने अभी अनाज के पूँज पर उसे देखा था—तब तक तुम मुझे नहीं देख सकी थीं। तुम्हारे कड़े सुन्दर बन्धन मुझे व्यग्र बना देते हैं और तुम्हारा केश-पाश। तुम जैसी खेतों में काम करनेवाली बालिकाओं को उन केश-पाशों को कभी व्यवहार में न लाना चाहिए; नहीं तो तुम निरापद नहीं रह सकतीं।” वह कुछ देर तक ठेस की ओर मौन रह कर निहारता रहा और फिर कुछ विहँसकर कहने लगा “मैं सोचता हूँ कि वह कुँआरा-पुजारी, जिसका मैं शायक था—यदि कहीं तुम्हारा यह सुन्दर आनन देख ले, तो वह भी अपना सब काम-काज उसी प्रकार छोड़ देगा, जैसे मैंने छोड़ रखा है।”

ठेस ने उस समय कुछ उत्तर देने की चेष्टा की परन्तु उसकी वाक शक्ति ने उसका माथ न दिया। एलैक बिना इस पर कुछ ध्यान दिए कहने लगा—

“ठेस ! जो स्वर्ग तुम दिखला रही हो—वैसा कहीं और भी हो सकता है—परन्तु मच बात यह है कि—” दरबारविल यह

कहते-कहते उठा और समीप आकर उन बोझों के ऊपर अपनी कोहनी का सहारा लेकर खड़ा हो गया । “ जब मैं पिछली बार तुम से मिला था—तब से यही सोचता रहता हूँ कि तुम्हारे ‘उस’ने जो कुछ कहा था उसमें कितना तथ्य है । मैं भी इसी निराशा पर पहुँचा हूँ कि इन पुराने मग्न सिद्धान्तों में कुछ व्यवहार-बुद्धि की कमी है ; लेकिन वृद्ध पुजारी क्लेअर के उत्साह का मुझ पर इतना अधिक प्रभाव कैसे पड़ा कि मैं उन से भी अधिक प्रचार-कार्य में जुट गया, यह मेरी समझ में नहीं आता । अब रही वह दूसरी बात जो तुमने अपने अद्भुत पतिका बुद्धिमत्ता के बल पर बतलाई थी—उस पति की—जिसका नाम तुमने अब तक नहीं बतलाया है ! तुमने कहा था कि बिना किसी धर्म के भी आनन्ददायी जीवन का मार्ग मिल सकता है—यह बात मेरी समझ में नहीं आती । ”

“ क्यों नहीं ? तुम कम से कम दयालुता और पवित्रता से प्रेम करने का मार्ग गृहण कर सकते हो—इस में कौन सा धार्मिक हट है जिसको तुम्हें छोड़ना पड़ेगा ? ”

“ अरे नहीं । मैं तो उससे बिल्कुल ही विपरीत प्रकृति का मनुष्य हूँ । अगर कोई मुझ से यह कहनेवाला न हो कि—ऐसा करोगे तो तुम्हें तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् सुख मिलेगा अथवा वह करोगे तुम्हारे लिये भविष्य में बुरा होगा—तो मुझ में किसी भी कार्य के लिये उत्साह नहीं आता । मैं कहता हूँ कि यह सब भाड़ में जावे—मैं अपने कार्यों अथवा मनोवेगों के लिये अपने ऊपर कुछ भी उत्तरदायित्व नहीं ले सकता, यदि मेरे साथ कोई अन्य व्यक्ति उसके लिए उत्तरदायी नहीं बनना चाहता ; और मेरी प्रिये, यदि मैं तुम्हारी स्थिति में होता, तो भी इसी प्रकार बिना किसी उत्तरदायित्व के अपना काम चलाता । ”

टैस ने तर्क द्वारा उसे यह बतलाने का प्रयास किया कि उसने बर्म और नैतिकता को अपनी मन्द बुद्धि के कारण एक ही समझ रखा है। पुरातन काल में यह दोनों दो विभिन्न विषय थे। परन्तु एजिल क्लेअर इस तर्क के उत्तर में मौन रहा और टैस को भी तर्क की कोई उत्तम प्रणाली तो साथ न थी; वह तो भावना की पात्र थी न कि तर्क की—इसलिए वह अधिक न कह सकी।

“ अच्छा अब इसकी कुछ भी चिन्ता न कीजिए ” वह कहने लगा। “ मैं यहाँ फिर उपस्थित हूँ जैसा कि पहले किसी समय तुम्हारी सेवा में था—मेरी प्रिये। ”

“ उस प्रकार नहीं—उस प्रकार कभी नहीं—अब बहुत भेद हो गया है ” टैस ने प्रार्थना की। “ मुझ में तो तुम्हारे प्रति कभी भी कोई अनुराग नहीं रहा। अरे ! तुम अपने धर्म में ही क्यों नहीं रुक रहे; धर्म प्रचार को छोड़कर तुम फिर मेरे पास आकर इस प्रकार की बहकी-बहकी बातें कहने लगे। ”

“ क्योंकि तुम ने मेरी धर्म-भावना को ठोकर मार कर बाहर निकाल दिया है : इसका सारा पाप तुम्हारे ही शिर पर पड़ेगा ! तुम्हारे पति ने यह कभी न सोचा होगा कि उसके उपदेश उसी के लिए घातक सिद्ध होंगे। हा — हा ! मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि कैसे भी तुमने मुझे धर्मरहित बना दिया। टैस ! तुम्हारा मुझ पर इतना प्रभाव है, जितना पहले कभी नहीं रहा और मुझे तुम पर दया भी आती है। तुम्हारे प्रेम में इतनी दृढ़ता है, फिर भी मैं देखता हूँ कि तुम दुःखी हो—वह व्यक्ति जिसे तुम पर न्यौछावर होना चाहिए, तुम्हारी कुछ भी चिन्ता नहीं करता। ”

भोजन का ग्रास टैस के गले के नीचे नहीं उतर रहा था ; उसके अधर झुपक थे और उसका दम घुटा जा रहा था ! जो श्रमिक उसी पूँज के नीचे बैठे खा-पी रहे थे उनके शब्द तथा हँसना उसे ऐसा प्रतीत होता था मानों वह लोग दो फर्लांग दूर बैठे हैं ।

“ यह मेरे प्रति निर्दयता है ” वह बोली । “ यदि तुम्हें मेरी किञ्चित भी चिन्ता है, तो तुम मेरे सामने इस प्रकार की बातें नहीं कह सकते । ”

“ सत्य है—यह सत्य है । ” उसने कुछ झंपते हुए कहा । मैं अपने कार्यों का दोष तुम्हारे सर मढ़ने के लिये यहाँ नहीं आया हूँ । टैस में यहाँ यह बतलाने आया हूँ कि मैं तुम्हें इस प्रकार श्रम करते देखना पसन्द नहीं करता और मैं इसी उद्देश से तुम्हारे पास आया हूँ । तुम कहती हो कि तुम्हारा एक पति है और वह व्यक्ति मैं नहीं हूँ । अच्छा मान लो कि तुम्हारा एक पति है लेकिन मैं ने उसे कभी देखा नहीं है और तुमने मुझे उसका नाम भी नहीं बतलाया है और सब परिस्थितियोंको ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि वह कोई कल्पित व्यक्ति है । जो भी हो, यदि तुम्हारा कोई पति है भी, तो मैं समझता हूँ कि मैं उसकी तुलनामे तुम्हारे बहुत अधिक समीप हूँ । कमसे कम मैं तुम्हें इस कष्ट से बचाने का प्रयास तो भी करता हूँ, उसे तो तुम्हारी कुछ चिन्ता ही नहीं—ईश्वर उसके अदृश्य आनन को प्रसन्न रखे । पैगंबर होशिया के शब्द जो मैं पहले पढ़ा करता था मेरे ध्यान में आते हैं । टैस ! क्या तुम्हें वह उपदेश नहीं मालुम ? “ और वह अपने प्रेमी का अनुगमन करेगी परन्तु वह उसके समीप पहुँच न सकेगी । वह उसे खोजेगी पर प्राप्त न कर सकेगी । तब वह कहेगी कि

में जाती हूँ और अपने पहले पति के समीप जाऊंगी क्यों कि इस परिस्थिति से तो वह परिस्थितिही अच्छी थी। ” टैस ! मेरी गाड़ी तुम्हारी प्रतीक्षा में पहाड़ी के नीचे खड़ी है—और प्रिये ! यह मेरी गाड़ी है—उसकी नहीं । शेष सभी तुम्हें ज्ञात ही है । ”

जब वह इस प्रकार की बातें कह रहा था उस समय टैस का आनन रक्ताम होता जा रहा था परन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया ।

अपनी बांह टैस की कमर तक फैसाते हुए वह कहता रहा “ मेरे धर्म-मार्ग से विचलित होने का कारण तुम्हीं हो । अब तुम्हें मेरे साथ ही सुख-दुःख भोगना चाहिये तथा उस स्वच्छर की चिन्ता सदैव के लिये छोड़ देनी चाहिये जिसे तुमने अपने पति का नाम दे दिया है । ”

टैस ने भोजन के समय अपना एक चमड़े का दस्ताना उतार लिया था । वह उसकी गोद में बड़ा था । बिना कुछ कहे सुने टैस ने वह एलैक के मुँह पर जोर से मारा । यह भारी तथा मोटा था माना किसी योद्धा का हो तथा एलैक के ठीक मुँह पर लगा । कल्पना इस कार्य को कोई चाल समझ सकती है ; वास्तव में चतुर महिलाएँ इसकी अभ्यस्त भी होती हैं । इस आघात से एलैक अपनी विनीत स्थिति में अचानक चौंक पड़ा । जहाँ आघात पड़ा था वहाँ लाल रक्त झलकने लगा तथा एक ही क्षण में उसके मुँह से रक्त की बूंदें नीचे भूसे पर गिरने लगीं ! परन्तु उसने तुरन्त ही स्वयं को संभाला ; अपनी जेब से चुपचाप रुमाल निकाला तथा अपना रक्त सने अधरों को पोंछ डाला ।

टैस भी उठ कर खड़ी होगई थी मगर फिर वह संभल न सकी और बैठ गई ।

“ अब आप मुझ दंड दीजिये ” वह बोली । वह एलैक की ओर उसी प्रकार देख रही थी जैसे कोई पक्षी अपने वधिक की ओर अपनी गर्दन मरोड़े जाने के पूर्व देखता है । “ आप मेरे कोड़े लगाइये ; मुझे कुचल डालिये । उन लोगों की चिन्ता न कीजिये जो पूँज के नीचे हैं । मैं सहायता के लिये न चिल्लाऊँगी । जब मैं एकबार तुम्हारी शिकार बन चुकी—तो सदैव ही शिकार बनती रहूँगी—संसार का यही नियम है । ”

“ अरे नहीं—नहीं टैस ” उसने लापरवाही के साथ कहा । “ मैं इतना तो सह सकता हूँ । परन्तु तुम बहुत ही अन्यायपूर्वक एक बात भूल जाती हो—मैं तुमसे विवाह करने को उद्यम था यदि तुमने यह बात मेरी सामर्थ्य के बाहर न बना दी होती । क्या मैं ने स्पष्टरूप से तुम से यह निवेदन न किया था कि मेरी पत्नी बन जाओ ? हाँ ! मेरे प्रश्न का उत्तर दो । ”

“ आपने कहा था । ”

“ और तुम नहीं बन सकती । लेकिन एक बात स्मरण रखना । ” उसका स्वर कठोर बनता गया तथा अपनी सत्यता का विचार कर उसके स्वभाव में टैस के प्रति उदारता का भाव था तथा टैस ने कुछ अंशतक उसके प्रति अकृतसता तकट की थी । वह टैस के समीप गया तथा उसके कंधे पकड़ लिये । उसके स्पर्श से व्याकुल होकर टैस कांप उठी । “ मेरी श्रीमती ! स्मरण रखिये । एक बार मैं तुम्हारा स्वामी था ! मैं फिर भी तुम्हारा स्वामी बनूँगा । यदि तुम किसी मनुष्य की पत्नी बन सकती हो, तो तुम मेरी ही पत्नी बनोगी । ”

नीचे दौड़ करने वाल श्रमिक अब अपना विश्राम समाप्तकर धीरे धीरे चल-फिर रहे थे ।

टैस को छोड़ते हुए वह बोला “ यहां तक तो रही हमारे झगड़े की बातें । अब मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ तथा तीसरे प्रहर में तुम्हारा उत्तर जानने के लिए फिर तुम्हारे पास आऊँगा । तुमने मुझ सम्प्रति पहचाना नहीं है । परन्तु मैं तो तुम्हें पहचाना गया हूँ । ”

उसके बात टैस कुछ बोली ही नहीं—मानों वह होश में ही न थी । दरबरविल बोंझों को लांघता हुआ सीढ़ी से नीचे उतरा । नीचे श्रमिकगण उठे तथा अपनी भुजाएँ फैलाकर शराब की मूर्त्ता द्र कर दी । दौय की मशीन फिर चालू होगई । फूस की नवीन खरखराहट के मध्य खड़े होकर टैस पुनः एक के बाद दूसरे बोंझ को खोरखोलकर ढोल के समीप के व्यक्ति को देने लगी—मानों वह किसी स्वप्न में यह सब कर रही थी ।

४८

तीसरे प्रहर में कृष्क ने सूचना दी कि वह पूँज उसी रात्रि में समाप्त करना है क्योंकि उस रात में चन्द्रमा के प्रकाश से लाभ उठाया जा सकता था । दूसरा कारण यह था कि यंत्र तथा उसके चालक का दूसरे दिन किसी अन्य खेत में काम करना था । इसी कारण यंत्र के संचालन से उत्पन्न होने वाला खर्च अपने नियमित विश्रामों की चिन्ता न कर अबाध गति से होता रहा ।

लगभग ३ बजे टैस ने अपनी आंख उठाकर अपने चारों ओर देखा । यह देखकर उसे कोई आश्चर्य न हुआ कि एलैक दरबरविल वापस आ गया है तथा फाटक के पास झड़ी की छाया में खड़ा है । ऐलैक ने टैस को आंख उठाते हुए देख लिया तथा उसने अपना हाथ

हिलाकर संकेत किया और उसकी ओर देखते हुए वायु का एक चुम्बन लिया। इसका आशय था कि उनका झगडा समाप्त हो चुका है। टैस फिर निचे की ओर देखने लगी और सावधानी पूर्वक उस दिशा में न आकने का उमने निश्चय कर लिया।

इम प्रकार तीसरा प्रहर समाप्त होने लगा। गेहूँ का पूँज नीचा ढाला गया तथा भूसे का पूँज ऊँचा होता रहा और अनाज के बोरे गाड़ियों में लाद-लाद कर भेज दिये गये। ठीक ६ बजे गेहूँ का पूँज कंधे तक ऊँचा रह गया था परन्तु बिना दौड़ किए बोझ अब भी असंख्य प्रतीत होते थे यद्यपि उनकी एक विशाल संख्या यंत्र के द्वारा निगली जा चुकी थी तथा यह व्यक्ति और टैस उस यंत्र को खिलाने में संलग्न थे। उन में से अधिकांश पूँज टैस के दो कोमल हाथों में होकर ही निकले थे। जहाँ प्रभात में कुल न था वहीं पडा हुआ भूसे का ढेर उस लाल मुखवड का गुरीब सा प्रतीत होता था। पश्चिम में आकाश पर एक क्रोधमयी चमक आगई थी—तूफानी मार्च के मेघाच्छन्न आकाश में इससे अधिक को आशा भी नहीं की जा सकती। यह प्रकाश यकायक फूट पडा था जिससे दंग में संलग्न श्रमिकों के थके हुए आननोंपर एक ताम्रवर्ण की छटा सी छा गई थी। यही झलक महिलाओं के उडते हुए कन्नों पर व्याप्त थी तथा वे सब धुंधली आग की लपटों में परिवेष्टित सी प्रतीत होती थीं।

पूँज पर थकान की पीडा व्याप्त हो गई। जो श्रमिक यंत्र में बोझ डालता जा रहा था अब थक गया था और टैस अब देख रही थी कि उसकी गर्दन के लाल क्लर पर धूल और तिनके छा गए हैं। वह स्वयं अब भी अपने स्थान पर खड़ी थी—उसके लज्जाशील श्रम सीकर—

मंडित आनन पर भी अनाज की धूल लग गई थी तथा उसके स्वेत केश-रक्षक पर भी इसी धूल का अधिपत्य था। वही केवल एक ऐसी महिला थी, जिसे मशीन पर कार्य करना पड़ रहा था तथा यंत्र के संचालन से उसका शरीर त्रस्त था। पूंज के ब्रट जाने से अब वह मेरिअन तथा इज से भी पृथक् होगई थी तथा अब वह दोनों टैस के स्थानपर आकर उसकी कुछ सहायता न कर सकती थीं जैसा कि दिन में होता रहा था। लगातार प्रकम्पित रहने के कारण टैस कुछ ऐसी ध्यान-निमग्न हो गई थी कि उसके हाथ बिना उसके जाने भी अपना काम कर रहे थे। इस प्रकम्पन का प्रभाव उसके शरीर के प्रत्येक तन्तु पर था। उसे यह भी ध्यान न था कि वह कहां और किस स्थिति में है। इजहुवेत ने जब नीचे से उसे सूचना दी कि उसके बाल बिखर गये हैं तो उसने कुछ सुना ही नहीं।

धीरे धीरे उन श्रमिकों से अधिक से अधिक उत्साही भी शक्ति और उर्नादे होगए। जब कभी टैस अपना शिर छटाती, तो उसे उत्तर की ओर भारी भूसे का ढेर दिखलाई देता दिस पर कुछ व्यक्ति काम कर रहे थे। इस के सामने एक लम्बा लाल उत्थान-यंत्र था जो कि स्वर्ण की सीडी की भांति वहां स्थित था और जिस पर लगातार कुटे हुए भूसे की धारा चढ़ती चली जाती थी मानों कोई पीत सरिता पहाड़ी पर ऊपर की ओर बह कर उस ढेर के शिरे पर मचल रही थी।

टैस जानती थी कि एलैक दरबारविल अब भी उसी स्थल पर स्थित है तथा किसी न किसी स्थान से उसे देख रहा है यद्यपि वह यह न बतला सकती थी कि कहां से वह देख रहा है। उसके लिये यहां ठहरने का एक बहाना भी था—क्योंकि जब-जब दौए का पूंज समाप्ति

पर आता, तो थोड़ा चूहों का शिकार सदैव ही किया जाता था तथा इस में भाग लेने के लिये बहुत से ऐसे व्यक्ति भी वहाँ आ जाते थे जिनका दौड़ से कोई सम्बन्ध ही न था। इन में ~~कई-कई~~ के शिकार-प्रेमी रहते थे—भद्रपुरुष अपने मुँह में सिगार दबाए अपने शिकारी कुत्तों के साथ आते थे तथा साधारण पुरुष अपने हाथों में लाठियाँ अथवा पत्थर लेकर ही झपट पड़ते थे।

लेकिन अभी तो एक घंटेका काम शेष था। पूंज की तली में जीवित चूहों का समूह एक घंटे बाद ही खुलता, सँध्या का प्रकाश पहाड़ी की दिशा में धीरे धीरे विलीन होता गया तथा उसके स्थान में ऋतु के अनुसार श्वेतात्मन चंद्र दूसरी ओर श्रितिज पर उदित हुआ। लगभग एक या दो घंटे से मेरिअन टैस के सम्बन्ध में चिन्तित थी। वह टैस के इतने समीप न पहुँच पाई थी कि कुछ बातचीत कर सके। अन्य महिशाओंने मदिरा पीकर अपनी शक्ति का संरक्षण किया था परन्तु टैस को तो इस से भय लगता था। अपने शैशव में उसने इसके प्रयोग से उत्पन्न हानियों का कटु अनुभव किया था। परन्तु टैस अब भी काम में लगी रही। यदि वह काम न कर सकती, तो उसे उस स्थान से हटना पड़ता; और यही बात जो उसे एक या दो माह पूर्व सुगम प्रतीत होती थी; अब उसे भयाकुल बनाने वाली हो गई थी जब से दरयरविल ने उसके समीप आना प्रारंभ कर दिया था।

बोझ उठानेवाले तथा गंध में उसे डालनेवाले श्रमिकों ने अब पूंज को इतना नीचा कर दिया था कि नीचे जमीन पर खड़े व्यक्ति ऊपर वालों से सुगमतापूर्वक बातचीत कर सकते थे। टैस को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कृषक घोड़ी स्वयं उसके समीप आया। वह कहने

लगा कि यदि वह अपने मित्र से मिलना चाहती है, तो वह उसे अब अधिक देर तक काम पर नहीं रोकेगा तथा उसके स्थान पर किसी दूसरे को काम करने के लिये भेज सकता है। ठैस समझ गई कि यह 'मित्र' दरबारविल है और उसने यह भी जान लिया कि उसने यह भी जान लिया कि उसे यह सुविधा उस मित्र या शत्रु की प्रार्थना पर ही दी जा रही है।

अन्त में चूहे पकड़ने का समय भी आ गया और आखेट प्रारंभ हुई। ज्यों ज्यों पूंज कम होता जाता था, चूहे उसकी तली में एकत्रित होते जाते थे। अब अपनी अन्तिम पनाह के अनावृत होने पर वे खुली भूमी पर सभी दिशाओं में भागने लगे। इसी समय अर्द्धोन्मत्त मेरिअन की जोर की आवाज ने उसके साथियों को सूचना दी कि एक चूहा उसके शरीर पर आक्रमण कर चुका है। इस भय से सुरक्षित रहने के लिये अन्य महिलाओं ने कई योजनाएँ योग में लाई थीं। बहुतों ने अपने वस्त्र विभिन्न प्रकार से बांध लिये थे तथा कुछ किसी उंचे स्थान पर जाकर खड़ी होगई थीं। मेरिअन का आक्रमणकारी अन्त में अपने स्थान से हटा दिया गया तथा कुत्तों का भूकना, पुरुषों का पुकार, महिलाओं का चीत्कार, शपथ ग्रहण करना, पैर पटकना तथा विभिन्न प्रकार के अन्य शोर-गुल के मध्य ठैस ने अपना अन्तिम बोझ खोल डाला। यंत्र के ढोल की गति धीमी हुई, उस यंत्र का शोर समाप्त होगया और ठैस यंत्र से उतर कर भूमि पर आगई।

उसका प्रेमी जो चूहों के शिकार की क्रिया केवल देख भर रहा था, तुरन्त ही उसके पार्श्व में आगया।

“ क्या ? फिर भी— मेरे चपत द्वारा अपमानित होकर भी। ”
 टैस ने अत्यन्त धीमे स्वर में कहा । वह इतनी थकी हुई थी कि जोर से बोलने की उसमें सामर्थ्य ही शेष न थी ।

“ यह मेरी वास्तविक मूर्खता होगी यदि मैं तुम्हारे किसी कथन या कार्य से अप्रसन्न होऊँ । ” उसने तैन्त्रिज वाली मन-लुभावनी गैली में निवेदन किया । “ तुम्हारे छोटे-छोटे हाथ-पांव कैसे कांप रहे हैं । तुम उतनी ही शिथिल हो जितना पर्याप्त रक्तस्राव के पश्चात् कोई बछड़ा होजाता है । तुम इस बात को भलीभांति जानती हो कि तुम शिथिल हो । और तो भी यदि तुम चाहती, तो तुम्हें मेरे यहां आजाने के पश्चात् कुछ भी काम करने की आवश्यकता न थी । तुम इतनी दृढीली क्यों होगई हो ? फिर भी मैं ने कृपक महोदय से कह दिया है कि उन्हें महिलाओं से वाण-यंत्र पर काम लेने का कोई अधिकार नहीं है । उनके लिये यह उचित कार्य नहीं है तथा सब अच्छे खेतों पर अब यह चलन नहीं है और यह बात उसे ज्ञात भी है । मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर तक चलूंगा । ”

“ अच्छी बात है ” टैस ने कुछ उपहासभरी मुद्रा से कहा—
 तुम्हारी यही इच्छा है, तो तुम मेरे साथ चलोगे ही । मुझे इस बात का ध्यान है कि तुम मेरी स्थिति को जानने से पूर्व मुझ से विवाह करने के विचार से आए थे । कदाचित् आप उस से कुछ अधिक भले—कुछ अधिक दयालु हैं जितना मैं तुम्हें पहले समझा करती थी । आप जो कुछ दयालुता मेरे प्रति दिखलाते हैं— उसके लिये मैं आपकी कृतज्ञ हूँ; इसके अतिरिक्त यदि और किसी भावना से आप कोई कार्य करते हैं— उसपर मुझे क्रोध आता है । कभी-कभी तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती । ”

“ यदि मैं अपने-तुम्हारे पुराने सम्बन्धों को कानूनी रूप नहीं दे सकता, तो कमसे कम मैं तुम्हारी सहायता तो कर ही सकता हूँ। और यह कार्य मैं अब तुम्हारी भावनाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए ही करूँगा—पहले मैं इसकी कम चिन्ता रखता था। मुझ पर जो धर्म-प्रचार की धुन सवार थी वह अब समाप्त हो चुकी है। परन्तु मुझ में थोड़ा अच्छा स्वभाव अवशिष्ट है; मुझे आशा है कि वह अब भी बच रहा है। अब टैस ! मनुष्य और स्त्री में जो भी कोमल और दृढ भावनाएँ होती हैं उनको ध्यान में रखकर मुझपर विश्वास करो। मेरे पास पर्याप्त धन है—बल्कि पर्याप्त से भी अधिक है। मैं तुमको—तुम्हारे माता-पिता तथा तुम्हारी बहिनों को—सभी को चिन्तारहित बना सकता हूँ। मैं उन सबको सुखी बना दूँगा यदि तुम मुझ में थोड़ा भी विश्वास कर सको। ”

“ क्या अभी हाल में तुम्हारी उन से भेंट हुई है ? ” टैस ने तुरन्त ही पूछा।

“ हाँ ! उन्हें ज्ञात न था कि तुम कहाँ हो। यह केवल एक आकस्मिक घटना है कि मैं ने तुम्हें यहाँ देख लिया। ”

वाटिका की झाड़ियों की शाखाओं में होकर शीतल चन्द्र टैस के थकित आनन को झाँक रहा था। वह अपनी छाट्टी कुटिया के द्वार पर खड़ी थी; यहीं उसका वर्तमान आवाज था; दरबखिल उसके पार्श्व में स्थित था।

“ मेरे छोटे भाई-बहनों की चर्चा न करो। मुझे बिल्कुल ही समाप्त मत करो। ” वह बोली। “ यदि तुम उनकी सहायता करना चाहते हो—तो बिना मुझे बतलाये ही करो। ईश्वर ही जानता है कि

उन्हें सहायता की आवश्यकता है या नहीं । ” “ लेकिन नहीं-नहीं ! ” वह चिलहा कर बोली । “ मैं तुम से कुछ न लूंगी—न अपने लिये न उनके लिये । ”

वह उसके साथ और आगे न गया क्योंकि वह एक ऐसे घर में रहती थी जिसके अन्दर सभी सार्वजनिक था । घर में आते ही उसने हाथ-मुँह धोये तथा परिवार के साथ भोजन किया । उसके पश्चात् वह विचार निमग्न होगई तथा अपनी मेज दीवार के समीप खींच कर अपने छोटे दीपक के प्रकाश में भावना-विभोर होकर लिखने लगी ।

“ मेरे अपने पतिदेव ! मुझे इस प्रकार संबोधन करने दीजिये । मुझे ऐसा कहना ही पड़ेगा चाहे मुझ जैसी अयोग्य पत्नी का विचार कर भले ही अप्रसन्न हों । अपने दुःख में मुझे आप के सामने ही रोना पड़ेगा—मेरा कोई और नहीं है । एन्जिल—इस समय मुझे ऐसा प्रलोभन घेर रहा है यह कहने में मुझे भय मालूम होता है कि वह कौन है, और न मैं इस सम्बन्ध में कुछ भी तुम्हें लिखना ही चाहती हूँ । परन्तु मैं जिस प्रकार तुम्हारे बन्धन में हूँ—उसे तुम सोच भी नहीं सकते । क्या तुम अभी, इसी समय, मेरे समीप नहीं आ सकते—पूर्व इसके कि कोई अन्य दुर्घटना हो—तुम यहाँ आजाओ । अरे—मैं जानती हूँ कि तुम नहीं आ सकते क्योंकि तुम इतनी दूर हो । मैं सोचती हूँ कि यदि तुम शीघ्र न आए अथवा मुझे अपने समीप आने की आशा शीघ्र ही न भेजी, तो मेरा प्राणान्त होजायगा । जो दंड आपने मुझे दिया है वह उचित है—सर्वथा उचित है मैं इसे समझती हूँ और मुझ से अप्रसन्न रहने में आप उचित तथा न्यायपूर्ण व्यवहार ही कर रहे हैं । लेकिन एन्जिल ! कृपया-कृपया-न्याय के लिये नहीं—केवल मुझ पर कुछ दया

दिखलाकर ही चाहे मैं उस दया की अधिकारिणी भी न होऊँ—तो भी मेरे पास आ जाइये। यदि तुम आजाओगे—तो मैं तुम्हारे बाहु-पाश में आवद्ध हो-सुखपूर्वक मर सकूंगी। मैं इस से भी पूर्ण संतुष्ट रहूंगी: यदि तुम यह कहदो कि तुमने मुझे क्षमा कर दिया है।

एन्जिल ! मेरा जीवन केवल तुम्हारे लिये ही है। मैं तुम्हें इतना अधिक प्रियार करती हूँ कि मुझ से दूर चले जाने पर भी मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा सकती। और मैं जानती हू कि तुम्हारे लिये यह भी आवश्यक था कि अपने लिये एक खेत खोज कर लेलो। तुम यह न सोचना कि मैं एक भी कटु शब्द तुम्हारे विपरीत कहूँगी। केवल मेरे समीप आजाओ। मेरे प्रिय, मैं तुम्हारे बिना अकेली हूँ। मुझे अधिक कार्य करना पड़ता है, इसकी चिन्ता नहीं है; लेकिन यदि तुम केवल एक छोटी पंक्ति भी लिखकर भेज दोगे कि मैं शीघ्र आ रहा हूँ, तो मैं इतनी प्रसन्नता से रह सकूंगी—मेरे एन्जिल !

हमारे विवाह के पश्चात् मेरा धर्म कुछ इस प्रकार का बन गया है कि मैं प्रत्येक विचार तथा प्रत्येक दृष्टि में तुम्हारे प्रति कर्त्तव्य-निष्ठ रहना चाहती हूँ और जब कभी कोई व्यक्ति अनजान में भी मेरे रूप या गुणकी प्रशंसा करता है, तो मैं समझती हूँ कि यह तुम्हारे प्रति अन्याय कर रहा है। क्या तुम्हें उस प्रकार की कोई अनुभूति नहीं हुई जैसी हमारे पशु-शाला के जीवन में बहुधा होती थी। यदि हांती है तो तुम मुझसे विलग कैसे हो ? एन्जिल ! मैं वही स्त्री हूँ जिससे तुम्हें प्रेम होगया था—हां—बिल्कुल वही। मैं वह स्त्री नहीं हूँ जिससे तुम्हें घृणा थी और जिसे तुमने कभी देखा भी नहीं ! जबसे तुमसे मेरी भेंट हुई, मेरे लिये अतीत क्या था ? मेरे लिये तो मेरा अतीत मृतवत्

था। मैंने तुम से नया जीवन प्राप्त किया और मैं एक दूसरी ही स्त्री बन गई। मैं पहले की कैसे बन सकती थी ? तुम इस बात पर क्यों नहीं ध्यान देते। प्रिय ! यदि तुम थोड़ा भी इस पर ध्यान दोगे तथा स्वयं पर इतना विश्वास करोगे कि तुम्हीं ने मुझ में यह परिवर्तन उत्पन्न किया है तो कदाचित् तुम्हारा मन होगा कि अपनी बेचारी पत्नी के पास—मेरे पास चले।

अपनी प्रसन्नता में मैं ऐसी भूल गई कि मैं विश्वास के साथ सोचने लगी कि तुम सदैव ही मुझ से प्रेम करते रहोगे। मुझे यह ध्यान में रखना चाहिये था कि ऐसा सुख मुझ जैसी अभागिनी के भाग्य में नहीं है। परन्तु मेरा हृदय व्यथित है—अतीव की उस स्मृति में नहीं—कुल वर्तमान कारण हैं। सोचो—तुम्हीं सोचो ! मेरे हृदय में तुम्हें कभी न देख पाने से कितनी पीडा है। यदि मैं तुम्हारे प्रिय हृदय में प्रति दिन केवल एक मिनट के लिये भी वैसी पीडा उत्पन्न करती होती—जैसी मैं स्वयं प्रतिदिन हर समय अनुभव करती रहती हूँ, तो वह तुम्हें अपनी अभागी एकाकिनी के प्रति दयालु बना देती।

लोग अब भी मुझे सुन्दरी बताते हैं, एंजिल ! (वे तो मुझे अप्सरा कहा करते हैं—मैं तुम से केवल सत्य कहना चाहती हूँ।) कदाचित् मैं वही हूँ जैसा कि वे कहते हैं। परन्तु मेरे लिये इस सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं है। मैं इस सौन्दर्य की रक्षा केवल इस लिए करना चाहती हूँ कि उस पर तुम्हारा अधिकार है और मेरे प्रिय ! मैं सोचती हूँ—बस से कम एक यही वस्तु तुम्हारे गृहण योग्य मेरे पास बनी रहे। इस का मैंने यहां तक ध्यान रखा है कि अपने आनन को मैंने बहुधा पट्टी बांध कर ढँका है। मेरे एंजिल—यह सब मैं तुम्हें रूप के अभि-

रान के कारण नहीं लिख रही हूँ। तुम यह तों निश्चय ही जानते होगे कि मैं किसी अभिमान में ऐसा नहीं लिखूँगी। यह सब केवल इत लिये लिखा है कि तुम मेरे पास आ जाओ।

यदि तुम वास्तव में मेरे समीप नहीं आसकते, तो कम से कम मुझे अपने समीप आने की अनुमति दीजिये। मैं कहती हूँ कि मुझे तंग किया जाता है—दबाया जाता है कि जो काम मैं नहीं करना चाहती वह भी करूँ। यह तो संभव नहीं है कि मैं एक इंच भी अपने मार्ग से विचलित हूँगी परन्तु फिर भी मुझे भय लगा रहता है कि न जाने कब क्या घटना हो जावे। अपनी पहली भूल के कारण मैं अब इतनी अ-रक्षित हूँ। मैं इस सम्बन्ध में अब और कुछ नहीं कहना चाहती—यह विचार मुझे और भी दुःखित बनाता है। लेकिन यदि मैं किसी भयानक फंदे में फँस जाऊँ; तो अब मेरी जो दुर्दशा होगी वह पहले से कहीं अधिक भयानक होगी। हे भगवान्। मैं इस सम्बन्ध में तो कुछ सोच ही नहीं सकती ! या तो मुझे तुरन्त ही वहाँ आने की अनुमति दीजिये या तुरन्त ही मेरे समीप आ जाइये।

मैं तुम्हारे समीप तुम्हारी नौकरानी बनकर भी सन्तुष्ट अथवा प्रसन्न रहूँगी—यदि मैं तुम्हारी पत्नी बनकर नहीं रह सकती—तो कोई बात नहीं। इसमें कम से कम मैं तुम्हारे समीप रहूँगी—तुम्हारे दर्शन करूँगी और तुम्हें अपना समझूँगी।

दिवस के प्रकाश में मेरे लिये कुछ भी दर्शनीय नहीं रहता क्योंकि तुम यहाँ नहीं हो। खेतों में विभिन्न पक्षी घूमते हैं परन्तु मैं उनकी ओर नहीं देखना चाहती क्योंकि मुझे दुःख होता—मुझे तुम्हारा अभाव खलता है क्योंकि मेरे साथ तुम भी उनको देखा करते थे।

स्वर्ग में या पृथ्वी पर मेरी एकही कामना है—मेरे अपने प्रिय—मैं केवल तुम से मिलना चाहती हूँ । मेरे पास आइये—मेरे पास आकर उससे मेरी रक्षा कीजिये जिससे मुझे भय है ! तुम्हारी आशानुवर्तिनी हृदय भग्ना !

टैस

४९

यह पत्र पच्छिम के धार्मिक सदन में जलपान के समय विधिपूर्वक पहुंच गया । इस उपत्यका में वायु इतनी कोमल है तथा भूमि ऐसी सम्पन्न है कि उपज के लिये केवल नाम-मात्र का श्रम करना पड़ता है । पिलिष्टकूम्य एश में तो इसकी तुलना में अत्याधिक कठिन जुताई की आवश्यकता थी । यही कारण था कि टैस को वहां का मानव-समाज इतना भिन्न प्रतीत होता था—वास्तव में वह लगभग एक ही प्रकार का था । एंजिल ने केवल इस ध्यान से कि पत्रा उसके पास सुरक्षित रूप में पहुंचते रहें, टैस से यह प्रार्थना की थी कि वह अपने सभी पत्र उसके पिता के द्वारा भेजा करे क्योंकि वह अपने पिता को अपने पत्रों के सभी परिवर्तनों की ठीक-ठीक सूचना देता रहता था । इस देश में वह अपना भाग्य आजमाने को आया था—पीड़ित हृदय का भार लिये उसे इधर से उधर घूमना पड़ता था !

“ अब ” लिफाफे का पता पढ़कर श्रीमान् क्लेअर अपनी पत्नी से बोला “ यदि एंजिल रायो से एक मास के पश्चात् घर आना चाहता है, तो मेरे विचार से इस पत्र को प्राप्त कर उसके कार्यक्रम में दृढ़ता आ जायगी । उसने लिखा तो था कि वह घर आवेगा—ऐसी

आशा है। यह पत्र उसकी पत्नी का समझ पड़ता है। वह शीघ्र ही आवेगा।” अपनी पुत्र-वधु का स्मरण कर उसने गहरी सांस ली; और वह पत्र तुरन्त ही क्लेअर का पता लिखवा कर डाक में डलवा दिया गया।

“ मेरा प्यारा बेटा ! मैं आशा करती हूँ कि वह सकुशल घर आ जायगा। ” श्रीमती क्लेअर धीमे स्वर में बोलीं। “ अपनी मृत्यु पर्यन्त मैं यही सोचती रहूंगी कि उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है। तूम्हें उसे कैम्ब्रिज भेज देना चाहिये था—चाहे उसका धर्म में विश्वास था या नहीं। उसे भी वही अवसर मिलना चाहिये था, जो मेरे अन्य बेटों को मिला। उन परिस्थितियों में पढ़कर उसका उचित विकास हो जाता और बहुत संभव था कि वह भी इस धार्मिक-प्रचार को अपना लेता। वह प्रचारक बनता था न बनता; उसके साथ न्याय तो इसी प्रकार संभव था। ”

अपने पुत्रों के सम्बन्ध में जब कभी कोई चर्चा चलती, तो यही दुःख प्रकट कर श्रीमती क्लेअर अपने पति की शान्ति भंग कर देतीं। और यह बात वे बहुधा न कहा करती थीं; वह धर्म-परायण तथा विचारशील थीं और जानती थीं कि उनके पति के मस्तिष्क में इस संबंध में न्याय हुआ या नहीं—इस प्रकार की शंका से बहुधा बेचैनी रहती है। बहुधा उन्होंने उन्हें रात्रि में जागते हुए तथा एजिल की मंगल-कामना के लिये प्रार्थना करते हुए पाया था। लेकिन दृढ़ विचार वाले इस धार्मिक ने अब भी यह स्वीकार न किया था कि अपने अधार्मिक पुत्र के लिये भी वैसी ही शिक्षा की व्यवस्था उचित थी, जो उसने अपने अन्य दो पुत्रों के लिये की थी। उनकी दृष्टि में

शिक्षा से लाभ उठाकर उसका तीसरा पुत्र उन्होंने सिद्धांतों का विरोध करता जिनका प्रचार उनके जीवन का ध्येय था। उनके अन्य दोनों पुत्र तो उन की योजना के अनुसार कार्य कर ही रहे थे। यह बात उन की समझ में न आती थी कि जो विद्या उन्होंने दो धर्म-विश्वासी पुत्रों को दी है—उसे ही एक अविश्वासी को कैसे प्रदान किया जावे। यह उनके विश्वास, उनकी स्थिति तथा उनकी आशाओं के विपरीत था। फिर भी वह अपने बदनाम एंजिल से प्रेम करता था और एकान्त में बैठकर उसके प्रति इस व्यवहार को सोच कर दुःखित होता था जैसे बाइबिल में अब्राहम आइजक की दशा पर दुःखी था जब वे दोनों पहाड़ी पर जा रहे थे। उसका स्वतः प्रसूत भूक पश्चात्ताप उसकी पत्नी द्वारा प्रकट किए गये अवहेलना के शब्दों से अधिक कटु होता था।

इस असफल विवाह का दोष वे दोनों अपने ही ऊपर लेते थे। यदि एंजिल कृपक बनने का निश्चय न करता, तो वह कभी भी देहाती बालिकाओं के सम्पर्क में न आता। उन दोनों को स्पष्ट रूप से यह ज्ञात न था कि उनके पुत्र को उनकी पुत्रवधू से कौन सा कारण वृथक किए हुए है और न वे यही जानते थे कि यह बिलगाव किस तिथि को हुआ। पहले उनका विचार था कि किसी कारण से क्लेअर में अपनी पत्नी के प्रति असाधारण घृणा उत्पन्न होगई है। परन्तु बाद के पत्रों में कभी-कभी वह लिखा करता था कि उसका विचार अपने देश में आकर अपनी पत्नी को साथ ले जाने का है। इन विचारों को पढ़कर वे सोचते थे कि इस बिछोह का कारण कोई ऐसी निराशापूर्ण घटना नहीं है। क्लेअरने उनसे कह दिया था कि वह अपने सम्बन्धियों के साथ है। इन्हीं आशंकाओं के फेर में रह कर उन्होंने निश्चित कर

लिया था कि वे इस विषय में कुछ भी देखल न देंगी क्योंकि यह एक ऐसी स्थिति भी जिसका सुधार उनके हाथ की बात न थी ,

वे आखिं जिनके द्वारा पढ़े जाने के लिये टैस का पत्र लिखा गया था, इस समय दक्षिण अमेरिका में एक खच्चर की पीठ से अपने सामने का विस्तृत मैदान निहार रही थीं । यह पशु अपने भार को आन्तरिक अदेग से समुद्र-तट की ओर लिये जा रहा था । इस व्यक्ति के इस नवीन देशके अनुभव दुःख पूर्ण थे । यहां आने के पश्चात् शीघ्र ही जो बह धीमार पड़ गया था, उसका प्रभाव अभी तक उसके ऊपर था । धीरे-धीरे उसने यहां खेती करने की आशा छोड़ ही दी थी; परन्तु जब तक यहां ठहरने की थोड़ी भी संभावना बनी हुई थी तब तक उसने अपने माता पिता को इस सम्बन्ध में कुछ भी सूचना न दी थी । उसके विचारों में परिवर्तन का उन्हें ज्ञान न था ।

उसके देखते-देखते जो झुंड के झुंड कृषक इस देश में आए थे—उन्हे सुगम स्वतंत्रता की आशा थी परन्तु यहां वे मृत्यु के शिकार बनकर समाप्त हो गये । उसने देखा था कि अंग्रेजी खेतों से आने-वाली माताएं अपने शिशुओं को गोद में लिये यहा भटकती थीं: बालक ज्वर से पीडित होकर मर जाते थे, माता कुछ क्षण ठहरकर उसके लिये नरम मिट्टी में अपने खाली हाथों से एक गड्ढा बना लेतीं तथा अपने शिशुको उन्हीं प्राकृतिक औजारों की सहायता से दफना देतीं; एक-दो आंसू गिराकर फिर वह आगे चल देतीं ।

एन्जिल की प्रारंभिक योजना ब्रजिल में प्रवास करनेकी न थी. वह अपने देश में ही उत्तर या पूर्व में कोई खेत ले लेना चाहता था । यहां तो वह सब ओर से हताश होकर भाग आया था, संयोगवश

जिन दिनों वह अपने अतीत से सम्बन्ध-विच्छेद करने को उत्सुक था, उन्हीं दिनों अंग्रेज-कृषकों में ब्रजिल-प्रवाल का जोर था ।

अपने देश से दूर रहकर इन थोड़े से दिनों में कमसे कम मन में तो वह द्वादश वर्ष की आयु-वृद्धि प्राप्त कर चुका था । जीवन में अब वह सौन्दर्य के स्थान में कर्तुता को प्रधानता देता था । प्राचीन युग के रहस्यवाद में तो उसकी श्रद्धा कभी भी न हुई थी, अब वह प्राचीनों के धर्म-भाव को भी अश्रद्धा की दृष्टि से देखने लगा था । उसका विचार था कि अब उन निर्णयों में सुधार होना चाहिये । धार्मिक मनुष्य कौन है ? चरित्रवान् स्त्री कौन है ? इस प्रश्न पर वह बहुधा विचार किया करता ! किसी चरित्र का सौन्दर्य या कुरूपता उसकी सफलता में निहित नहीं है, वह तो उसके ध्येय और उसकी प्रेरणाओं में है । उसका सच्चा इतिहास यह नहीं है कि उसने क्या किया, हमें यह देखना चाहिये कि वह क्या करना चाहता था ।

फिर टैस के सम्बन्ध में वह क्या निर्णय करे ?

इस नवीन दृष्टि-कोण से देखने पर उसे अपने शीघ्रता में दिए गये निर्णय पर पश्चात्ताप होने लगा तथा वह दुःखित हुआ । क्या वह टैस को सदैव के लिये छोड़ चुका था अथवा नहीं ? अब वह यह न कह सकता था कि वह सदैव के लिये उसे छोड़ देगा तथा अब यह कहना भी अनुचित न होगा कि वह इस समय उसे स्वीकार करने की धुन में था ।

क्लेअर में अब टैस की स्मृति प्रबल हुई उन दिनों टैस प्लिण्टकम्ब ऐश में रहती थी-परन्तु यह बात उस समय से पहले की है जब कि टैसने अपनी परिस्थितियों से विवश होकर अपने सम्बन्ध में

दो शब्द लिखकर उसे चिन्तित बनाने की स्वतंत्रता ग्रहण की थी । वह बहुत बड़ी द्विविधा में था और अपनी इन उलझनों में पड़कर वह भूल जाता था कि टैस का इतने दिनों तक उसके पास कोई पत्र न भेजने का कारण क्या था । इस प्रकार टैस का विनम्र मौन उसकी समझ में विपरीत भाव उत्पन्न कर रहा था । यदि उसकी बुद्धि ठिकाने रहती और वह प्रत्येक बात का उचित मूल्य आंक सकता, तो वह टैस के इस मौन के वास्तविक अर्थ का महत्व जान सकता था । उसी ने तो कहा था । अब यह बात उसे स्मरण न थी परन्तु टैस तो उसकी आशाओं का अधरशः पालन कर रही थी । वैसे तो टैस स्वभाव से निडर थी परन्तु वह किसी पर अपना अधिकार जताना न जानती थी, क्लेअर के प्रत्येक निर्णय को वह हर प्रकार से सत्य मानती थी और उसकी आशा पाकर वह शिर झुका कर मुक रह जाती थी ।

अमेरिका के आन्तरिक प्रदेश में जिस यात्रा का वर्णन पड़ले किया था, उस में क्लेअर के साथ एक दूसरे खच्चर पर एक अन्य व्यक्ति भी चल रहा था । एन्जिल का यह साथी भी अंग्रेज ही था । यहां आने में उसका ध्येय भी यही था, यद्यपि वह द्वीप के भिन्न भाग में यहां आया था । यह दोनों इस समय मानसिक क्लेश में थे तथा एक दूसरे से अपनी-अपनी घरेलू समस्याओं पर बातचीत कर रहे थे । विश्वास करने से ही होता है, यदि दूसरा तुम पर विश्वास करे, तो तुम भी उस पर विश्वास करने लगोगे । मनुष्य में यह एक विचित्र बात देखी जाती है । विशेष रूपसे जब वह घर से दूर किसी स्थान में पहुंच जाता है, तो वह अपने जीवन की उन घटनाओं की भी अनजान व्यक्तियों से कहे देता है जिन्हें वह अपने मित्रों के सामने कहनेमें

भी संकोच करना है। ऍन्जिलने इस व्यक्ति के सामने अपने विवाह की समस्त दुःख भरी घटनाएँ खचनों पर चलते-चलते कह डालीं।

यह अपरिचित व्यक्ति ऍन्जिल से कहीं अधिक देशों और व्यक्तियों में घूम चुका था। उसके सुलझे हुए सर्व-प्रिय विचारों में सामाजिक नियमों का यह अपवाद, जिसे घर पर रहनेवाले व्यक्ति अत्यधिक महत्व देगे, कुछ विशेष महत्व का न था। जिस प्रकार पृथ्वी की गोन्दाई में पहाड़ों की ऊँचाई तथा घाटियों की नीचाई कोई विशेष अन्तर नहीं डालती, उसी प्रकार उस व्यक्ति की, सम्मति में टैस की उस घटना का समाज में कोई विशेष स्थान न होना चाहिये था। वह एन्जिल से बिलकुल ही भिन्न दृष्टि-कोण से इस बात को सोचता था। उसके विचार से क्लेअर को इसकी तो चिन्ता ही न करनी चाहिये थी कि टैस कैसी रह चुकी थी-विचारणीय यह था कि मविष्य में वह कैसी रहेगी। उसने क्लेअर से स्पष्ट शब्दों में कहा कि उसने टैस को छोड़कर चले आने में उसके साथ अन्याय किया है।

दुमरे ही दिन वे घनघोर वर्षा में खूब भीगे तथा सप्ताह की समाप्ति के पूर्व ही क्लेअर के साथी की मृत्यु होगई। उसे दफनाने के लिये, क्लेअर कुछ घंटों तक वहीं ठहर गया। उसके पश्चात् पुनः उसने अपनी यात्रा प्रारंभ की।

उदार-हृदय अपरिचित के साधारण कथन उसकी मृत्यु ने पवित्र बना दिये। क्लेअर इस व्यक्ति के सम्बन्ध में केवल नाम भर जानता था परन्तु तो भी उसकी बातों का क्लेअर पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। बड़े-बड़े धार्मिक एवम् दार्शनिक विद्वानों के तर्क पूर्ण चरित्र-सम्बन्धी उपदेशों से कहीं अधिक प्रभाव उस पर उस अन-

जाने; व्यक्ति की बातों का पडा ! उस व्यक्ति की सुलझी हुई विचार-धारा की तुलना में क्लेअर के निजी विचार तुच्छ जान पड़े तथा उस अपने कृत्य पर लज्जा प्रतीत हुई । उसके व्यवहारों में जो अनिश्चय था वह इस समय अपने नग्न-रूप में उसके समक्ष उपस्थित होगया । ईसाई धर्म के उपदेशों से वह यूनान की स्वतंत्र विचार प्रणाली को अधिक महत्व देता था; और उस सभ्यता में यदि किसी को अनुचित ढंग से पराजय स्वीकार करनी पड़े तो इससे उसकी प्रतिष्ठा कम न होती थी । निश्चय ही उसे टैस की अपवित्रता के प्रति अपनी घृणा की भावना में सुधार करना चाहिये था क्योंकि उसका कारण कपट था यह तो उसी के रहस्यवादी चिन्तन का निष्कर्ष था । क्लेअर पश्चात्ताप में विभोर होगया । इजहुवेत के वे शब्द, जो कभी उसकी स्मृति से दूर न हुए थे, आज पुनः उसे स्मरण हो आए । उसने इज से पूछा था—“क्या तुम मुझसे प्रेम करती हो । ” उत्तर में इजने ‘हां’ कहा था । परन्तु यह पूछे जाने पर भिन्ना कथा वह टैस से भी अधिक उससे प्यार करती है, उसने “नहीं” कहा था; टैस उसके लिये अपनी जान तक दे देगी परन्तु इज स्वयं इससे अधिक कुछ न कर सकती थी ।

वह टैस के सम्बन्ध में अब वैसे ही सोचने लगा जैसी वह विवाह के दिन लग रही थी । उसकी आंखें कैसे क्लेअर की ओर आकर्षित थीं, उस के शब्दों का उस कितना आदर करती थी मानों वह किसी देवता के शब्द हैं । और उस भयानक संध्या में अंगीठी के समीप जब उसकी सरल आत्मा अपना रहस्य स्पष्ट कर रही थी, उस समय उस अग्नि के प्रकाश में उसका आनन कितना दयनीय था,

टैस को यह अनुमान था न कि उसका प्रेम और संरक्षण यकायक बट जायगा ।

इस प्रकार क्लेअर जो कभी टैस का आलोचक था, अब वह उसका समर्थक बन गया । कटु अथवा अपवादपूर्ण शब्द उसने टैस के सम्बन्ध में अपने मन में कहे थे; परन्तु ऐसे विचारों के साथ जीवन-निर्वाह कठिन था । अब उसने उन विचारों को दूर भगा दिया । इस प्रकार के विचारों को अपने मन में स्थान देने का कारण उसकी भूल थी ! उसने साधारण सिद्धान्तों पर ही ध्यान दिया था विशेष परिस्थितियों की उसने चिन्ता न की थी ।

लेकिन हमारी तर्क-प्रणाली भी कुछ अस्पष्ट है । प्रेमियों और पतियों ने अपने विचारा में इसके पूर्व भी आमूल परिवर्तन किए हैं । इस में कोई सन्देह नहीं कि क्लेअर का व्यवहार उसके प्रति घृणा का था । मनुष्य बहुधा उन स्त्रियों के प्रति, जिन्हें वे प्रेम करते हैं या जिनसे उनका प्रेम रह चुका है, कठोरता का व्यवहार करते हैं । स्त्रियाँ भी उसी प्रकार मनुष्यों के साथ कठोर बन जाती हैं । परन्तु यह कठोर व्यवहार भी कोमल व्यवहार ही गिना जायगा यदि हम उन सर्वमान्य कठोरताओं पर ध्यान दें, जिनमें होकर हमारा जीवन अग्रसर होता है किसी के मृदु स्वभाव की तुलना में उसकी स्थिति कितनी कठोर बन जाती है, गत दिवस के प्रति आज कितना निष्ठुर है अथवा आज के प्रति भविष्य कितना कठोर होगा ।

टैसके वंश का ऐतिहासिक परिचय, दरबारविल वंश का पौरव — जिसे अबतक वह लुप्त मान चुका था — अब पुनः उसकी भावनाओं में घूमने लगा । वह सोचने लगा कि काल्पनिक महत्त्व में अन्तर क्यों

नहीं समझ पाया। जहाँ तक काल्पनिक महत्त्व की बात थी, टैस का दरबरविल वंश में होना बहुत महत्त्वपूर्ण था। अधिक दृष्टि से उसका चाहे कुछ महत्त्व न हो, परन्तु स्वप्न दृष्टा के लिये, दूसरों के पतन से सन्देश गृहण करने वालों के लिये यही बात अत्यधिक महत्त्व की थी। वास्तव में यह एक ऐसी बात थी, जो तुरन्त ही भुला दी जायगी। गरीब टैस के रक्त और नाम में जो यशपूर्ण भेद था तथा राजबाड़ी में पड़े हुए कंकालों से तथा संगमरमर के स्मृति-भविष्य में ही पर्दा पड़ जायगा। समय अपनी भाव-भरी कृतियों को स्वयं इसी प्रकार निर्दयता से नष्ट करता रहता है। टैस के आनन का बार बार स्मरण कर कि उसमें वही सौन्दर्य विद्यमान है जो टैस की मातापट्टा में रहा होगा, इस कल्पना ने उसकी नसों में वैसा ही विदूमुत-संचार किया, जैसा वह कभी पहले भी अनुभव कर चुका था, परिणाम स्वरूप उसका चित्त कुछ विक्षुब्ध हो उठा।

टैस के विस्मृत अतीत को जाने दीजिये, जो गुण उस में अभी विद्यमान थे, वह उस की सभी साधिनियों की तुलना में उसे सर्वश्रेष्ठ बना देते थे। स्वर्ग के उद्यान से अंगुर तोड़ने की प्रतीक्षा भी अपेक्षा प्रस्तुत उद्यान के अंगुर तोड़ना अधिक, युक्ति संगत है।

इस प्रकार पुनः जागृत प्रेम ने उपदेश दिया, टैस के हृदय की पुकार के स्वागत के लिये इस प्रकार मार्ग निर्मित हुआ ! क्लेअर के पिता इसी समय उस पत्र को उसके समीप भेज रहे थे। वह जिस प्रदेश में था, वहाँ तक इस पत्र के पहुँचने में विलम्ब लगना आवश्यक था।

इस बीच उस पत्र की लेखिका की आशाएँ एजिल के उसकी प्रार्थना पर ध्यान देकर लौट आने के संबन्ध में कभी बढ़ जातीं तथा कभी कम हो जातीं। जो बात उसकी आशा को मन्द करती थी वह

यह थी कि उसके जीवन की वे घटनाएँ, जिनके कारण उन दोनों का बिछोह हुआ था ज्यों की त्यों थी—उनमें जीवन भर कोई परिवर्तन संभव न था। और जब स्वयं उसकी उपस्थिति में उसका वह अपराध क्षम्य न हुआ तो उसकी अनुपस्थिति में वह कैसे क्षम्य बन सकेगा। फिर भी उसने अपना मन एक कोमल प्रश्न की ओर लगाया। वह सोचने लगी कि यदि क्लेअर लौटकर आ जावे, तो वह उसे किस-प्रकार अधिक से अधिक प्रसन्न बना सकती है। कभी कभी यह सोच कर वह आई भरा करती कि उसने उन गीतों पर अधिक ध्यान क्यों नहीं दिया जिन्हें वह अपनी वीणा पर गाया करता था। कभी वह सोचती कि उसने क्लेअर से यह क्यों न पूछा कि देहात की बालिकाएँ जिन नृत्य-गीतों को गाती हैं, उनमें उसे कौन कोन अधिक प्रिय हैं। टैसने घुमा-फिराकर यह बात ऐमी सीडलिंग से पूछी। वह तालघोथे से इज के साथ यहां आगया था। संयोगवश ऐमी को स्मरण था कि शालापति के यहां जिन गीतों को गाकर वे गायों को दुग्ध छोड़ने को उत्साहित करते थे, उनमें क्लेअर के प्रिय गीत यह थे : ‘कामदेव का उद्यान’ ‘मेरे उद्यान—मेरे आखेघ-पटु श्वान’ और ‘दिवस का प्रारम्भ’ जिन सुन्दर गीतों की उसे रुचि न थी वे यह थे : ‘दर्जी की पतलून’ तथा ‘मैं ऐसी सुन्दर थी।”

अब टैस की रुचि इन नृत्य-गीतों को ढंग से गाने का अभ्यास करने में विशेष थी। विभिन्न अवसरोंपर अवकाश के समय में वह इन्हें एकान्त में गाकर अभ्यास करती थी. ‘दिवस का प्रारंभ’ गायन उसे विशेष रुचता था।

“ जागो, जागो, जागो ।
 दिन निकल रहा है—जागो ।
 मृदुल वाटिका के प्रसून ले
 माला गूंथो ; प्रेमी को अनुरागो ।
 तरु पर बौल उठी पिडकुलिया ;
 शाखा पर गाती लघु चिडिया ;
 सुखद वसन्त प्रभात में—
 दिन निकल रहा है—जागो । ”

इस शुष्क शीत ऋतु में जब वह अन्य सब बालिकाओं से दूर एकान्त में बैठकर इन गीतों को गाती—तो ऐसी करुणा प्रवाहित होती कि पत्थर का भी हृदय पिघल जावे । यह सोच कर कि उसका प्रेमी इन गीतों को सुनने तो आयेगा ही नहीं उसके कपोलों पर अश्रु तुलक आते तथा गीतों के सरल शब्द गायक के संतप्त हृदय का दुःखमय उपहास लिये हुए वहां गूजते रहते । .

अपनी कल्पना के स्वप्न में टैस ऐसी निमग्न थी कि उसे पता ही न लगता था कि अब कौन सी ऋतु आ गई है ; दिन अब बड़े होने लगे थे तथा ‘स्त्रि-दिवस’ का त्यौहार समीप आगया था । इसके पश्चात् ही ‘प्राचीन स्त्री-दिवस’ आता जब कि उसका कार्य-काल यहां समाप्त होता ।

परन्तु उस निश्चित दिवस के आने के पूर्व ही एक ऐसी घटना होगई जिस कारण टैस कुछ दूसरी ही समस्याओं में उलझ गई । एक दिन संध्या समय वह नित्य की भांति अपने निवास-स्थल पर था । परिवार के अन्य सदस्यों के साथ वह नीचे के कमरे में बैठी थी । उ-

समय किसी ने द्वार खटखटाया और टैस के विषय में पूछा। द्वार में होकर धुंधले प्रकाश में टैस ने एक महिला की आकृति देखी जो लम्बाई के अनुसार पूर्ण-वयस्क प्रतीत होती थी परन्तु शरीर का अन्य गठन उसे बालिका ही सिद्ध कर रहा था। एक लम्बा, पतला, बालिका जैसा कलेवर उसके सामने था। वह इसे अब तक न पहचान सकी थीं जब तक उसने 'टैस' कहकर उसका संबोधन किया।

“अरे ! क्या लिजालू है ?” टैस ने चौंक कर पूछा। अपनी बहिन जिसे वह एक वर्ष पूर्व एक अवोध बालिका के रूप में छोड़ आई थी अब तक यकायक इस नवीन रूप में परिवर्तित हो चुकी थी। कदाचित् स्वयं लू को भी इस परिवर्तन का अर्थ ज्ञात न था। उसकी पतली टांगें, जो कि पहले उसके लम्बे फ्राक के नीचे कम दिखलाई देती थीं—अब उसकी लम्बाई बढ़ जाने से ओर फ्राक के छोटे हो जाने से—अधिक स्पष्ट थीं। उसके हाथ और बाहु उस वस्त्र में संकोच से स्थित थे तथा उसकी युवावस्था एवम् अनुभव-अन्यता का परिचय देते थे।

“हां—टैस ! मैं दिन भर तुम्हारी खोज में घूमती रही हूं—और मैं बहुत थक गई हूं।” लू ने भावना-रहित गंभीरता के साथ कहा।

“घर पर क्या हाल है ?”

“माताजी का स्वास्थ्य बहुत खराब है, डाक्टर कहता है कि वह मर जायगी। पिताजी भी स्वस्थ नहीं हैं। वह कहते हैं कि ऐसे उच्च परिवार के व्यक्तियों के लिये साधारण श्रमिकों की भांति काम करना अनुचित है। हमारी समझ में नहीं आता कि क्या करें।”

बहुत देर तक टैस बिचार में डूबी खड़ी रही। तब कहीं उसने लिजालू से अन्दर आकर बैठने को कहा। जब लिजालू अन्दर आगई तथा चाय पी रही थी, तब तक टैस एक निश्चय पर पहुँची। यह आवश्यक था कि वह घर जावे। उसका बन्धन तो प्राचीन 'स्त्री-दिवस' तक के लिये था जो ६ अप्रैल को पड़ता था लेकिन उस दिन के आने में अब बहुत विलम्ब भी न था—इस कारण उसने तुरन्त ही चल देने का निश्चय किया।

यदि रात्रि में उसी समय चल दिया जावे तो बारह घंटे की बचत होगी परन्तु उसकी बहिन तो इतनी थकी हुई थी कि दूसरे दिवस के पूर्व इतनी लम्बी यात्रा के लिये चलने में असमर्थ थी। टैस दौड़कर मेरिअन और इज के समीप गई—उन्हें सब हाल बतलाकर उनमें प्रार्थना की कि वे कृपक को उसकी दशा भलीभाँति समझा दें। लौट कर उसने लू के लिये भोजन बनाया और उसके पश्चात् छोटी बहिन को अपने बिछौने पर सुलाकर अपनी टोकरी में जो कुछ सामान आ सकता था—रख लिया, लू को दूसरे ही प्रभात में चले आने का आदेश देकर वह रात्रि में ही वहाँ से चल दी।

यमन्त में जब दिन-रात बराबर होते हैं, टैस रात्रि के दस बजे थुंधले तारागणों के क्षीण प्रकाश में—उस अंधकार में अपनी पन्द्रह मील की यात्रा के लिये चल पड़ी। निर्जन देहात में नीरव पदारोही के लिये रात्रि में किसी प्रकार का भय नहीं रहता; बल्कि एक प्रकार से कुछ लोगों को रात्रि से संरक्षण मिलता है। टैस यह

जानती थी—इसी लिये ठैस सबसे समीप की उन गलियों में होकर भी चलने लगी, जहाँ दिन में जाते समय उसे भय लगता था; इस समय उसे भयाकुल बनाने वालों का प्रभाव था और अपनी माँ की चिन्ता ने अन्य प्रकार के भयों को उसके मन से निकाल दिया था। इस प्रकार वह उतार-चढ़ाव पर एक के पश्चात् दूसरा मील तै करती हुई आगे बढ़ रही थी। अर्द्ध-रात्रि के लगभग वह बलवर्षों में आ गई जहाँ की ऊँचाई से नीचे की घाटी में घने अँधार के अतिरिक्त और कुछ न दिखलाई देता था। इसी घाटी के दूरी ओर उसका जन्म हुआ था। पठार पर वह लगभग पाँच मील चल चुकी थी—अब नीचे की घाटी में दस या ग्यारह मील चलने से उसकी यात्रा समाप्त हो जायगी। चलते-चलते नीचे की ओर जानेवाली घुमावदार सड़क तारागणों के प्रकाश में कुछ और स्पष्ट दिखलाई देने लगी। शीघ्र ही वह भूमि ज़िम-पर वह इस समय चल रही थी—उसके पैरों को पूर्वचलित भूमि में अपनी भिन्नता स्पष्ट करने लगी! वातावरण में व्याप्त सुगन्ध ने भी इसी ओर संकेत किया। यह कृष्ण-उपत्यका की भारी चीका मिट्टी का प्रदेश था जहाँ कर-सँग्रह करने वाले फाटकों की सड़कों का सम्प्रति प्रवेश न हुआ था इस भारी मिट्टी में अन्धविश्वास भी अधिक से अधिक महत्त्व रखते हैं। किसी समय यहाँ घना जंगल था; इस अँधकार में यह स्थल अपने प्राचीन विशेषताओं को व्यक्त करता-सा प्रतिन हो रहा था। दूर और समीप—सब मिलकर एक हो रहे थे; प्रत्येक वृक्ष तथा झाड़ी आधिक से अधिक व्यापक रूप में दिखलाई देते थे। वे बारहसिंगे, जिनका यहाँ जिकार किया गया था; वे जादूगरनिषा जिन्हें सताकर यहाँ से निकाल दिया गया था तथा वे हरित-वसना

अप्सराएँ जो यहां पहले नृत्य किया करती थीं—इस अँधकार में सभी पुनः प्रकट होते से प्रतीत होते थे। अब तो उन सब का समूह कुछ नटखटेपन पर उतारू समझ पड़ता था।

नटलबरी में टैस ग्राम की सराय के समीप से निकली जिसके विज्ञापक-जिन्ह ने टैस की पग-ध्वनि को कुछ प्रत्युत्तर दिया परन्तु उसे टैस के अतिरिक्त अन्य किसी प्राणी ने न सुना। उसके छप्परों में सोये हुए प्राणियों के थकित हाथ-पांव छोटे-छोटे चौकोर भागों में अँधेरों में पड़े रहने पर भी टैस के मस्तिष्क में घूम गये ! निद्रा देवी उनमें नवजीवन-सँचार कर रही थी ताकि दूसरे दिन वे फिर अधिक श्रम कर सकें। सामने की पहाड़ी पर गुलाबी आमा छाते ही उनका कार्य आरंभ हो जाता।

तीन वजे बह उन घुमावदार रास्तों में होकर अन्तिम गली के मोड़ पर आगई जहां मारतलग्राम प्रारंभ होता था। वह उस खेत में होकर भी निकली जिस में उसने मँडल की महस्या के नाते नृत्य करते समय पहले पहल एजिल क्लेअर को देखा था मगर वह उसके साथ नाचा न था। निराशा का भाव तब से उस में अब तक विद्यमान था। अपनी माँ के घर की दिशा में उस ने कुछ प्रकाश देखा। यह शयन कक्ष की खिडकी से आरहा था जिसके सामने एक झुमती हुई वृक्ष की शाखा उस प्रकाश के साथ लुका-छिपी खेल रही थी। जैसे ही टैस ने अपने घर की रूप-रेखा देखी—टैस की कल्पना पर इसका सम्पूर्ण पुराना प्रभाव छा गया। अब तो उस पर उसी के रुपये से नृत्या छप्पर पड़ गया था। यही घर उसके शरीर और जीवन का एक अंश प्रतीत होता था—इसकी छतों का ढाल, खिडकियों और द्वारों की सजावट,

चिमनी के ऊपरी भाग की टूटी हुई ईंटें—सभी में उसके व्यक्तिगत चरित्र से कुछ न कुछ साम्य था। टैस की समझ में घर के चिर-परिचित वातावरण में कुछ उदासी छा रही थी जिसका कारण उसकी मां की बीमारी थी।

टैस ने द्वार इतने धीमे खोला कि किसी की निद्रा में उसका आगमन से विघ्न न हो। नीचे का कमरा खाली था लेकिन पड़ोसी जा उसकी मा के पास बैठा था—जौने के सिरे पर आया और उसने टैस को सूचना दी श्रीमती दर्बीफील्ड की दशा में कोई घर नहीं है यद्यपि इस समय उन्हें नौद आगई थी। टैस ने कुछ नाश्ता तैयार करके खा लिया और फिर अपनी माता के कक्ष में परिचारि का के स्थान पर जा बैठी।

प्रभात में जब उसने बालकों पर ध्यान दिया, तो वे सब के सब बड़े-बड़े दिखलाई दे रहे थे; यद्यपि टैस को उन्हें छोड़ कर एक वर्ष से कुछ ही अधिक समय हुआ था—परन्तु उनकी वृद्धि आश्चर्यजनक थी। उन बालक-बालिकाओं की आवश्यकताओं को जुटाने की चिन्ताएँ इतनी अधिक थीं कि टैस स्वयं अपनी चिन्ताएँ भूल गई।

उसके पिता की अस्वस्थता उसी अनिश्चित ढंग की थी तथा वह नित्य की भांति अपनी कुर्सी पर बैठे रहते टैस की वापसी के दूसरे दिन अपनी बातचीत में वे विशेष रूप से आकर्शक बन गये थे। उनके पास जीवन-यापन की एक युक्तिपूर्ण योजना थी। टैस ने उनसे पूछा कि वह योजना क्या है।

वे बोले—“मैं, ईंग्लैंड के इस भाग में जितने प्राचीन वस्तु-ओंके संग्रह के शौकीन हूँ, उन सब के पास एक सूचना भेजने की बात

सोच रहा हूँ कि वे सब एक चन्दा एकत्रित कर मेरे जीवन की रक्षा करें। मुझे विश्वास है कि वे इस योजना को कलापूर्ण एवम् उचित समझेंगे। वे लोग पुराने भग्नावशेषों के संरक्षण में बहुत सा धन व्यय करते हैं; वस्तुओं की हड्डियाँ तथा ऐसी ही वस्तुएँ एकत्रित करते हैं; उन लोगों के लिए जीवित अवशिष्टास और भी आकर्षक होना चाहियें। उन्हें केवल पता लगाना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि कोई उनसे जाकर कहें तो कि ऐसा व्यक्ति यहां है और वे कोई उसकी चिन्ता नहीं करते। यदि पुजारी त्रिधम जीवित होते, जिन्होंने इस बात की खोज की थी तो वह अवश्य ही मेरे लिये इतनी कृपा करते। ”

टैस ने इस उच्च योजना पर विचार करना उस समय स्थगित कर दिया क्योंकि उसके सामने कई आवश्यक कार्य एवम् समस्याएँ थीं। उसकी थोड़ी अधिक सहायता से घर की स्थिति पहले से कुछ अच्छी थी। जब घर के अन्दर सब व्यवस्था होगई तो उसने बाहर की समस्याओं को सुलझाना प्रारंभ किया। अब नवीन पौध लगाने तथा बीज बोने का समय था। गांव वालों के बहुत से उद्यान और खेत एक बार जोते जा चुके थे परन्तु दर्वीसील्ड का बाग और खेत पिछड़ा हुआ था। उन खेतों के न जोते-बोए जाने का कारण जान कर वह और भी भयभीत होगई। बीज के लिए जो आलू रखे थे वह परिवार में पहले ही काम आ चुके थे। गरीबी निवारण का परिवार के पास यही अन्तिम साधन था। ज्यों ही टैस ने अवसर पाया, उसने पुनः बीजके लिये सामग्री एकत्रित कर ली। टैस के समझाने-बुझाने से कुछ ही दिनों में उसके पिताजी का स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया कि वे उद्यान की देख-भाल कर सकें। गांव के बाहर लगभग सौ गज दूर

उन लोगों ने कुछ भूमि उगाई पर ली थी। टैस स्वयं उसकी देखभाल करने लगी।

रोगी के कक्ष में देर तक बैठे रहने के पश्चात् टैस खेत में काम करने में सुख अनुभव करती थी। माता का स्वास्थ्य कुछ ठीक होजाने के कारण टैस को अब वहां अधिक न बैठना पड़ता था। तीव्र गति से काम करते समय उसकी विचार-धारा शान्त होजाती थी। खेत एक एक ऊँचे, शुष्क व खुले बाड़े में था। उसमें चालीस या पचास ऐंसे ही भाग थे। इन दिनों मजदूरी देकर श्रमिकों को रखना कठिन था। प्रत्येक कार्य स्वयं करना पड़ता था। दिन भर काम करके जब मजदूरी पानेवाले श्रमिक चले जाते थे—तब वहां अपने-अपने खेतों पर कृषक और भी अधिक श्रम करते थे। खेत में खुदाई का कार्य प्रभात के छः बजे प्रारंभ होता था तथा अनिश्चित रीति से कभी गोधूलिबेला तक तथा कभी चन्द्रोदय के उपरान्त चांदनी में भी चलता रहता था। इस समय घास-पात और कड़ा-करकट के ढेर बहुत से भागों में जलाये जा रहे थे। मौसम की शुष्कता उनके जलने में सहायक थी।

एक सुन्दर दिवस टैस और लिजाल्ट अपने पड़ोसियों के साथ यही काम कर रही थीं। सूर्य की अन्तिम किरणों खेतों की सीमाएँ, विभाजित करने वाली झाड़ियों पर चौड़ी-चौड़ी गिरने लगीं। ज्योंही सूर्यास्त्र के पश्चात् प्रकाश धुँधला पड़ा त्योंही घास-पात को जलानेवाली आगों ने वहां अपना प्रकाश फैला दिया। अब उन खेतों की सीमाएँ कभी धुएँ में डूब जाती थीं तथा कभी हवा द्वारा धुएँ के हट जाने से दिखलाई देती थीं। जब कोई आग सुलगती, तो धुएँ का अँबार भूमि की सतह पर ही फैल जाता था तथा विभिन्न आगों के मध्य में स्थित

होने के कारण उस पर भी कृछ चमक छा जाती थी। श्रमिकों को एक दूसरे से छिपाने में यही धुआं पर्दे का काम देता था। इस समय समझ में आजाता था कि 'मेघस्तम्भ' कैसा होता है जो दिन में एक दीवार समझ पड़ता है तथा रात्रि में वही प्रकाशमय हो जाता है।

ज्यों-ज्यों संध्या का अँधकार घना होता गया उद्यान में काम करने वाले कुछ स्त्री-पुरुष अपना कार्य समाप्त कर रात्रि में विश्राम के लिए चल दिए। परन्तु उनमें से अधिकांश पौध लगाने का कार्य समाप्त करने के लिए ठहरे रहे। ठैस भी वहाँ ठहरनेवालों में थी यद्यपि उसने अपनी बहिन को घर भेज दिया था। वह भी एक ऐसे स्त्रैंड में काम कर रही थी जहाँ घास-फूस जल रहा था; उसके यंत्र पत्थरों में अटक कर आवाज उत्पन्न करते थे। कभी-कभी वह अपनी आग के धुएँ में पूर्णतया डूब जाती थी और कभी-कभी उसी आग की चमक में उसका शरीर और भी चमत्कृत बन कर दिखलाई देता था। रात्रि में वह विचित्र कपड़े पहने थी—तथा देखने में और भी विचित्र समझ पड़ती थी। वह एक ऐसी गाउन पहने थी जिसके रंग बार-बार धुमने के कारण उड़ गए थे। इसके ऊपर एक छोटी काली जाकिट थी। सब मिला कर यह समझ पड़ता था कि वह किसी विवाह संस्कार तथा मृतक-संस्कार दोनों में एक साथ ही अतिथि बन कर जारही है। दूर पर जो अन्य महिलाएँ काम कर रही थीं वे श्वेत अँगारखे जैसे वस्त्र पहने थीं; अंधेरे में उनके पीताननों के अतिरिक्त केवल यह वस्त्र ही दिखलाई देते थे। कभी-कभी आग की लपटों से कोई विशेष चमक किसी पर पड़ जाती थी।

पश्चिम की ओर नग्न कटीली झाड़ियों की तारों जैसी शाखाएँ जो उस खेत की सीमा निर्धारित करती थीं, वह इस नीचे आकाश की पीली चमक में स्पष्ट दिखलाई देती थीं। उपर शुक्र का तारा पूर्ण-विकसित पुष्प की भांति इतना चमक रहा था कि उसके कारण परछाई उत्पन्न हो जाती थी। दूरे-स्थलों पर कुछ अज्ञात-नाम तारे प्रकट हो रहे थे। कुछ दूरी पर एक कुत्ता भूंक रहा था तथा शुष्क सड़क पर कभी-कभी पहियों की खड़ खड़ाहट सुनाई दे जाती थी।

अब भी यंत्रों की ध्वनि श्रमपूर्वक गूँजती रही—क्योंकि अभी बहुत देर नहीं हुई थी; और यद्यपि वायु तीव्र तथा शीतल थी फिर भी उसमें वसन्त का सन्देश था जो श्रमिकों को प्रसन्नतापूर्वक काम में लगाये था। उस स्थान का कुछ आकर्षण, वह समय, आगों का जलना, प्रकाश और छाया द्वारा उमन्न विचित्र दृश्य टैस तथा अन्य श्रमिकों को वहाँ रहने में आनन्द दे रहे थे। रात्रि का आगमन जो शीत के पाले में शत्रु बन जाता है तथा ग्रीष्म की उष्णता में प्रेमी बन जाता है—आज मार्च में शान्तिदायक बन रहा था।

कोई भी श्रमिक अपने साथियों की ओर न देखता था। सभी की दृष्टि मूमि पर लगी थी। आग के प्रकाश में कैसी भूमि सँभल रही थी—इसी ओर सब का ध्यान था। यही कारण था कि टैस जब कूँड सँभाल रही थी तथा बीच-बीच में अपने छोटे-छोटे ऊटपटांग गायन गाती जाती थी—बिना इस आशा के क्लैर कभी भी उनको सुनगा, तो उसने बहुत देर तक उस व्यक्ति को न देख पाया जो उसके सब से निकट काम कर रहा था। वह एक लंबा वस्त्र पहने था जैसा कोई भी श्रमिक पहनता है। टैस ने यह तो देख लिया था कि वह उसी खेत में

काम कर रहा है जिस में वह स्वयं व्यस्त थी। उसने सोच लिया था कि उस व्यक्ति को उसके पिता ने भेजा होगा ताकि उसका कार्य शीघ्र ही समाप्त हो सके। उसकी उपस्थिति का टैस को और भी अधिक अनुभव होने लगा क्योंकि खोदते-खोदते वह टैस के और भी समीप आना जा रहा था। कभी-कभी धुआं उन दोनों को पृथक कर देता था; तब वह धुआं घूम कर हट जाता था तथा वे दोनों अन्य लोगों से पृथक रह कर एक दुसरे को देख सकते थे।

टैस अपने सहयोगी से कुछ न बोली और न उसने ही कुछ टैस से कहा। न उसके मन में इस व्यक्ति के सम्बन्ध में कोई अन्य विचार ही उत्पन्न हुआ। वह यह तो सोचती थी कि यह व्यक्ति मारलत का कोई श्रमिक भी न प्रतीत होता था परन्तु इस सम्बन्ध में उसे कोई कौतूहल न था क्योंकि बहुत दिनों से वह मारलत से बहुधा दीर्घ काल तक बाहर ही रही थी। धीरे-धीरे वह व्यक्ति टैस के इतने समीप आगया कि आग का जिन लपटों का प्रतिबिम्ब टैस के स्पाती यंत्र पर पड़ता था—इन्हीं का उस व्यक्ति के मंत्रों को चमकाया था। जब बुझती हुई आग पर घास-पात डालने को गई तो उसने देखा कि वह व्यक्ति भी दूसरी ओर से वही कार्य कर रहा है। आग प्रज्वलित होगई और टैस ने दरबरविल का आनन देखा।

उसकी उपस्थिति की यहां कोई आशा न थी। इन वस्त्रों में जिन्हें अब केवल वय प्राप्त श्रमिक ही पहना करते थे वह कुछ अजीब दिखलाई दे रहा था। टैस उसे देखकर चित्रवत जहां की तहां खड़ी रह गई। दरबरविल देरकर धीमी हंसी हंसता रहा।

“ यदि मेरा मन कुछ उपहास की ओर हो, तो मैं कहूंगा कि यह स्थिति कैसी स्वर्ग के समान है। ” उसने मनमाने ढंग से कहा

तथा शिर झुका कर उस की ओर देखने लगा ।

“ तुम क्या कह रहे हो ? ” उसने क्षीण स्वर में पूछा ।

“ कोई भी दाउ-प्रिय व्यक्ति यही कहेगा कि यह आनन्द स्वर्ग जैसा है । ओप यहां आदि नारी हैं और मैं यहां उसी युग का दूसरा व्यक्ति हूं जो तुम्हें बहकाने को इस वेश में आया हूं । जब मैं धर्म-प्रचारक था, तो मुझे मिल्टन की वह रचना भली भांति स्मरण थी ; उसकी कुछ पंक्तियां यह हैं—

“ हृदयेश्वरी—मार्ग प्रस्तुत है और नहीं विस्तृत है,
तरु-समूह के है उस ओर.....

.....यदि तुम स्वीकृति अपनी दे दो
मेरे मार्ग-प्रदर्शन से तुम शीघ्र वहां पहुंचोगी । ”

“ चलो, ले चलो मुझको ” बोली ईव ”

कविता इसी प्रकार है । मेरी प्रिय—प्रिय टैस ! मैं इस कविता को इसी लिए पढ़ रहा हूं ताकि तुम जान सको कि मेरे प्रश्न के उत्तर में तुम क्या उत्तर दे सकती थी ; परन्तु जहां तक मुझ से इसका संबंध है ; तुमने यदि यह उत्तर दिया भी होता, तो वह पूर्णतया असत्य होता क्योंकि मेरे विषय में तुम्हारे विचार सर्वथा दूसरे ही प्रकार के हैं । ”

“ मैं न तुम से कभी भी शैतान नहीं कहा और न कभी यह सांचा ही है कि तुम शैतान हो । तुम्हारे विषय में मैं सदैव ही उदासीन रहती हूं । सिवा उन अबसरो के जब तुम मेरा निरादर करते हो, मैं कभी भी तुम्हारे विरुद्ध कुछ भी नहीं सोचती । यह क्या ? क्या तुम मेरे ही कारण यहां खेत खोदने चले आये ? ”

“ केवल तुम्हारे ही लिये । केवल तुम्हें देखने को ; और कोई बात नहीं । यह वस्त्र जो मैं पहने हुए हूँ वह तो बाद का विचार था । मार्ग में वह विक्रेते के लिए रखा मिल गया और मैं ने इस विचार से कि इसे पहन कर मैं बिना देखा हुआ रह सकता हूँ—मैं ने इसे ले लिया । मैं तुम्हारे इस प्रकार काम करने का विरोध करने को आया हूँ । ”

“ लेकिन मुझे यह काम करना रुचिकर है । यह मेरे पिताजी की सेवा है । ”

“ क्या तुम्हारा कार्य दूसरी जगह समाप्त हो गया ? ”

“ हां । ”

“ अब आगे का क्या कार्यक्रम है ? क्या तुम अपने प्रिय पति के समीप जा रही हो ? ”

यह अपमान जनक टिप्पणी उसे सख्त न हुई । उसने कुछ उद्विग्न होकर कहा—“ मैं नहीं जानती । मेरा कोई पति नहीं है । ”

“ जिस प्रयोजन से तुम यह बात कह रही हो, वह बिल्कुल सत्य है । परन्तु तुम्हारा एक मित्र भी है और मैं ने निश्चय किया है कि तुम चाहे जो कुछ करो, मैं तुम्हें आराम पहुँचाऊँगा । जब तुम अपने घर पहुँचोगी तो देखोगी कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या-क्या भेजा है । ”

“ अरे ऐलैक ! मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे कुछ भी न दिया करो । मैं तुम से कुछ भी ले ही नहीं सकती । मैं इसे पसन्द नहीं करती—यह उचित नहीं है । ”

“ यह उचित है । ” वह कुछ जोर देकर बोला । “ मैं एक ऐसी महिला को, जिसे मैं इतना प्रेम करता हूँ—जितना मैं तुमसे

करता हूँ—दुःख में नहीं देख सकता—और उसे दुःख में देखकर उसकी सहायता किए बिना नहीं रह सकता ।

“ लेकिन मैं तो अच्छी दशा में हूँ । मुझे तो कोई दुःख नहीं है । कम से कम जीविका के विषय में तो कोई कष्ट नहीं । ”

टैस ने मुँह फेर लिया तथा भूमि खोदने में लग गई । उसके आंसू कुटाली की मूठ पर तथा निचे कूंडों में गिरने लगे ।

“ और उन बालकों को—तुम्हारे भाई तथा बहनें । ”
उमने बात पुनः प्रारंभ की । “ मैं उनके सम्बन्ध में सोचता रहता हूँ । ”

टैस का हृदय कांप उठा । वह एक अत्यन्त कोमल तन्तु का स्पर्श कर रहा था । उसने टैस की मुख्य चिन्ता समझ ली थी । घर लौट कर टैस की आत्मा इन बालकों में जिस प्रेम में संलग्न थी उसे उग्र ही कहा जायगा ।

“ यदि तुम्हारी माता का स्वास्थ्य ठीक नहीं होता तो किसी न किसी को उनकी चिन्ता करनी ही होगी; और चूंकि तुम्हारे पिताजी अब कुछ विशेष कार्य न कर सकेंगे इसलिये मैं सोचता हूँ कि—”

“ वह मेरी सहायता से कर सकेंगे । उन्हें करना ही होगा । ”

“ और मेरी सहायता से भी । ”

“ नहीं, श्रीमान । ”

“ यह भी कैसी व्यर्थ की मूर्खता है । ” दरबाविल ने आवेश में आकर कहा । “ क्यों—वह सोचते हैं कि हम लोग एक ही परिके हैं—और मेरे इस कार्य से उन्हें पूर्ण संतोष होगा । ”

“ वह अब ऐसा नहीं समझते । मैं ने उनका भ्रम दूर कर दिया है । ”

“ इस से भी बढ़कर तुम्हारी और क्या मूर्खता होगी ? ”

क्रोध में आकर दरबारविल टैस के समीप से दूर झाड़ी के पाम चला आया । यहां उसने अपना लम्बा ऊपरी वस्त्र उतार लिया जिसमें वह अपना वेश छिपाए था । उसे लपेट कर उसने समीप की आग में डाल दिया—तथा वह वहां से चला गया ।

इसके पश्चात् टैस का भी खुदाई में मन न लगा । वह व्यग्र हो उठी । वह सोच रही थी कि कहीं वह पिताजी के पास न गया हो ; उसने कुदाली उठाई तथा अपने घर की ओर चल दी ।

घर से बीस गज की दूरी पर उसे एक अपनी बहिन मिली ।

“ अरे टैसी ! तुम क्या सोच रही हो । लिजालू रो रही है और घर में बहुत लोग जमा हो गये हैं । माताजी तो बहुत अच्छी हो गई हैं परन्तु उन लोगों का विचार है कि पिताजी की मृत्यु होगई है । ”

वह वालिका अपने समाचार की नवीनता पर मुग्ध थी ; उसकी समझ में इस समाचार से उत्पन्न होने वाले सँकटों की बात न आ सकती थी । वह टैस की ओर अपनी गोल-गोल आंखों से निहारती रही । उसके पश्चात् टैस पर जो इस समाचार का प्रभाव पड़ा था, उसे देख कर वह बोली—

“ टैस ! क्या हम लोग सब पिताजी से कभी भी बातचीत न कर सकेंगे ? ”

“ परन्तु पिताजी थोड़े ही अस्वस्थ थे । ” टैस ने चिन्ता रहित पूछा ।

लिजालू उधर आगई।

“ उनकी अभी ही मृत्यु होगई। डाक्टर साहब जो माताजी की देखने आए थे, उनका कहना है कि अब उन के बचने की कोई आशा नहीं क्योंकि उनका हृदय अन्दर की ओर बढ़ गया है। ”

हां। दर्बीफील्ड दम्पति ने स्थान बदल लिये थे; जो मरणा-सन्न थी वह अब निरापद बन गई थी तथा जो थोड़े अस्वस्थ थे उनकी मृत्यु हो गई थी। इस समाचार का आशय और भी भयानक था; सुनने में वह जितना दुःखमय था, उसका प्रभाव उससे भी अधिक दुःखमय था। उसके पिता के जीवन का मूल्य उसकी व्यक्तिगत सफलताओं के अतिरिक्त भी कुछ था। अन्यथा उसकी इतनी चिन्ता न होती। यह जीवन उन तीन जीवनों में से एक था जिसके लिये वह मकान तथा कुछ जमीन का पट्टा लिखा हुआ था। जिस कृषक ने यह जमीन दे रखी थी वह बहुत दिनों से इसकी प्राप्ति के लिये उत्सुक था। वह चाहता था कि इसे अपने श्रमिकों का दे सके जो किसी झोपड़ी में कष्टमय जीवन व्यतीत करते थे। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के पट्टे पर भूमि देने का रिवाज भी अब उठता जा रहा था तथा जो पट्टा समाप्त हो जाता उसे दुबारा न लिखा जाता था।

इस प्रकार दर्बीफील्ड वश, जो पहले दरखरविल था, अब देख रहा था कि उस पर क्या-क्या विपत्ति आने वाली है। इस में सन्देह नहीं कि जब वे उस प्रदेश के स्वामी थे तो उन्होंने भी बहुत से परि-चारों को इसी विपत्ति में डाला था। उन्होंने ऐसी ही स्थिति में लोगों को भूमि से पृथक कर दिया था। इस आकाश के नीचे प्रत्येक क्षेत्र में जैसे को तैसा का चक्र चलता ही रहता है।

अन्त में पुराने 'वर्मा-दिवस' के पूर्व की संध्या भी आ पहुँची। तथा कृपक-पसार में आज के दिन जो गति देखी जा रही थी वह वर्ष में केवल इसी दिन देखने को मिलती है। यही दिवस प्रतिज्ञा-पूर्ति का माना जाता है। इस वर्ष के लिये खेतों पर स्फुट कार्य करने की जो प्रतिज्ञाएँ पहले त्यौहार के दिन कली जाती हैं, आज उनकी पूर्ति होती है। श्रमिक जो पुराने स्थानों पर नहीं रहना चाहते वे नए खेतों पर चले जाते हैं।

खेतों पर यह वार्षिक स्थान-परिवर्तन दिनों दिन बढ़ता ही जाता था। जिन दिनों टैम की माँ एक बालिका थी, उन दिनों मार-लत के आसपास खेतों में काम करने वाले श्रमिक बहुधा एक ही खेत पर अपनी समस्त आयु व्यतीत कर देते थे; यही उनके पिताओं और पितामहों का भी निवास-स्थान रहता था। परन्तु बाद में स्थान-परिवर्तन की भावना दिनों दिन बहुत बढ़ती गई। नवीन परिवारों में इस क्रिया के लिये बहुत उत्साह देखा जाता था; संभव है कि इसमें उनका कुछ लाभ होता हो। जहाँ एक परिवार इस वर्ष अपने कां बहुत दुःखी समझता था, वही स्थान किसी अन्य परिवार के लिये आशा का केन्द्र बन जाता। दूर से वे इस ओर आकर्षित होते परन्तु वर्ष भर कार्य कर लेने पर उनके लिये भी यहाँ कोई आकर्षण न रहता। परिणाम स्वरूप वे सभी प्रतिवर्ष स्थान-परिवर्तन करते रहते।

फिर भी ग्रामीण जीवनमें जो प्राचीन प्रथाओं का लोप होना देखा जा रहा था वह पूर्णतया कृपक-समाज की अशान्ति के कारण ही न था। ग्रामों की जन-संख्या भी कम होती जा रही थी। गाँवों में खेतों

पर काम करने वाले श्रमिकों के अतिरिक्त अन्य श्रेणियों के कुछ अधिक योग्य व्यक्ति भी रहते थे जिनका सम्मान स्पष्ट ही किसान से अधिक था। टैस के माता-पिता भी इसी श्रेणी में थे। इसी में बढई, लुहार: मोची, घसियार तथा इसी प्रकार भांति-भांति के नामधारी श्रमिक भी सम्मिलित थे, जो खेतों पर काम करने वाले श्रमिकों से भिन्न समझ जाते थे। यह लोग ग्रामीण-जीवन में कुछ स्थायित्व लिए हुए थे क्यों कि या तो टैस के पिता की भांति जीवन भर का पट्टा किए हुए थे— या वे निर्मित कर देनेवाले थे या उन्हें कुछ भूमि मुआफी में मिली हुई थी। परन्तु जब किसी भूमि का पट्टा समाप्त हो जाता, तो वह उसी प्रकार उन्हीं शक्तों पर किन्हीं अन्य कृषकों को न दी जाती। यदि ऐसी भूमि के स्वामी किसान को इन स्थानों की अपने श्रमिकों के निवास के लिये आवश्यकता न होती, तो वह इस प्रकार के स्थानों की झोंपडियां गिरवा कर उसे खेत में बदल डालता था। ग्रामीण-घरों के निवासी, जो किसी खेत पर काम न करते थे, उन्हें आदर न दिया जाता था अतएव धीरे-धीरे वे लोग गांव छोड़कर चले जाते थे। इन के चले जानेपर कुछ ऐसे व्यवसायी थे जिनके लिये काम न रहता। अतएव विवश होकर वे भी गांव छोड़ जाते थे। यही परिवार, जो अतीत में ग्राम्य-जीवन का आधार थे, जिनमें गांवों की प्राचीन मर्यादा सुरक्षित थी, उन्हें किसी अन्य बड़े केन्द्रीय-स्थान में जाना पड़ता था। आंकड़े एकत्रित करनेवाले जिस क्रिया को मनमाने ढंग से 'ग्रामीण जनता की बड़े नगरों में बसने की रुचि' का नाम देते हैं वह वास्तव में उसी प्रकार की क्रिया थी जैसी कि किसी यंत्र द्वारा विवश किए जाने पर जल की गति किसी पहाड़ी पर ऊपर की ओर जाने में देखी जाती है।

मारलन की झोंपडियां इसी प्रकार पर्याप्त संख्या में गिराई जा चुकी थीं तथा अब कहीं कोई खाली झोंपडी दिखलाई न देती थी। जो मकान अवशिष्ट थे, उन्हें भी भू-स्वामी अपने श्रमिकों के निवास के लिये खाली कराना चाहते थे। जिस घटना ने टैस के जीवन की चमक को धुन्दला बना दिया था, उसके पश्चात् से यह मान लिया गया था कि ज्योंही इन लोगों का पट्टा समाप्त हो, इन्हें गांव छोड़कर चला जाना होगा। दर्बीफील्ड वंश का पुरातन यश गांववालों को स्वीकार न था। टैस की उस घटना के पश्चात् तो लोग धर्म के नाम पर भी इस परिवार का गांव से चला जाना आवश्यक मानते थे। यह तो वास्तव में सच था कि इस परिवार में न तो मादक-द्रव्य-निषेध का ही कोई महत्त्व था—न कुछ गंभीरता ही थी और न धार्मिक पवित्रता के लिये ही वह विख्यात था। टैस के पिताजी तो मदिरा पीते ही थे—कभी कभी माता भी बेहद् पी लेती थीं। उनके छोटे बालक कभी कभी गिरजाघर जाते थे तथा बड़ी लड़की ने अजीब-अजीब प्रेम-सम्बन्ध किये थे। किसी प्रकार गांव को तो पवित्र ही रखना पड़ेगा। इन्हों कारणों से टैस के पिता की मृत्यु के बाद महले ही 'पहिला-दिवस' को दर्बीफील्ड परिवार के गांव छोड़ने का अवसर आ गया। मकान में जगह काफी थी तथा उसकी किसी गाड़ीवान को आवश्यकता थी क्यों कि उसका परिवार बड़ा था। तथा विधवा जोन, उसकी लड़कियां टैस और लिजालू—बालक अब्राहम तथा अन्य छोटे बालकों का किसी अन्य स्थान में जाना आवश्यक था।

उनके गमन से पूर्व संध्या-वेला में अन्धकार समय से पूर्व ही व्याप्त हो गया था क्योंकि कुछ बूँदा-बाँदी हो रही थी जिसने आकाश

को धूमिल बना दिया था। उन लोगों के लिये इस गांव में यह अन्तिम रात थी। यहीं उनका जन्म हुआ था तथा यहीं उनका घर था परन्तु अब उन्हें यहां न आना था। इसी विचार से श्रीमती दर्वी-सील्ड; लिजाटू और अब्राहम अपने कुछ मित्रों से मिलकर विदा मांगने गांव में चले गये थे। टैम उनके आगमन की प्रतीक्षा में अकेली घर रखा रही थी।

वह खिडकी के समीप की बेंचपर घुटने टेक कर अपना आनन खिडकी के शीशे पर आधारित किए ध्यान-निमग्न बैठी थी। शीशे के बाहरी भाग पर वर्षा का जल धीरे-धीरे संकलित हो-होकर प्रवाहित हो रहा था परन्तु टैस का ध्यान इस समय एक मकड़ी के जाले पर था जिसकी मकड़ी संभवतः बहुत पहले ही भूखी मर चुकी थी क्योंकि भूल से उसने अपना जाला ऐसी जगह लगाया था जहां कोई मक्खी न आती थी तथा खिडकी से आनेवाली ठंडी हवा उस जाले को अब केवल थोड़ा हिला देती थी, जिसमें वह अपने बुरे प्रभाव को प्रत्यक्ष देख रही थी। यदि वह लौटकर यहां न आई होती, तो बहुत संभव था कि उसकी माता तथा भाई बहनों को वहां प्रति सप्ताह किराया देने की शर्त पर रहने की अनुमति मिल जाती। परन्तु ज्यों ही टैस लौटकर गांव में आई, त्योंही गांव के कई सच्चरित्र एवम् प्रभावशाली व्यक्तियों ने उसे देख लिया। उन्होंने उसे चर्च की कब्रों में धूमते देखा था तथा एक बालक की लुप्तप्रायः कब्र को एक छोटी कब्री से संभालते हुए देखा था। इन्हीं कारणों से वे जान गये कि टैस वहां रहती है। उसकी मां को उसे पुनः बसा लेने के कारण गालियां मिलने लगीं जिनका उत्तर जोन भी बड़ी उग्रता से देती थी। वह सदैव ही

गांव छोड़ने को उद्यत रहती। दूसरे लोगों ने उसकी इस बात को बहुत महत्त्व दिया तथा सब का परिणाम यही निकला।

“ मुझे घर न आना चाहिये था ” टैस ने कुल आवेश के साथ अपने मन में कहा।

अपने इन विचारों में वह ऐसी लीन थी कि उसने उस व्यक्ति को देख ही न पाया जो नीचे सड़क पर उसी के सामने श्वेत वस्त्र पहने घोड़े पर बैठा चला आ रहा था। कदाचित् टैस का आनन शीश के इतने समीप होने के कारण ही उसने टैस को इतनी शीघ्रता से देख लिया तथा वह अपना घोड़ा घर के इतने निकट ले आया कि उसके घोड़े के मुँह उन पौधों पर ही पड़ रहे थे जो दीवार के नीचे लगाए गए थे। जब उसने अपनी अश्वारोही की मुद्रा में उस खिड़की का स्पर्श किया; तब टैस ने उसे देखा। पानी वरमना लगभग बन्द था इसलिए उसका संकेत पाकर टैस ने खिड़की खोल दी।

“ क्या तुमने मुझे देखा नहीं ? ” दरबरविल ने पूछा।

“ मेरा उधर ध्यान न था। ” वह बोली “ मुझे ऐसा विश्वास होता है कि मैं ने तुम्हारी आदृष्टि तो सुनी थी परन्तु मैं सोच रही थी कि कोई बगर्ची—कई घोड़ों की जा रही है। मैं कुछ स्वप्न सा देख रही थी। ”

“ अरे हाँ ! कदाचित् तुमने दरबरविल की बगर्ची के सम्बन्ध में कुछ सुना होगा। मैं समझता हूँ कि तुम्हें वह कथा ज्ञात है। ”

“ नहीं—मेरे—कोई मुझसे एक बार यह कहानी कहने जा रहे थे परन्तु उन्होंने कहा नहीं। ”

“ यदि तुम वास्तव में दरबरविल वंश की हो, तो मैं समझता हूँ कि मुझे भी यह कहानी तुम से न कहनी चाहिये ! जहां तक मुझ से इस का सम्बन्ध है—मेरे लिये इसका कुछ भी असर नहीं क्यों कि मैं तो बनावटी दरबरविल हूँ। वह कहानी है भयानक। यह कहा जाता है कि उस बग्घी का शब्द, जिसका अब कोई अस्तित्व नहीं है, केवल दरबरविल वंश के लोगों द्वारा ही सुना जाना है और जो कोई इसे सुन लेता है, उसके लिये यह अपशकुन माना जाता है। इस का सम्बन्ध किसी हत्या से है जो कई शताब्दी पूर्व इस परिवार द्वारा की गई थी। ”

“ अब चूँकि आपने यह कथा प्रारंभ कर दी है, इस लिये इसे समाप्त भी कर दीजिये।

“ बहुत अच्छा। परिवार के एक सदस्य ने किसी सुन्दरी को भगाया था; वह उसके साथ एक बग्घी में जा रहा था; मार्ग में उस सुन्दरी ने भागने का प्रयत्न किया; इस पर झगडा हुआ जिसमें उसने उस सुन्दरी की हत्या कर दी—सुन्दरी की हत्या हुई अथवा सुन्दरी ने उस व्यक्ति को मार डाला, यह मुझे ठीक स्मरण नहीं है। एक तो कहानी इस प्रकार कही जाती है। मैं देखता हूँ कि तुम्हारा सब सामान बैधा पडा है। क्या कहीं जारही हो? क्या सब लोग जारहे हैं? ”

“ हां, कल ही—कल ही तो ‘पुरातन महिला-दिवस’ है। ”

“ मैं ने भी सुना तो था कि तुम जारही हो परन्तु इस पर विश्वास नहीं हुआ। यह तो बिल्कुल अचानक तै किया गया है। इसका कारण क्या है? ”

“ इस भूमि पर पिताजी का अन्तिम अधिकार था और उनका मृत्यु के पश्चात हमें यहां रहने का कोई अधिकार नहीं। कदाचित्त हम

यहां साप्ताहिक किरायेदारों की भांति रह सके होते परन्तु मेरे कारण यह एमस्त कठिनाई है । ”

“ तुम्हारे कारण क्या है ? ”

“ मैं एक साध्वी महिला नहीं हूँ । ”

दग्बरविल का आनन लज्जा से लाल होगया ।

“ कैसी लज्जाजनक बात है । कैसे बदमाश लीग हैं । इन की गन्दी आत्माएँ नर्क में जलेंगी । ” इन शब्दों द्वारा उसने अपना विरोध प्रकट किया । “ इसी कारण तुम जारही हो—क्यों ? यहां से निकाली जा रही हो ? ”

“ एक साथ यह कहना तो ठीक नहीं कि हम लोग निकाले जा रहे हैं ; लेकिन वे लोग कहते थे कि हमें शीघ्र ही यहां से जाना पड़ेगा ; इस कारण हमें इसी समय का जाना सर्वश्रेष्ठ जँचा । इस समय सभी लीग जा रहे हैं क्योंकि कोई भी नया कार्य आरंभ करने का यद्दी समय है । ”

“ आप लोग कहां जा रहे हैं । ”

“ राजावाडी में । वहां हम लोगों ने कमरे किराये पर ल सिये हैं । माताजी अपने पिताजी के वंश के सम्बन्ध में इतनी उत्सुक हैं कि वे वहाँ जाना चाहती हैं । ”

“ लेकिन तुम्हारी माता का परिवार जहां रहता हैं, वह निवास योग्य नहीं है ; उस छोटेसे नगर में वह छोटा छिद्र जैसा घर है । अरे तुम हमारे त्रैन्त्रिज के उद्यान-भवन में क्यों नहीं आ जातीं । मेरी माता की मृत्यु के पश्चात् अब उसमें एक भी पक्षी नहीं है ; परन्तु वह मकान अब भी वैसा ही है जैसा तुम जानती है और बाग है । एक दिन में

मैं उसमें सफेदी करा दूँगा और वहाँ तुम्हारी माताजी पूर्ण आराम में रह सकती हैं। बालकों को मैं किसी अच्छी पाठशाला में भर्ती करा दूँगा। वास्तव में मुझे तुम्हारे लिये कुछ करना चाहिये। ”

“ लेकिन हम लोग तो अनेक लिए राजाबाड़ी में कमरे किराये पर ले चुके हैं, ” टैसने उत्तर दिया। “ और हम वहाँ प्रतीक्षा करेंगे। ”

“ प्रतीक्षा ! किसकी प्रतीक्षा ? उस सुन्दर पति की ? निस्संदेह तुम उसकी प्रतीक्षा कर सकती हो। लेकिन टैस जरा सोचो। मैं जानता हूँ कि मानव-स्वभाव क्या है। जब मैं उन कारणों पर ध्यान देता हूँ जिनके द्वारा तुम्हारा वियोग हुआ है, तो मुझे विश्वास हो जाता है कि तुम्हारा यह झगडा कभी मिटने वाला नहीं है। अब यह ध्यान में रखो कि यद्यपि मैं तुम्हारा शत्रु रह चुका हूँ परन्तु अब मैं तुम्हारा मित्र हूँ चाहें तुम इस पर विश्वास भले ही न करो। मेरी इस कुटिया में चलो। हम अब पुनः पखेरू एकत्रित कर लेंगे और तुम्हारी माता भली भाँति उनकी देखरेख कर सकेंगी ; बालक पाठशाला में पढ़ने जा सकेंगे। ”

टैस की श्वास फूलने लगी। अन्त में उसने कहा—

“ यह मैं कैसे जानूँ कि तुम यह सब कार्य करोगे ही। तुम्हारे विचार बदल सकते हैं—और तब—हम लोग—मेरी माता पुनः बेघरबार हो जायगी। ”

“ अरे नहीं—नहीं। मैं इस बात की यदि आवश्यकता होगी लिखा-पढ़ी कर दूँगा। इस पर पुनः विचार करो। ”

टैस ने शिर हिला दिया। परन्तु दरबरविल फिर भी प्रयास करता रहा। टैस ने उसको कभी भी इतना दृढ़ न देखा था। इस सम्बन्ध में वह टैस की ‘नहीं’ को मानने वाला न था।

उसने जोर देकर कहा—“ कृपया अपनी माताजी से कहिये । इसका निर्णय करना उसका कार्य है; तुम्हारा नहीं । मैं घर को साफ करवा दूंगा तथा कल प्रभात तक उस में सफेदी हो जायगी तथा बाद में उसमें आग जलवाऊंगा । सञ्ज्या तक वह पूर्णतया शुद्ध हो जायगा । आप सब लोग सीधे वहीं आ सकते हैं । अब यह ध्यान रहें कि मैं तुम्हारी वहाँ प्रतीक्षा करूंगा । ”

टैस ने पुनः अपना शिर हिला दिया । उसका गला इस विचित्र अनुभूति से भर आया । वह दरब-खिल की ओर देख भी न सकी ।

“ तुम जानती हो कि अतीत के अपराध के कारण मैं तुम्हारा ऋणी हूँ ” उसने फिर कहा । “ और तुमने मेरा उम पागलपन का उपचार भी किया है । इस लिये मुझे प्रसन्नता है कि—”

“ मैं चाहती हूँ कि तुम में वह धार्मिकता बनी रहती ताकि जो प्रचार-कार्य तुम कर रहे थे वह चलता रहता । ”

“ तुम्हारा यह थोड़ा सा उपकार करने का भी यदि मुझे अवसर मिल सके, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी । कल मैं तुम्हारी माता के सामान के उतारे जाने का शब्द सुनने की प्रतीक्षा में रहूंगा । प्रिय सुन्दरी टैस ! इस की स्वीकृति अपना हाथ इधर बढ़ा कर दे दो । ”

अन्तिम वाक्य कहते-कहते उसने अपना स्वर बहुत धीमा कर दिया था तथा अपना हाथ उस अधखुली खिडकी में रख दिया था । टैस ने रोपभरी आँखों से यह देख कर तुरन्त ही खिडकी बन्द कर ली और ऐसा करने में उसकी बांह पत्थर और खिडकी के बीच में फँस गई ।

“ मार डाला । तुम बहुत निष्ठुर हो । ” यह कहते-कहते उस ने अपना बांह बाहर निकाल ली । “ नहीं—नहीं—मैं जानता हूँ कि तुमने जान-बूझ कर मेरी बांह को पीडा नहीं पहुँचाई है । अच्छा—मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा । कम से कम अपनी माताजी तथा बालकों को तो भेज ही देना । ”

“ मैं नहीं आऊँगी—मेरे पास बहुत धन है । ” वह उच्च स्वर में बोली ।

“ कहाँ । ”

“ मेरे श्वसुरजी के यहां—यदि मैं मांगू तो—”

“ अगर तुम मांगो तो । लेकिन टैस—तुम मांगोगी नहीं । मैं तुम्हें जानता हूँ । तुम कभी भी उसे न मांगोगी, मांगने की अपेक्षा तुम भूका रहना अधिक पसन्द करोगी । ”

यह कहकर वह घोड़े पर बैठा हुआ ही अपने मार्ग पर चला गया । सड़क के कोने पर उसकी भेंट उस रंगीन अक्षर लिखनेवाले से हुई जिसने उस से पूछा कि क्या उसने अपने धार्मिक भाईयों का साथ छोड़ दिया है ।

“ तुम लॉग भाड में जाओ । ” दरबारविल ने उसे उत्तर दिया ।

टैस जहाँ थी वहीं देर तक बैठी रही । यकायक उसके चित्त में अन्याय की विद्रोही भावना उत्पन्न हुई । उसकी आँखें नयं गरम आँसुओं से भर गईं । उसके पति स्वयं एजिल क्लेअर ने अन्य लोगों की भाँति ही उस के प्रति अन्याय किया है । इसके पूर्व टैसने कभी भी ऐसे विचार को अपने मन में स्थान न दिया था परन्तु आज उसे

विश्वास हो गया कि उसके पति ने अवश्य ही अन्याय किया है। अपने जीवन में वह कभी भी अपनी आत्मा की पुकार के बल पर शवथपूर्वक इस बात को स्वीकार न कर सकती थी। वह कभी भी एजिल के विरुद्ध कोई अन्याय न कर सकती थी परन्तु यह कठिन निर्णय भी उस के मन में समा रहा था। वह सोचती थी कि उसने जो कुछ भी पाप किया है, उसमें उसका मानसिक संकल्प न था; जो कुछ उस से बन पड़ा, वह असावधानी के कारण। और फिर उसे ही क्यों बार-बार इसका फल भुगतना पड़ता था ?

उसने आवेश में आकर समीप ही पड़ा हुआ एक छोटा कागद का टुकड़ा उठा लिया और उस पर निम्नांकित पंक्तियाँ लिख डालीं—

“ एजिल—तुम न मेरे प्रति ऐसा घोर दुर्व्यवहार क्यों किया है ? मैं इसकी अधिकारिणी नहीं हूँ। मैं ने बहुत सावधानी से इस पर विचार किया है और अब मैं तुम्हें कभी भी क्षमा नहीं कर सकती। तुम जानते हो कि मेरा विचार तुम्हें किसी प्रकार का धोका देने का न था—फिर तुमने मेरे साथ क्यों इतना अन्याय किया ? तुम निर्दय हो। वास्तव में तुम निर्दय हो। मैं तुम्हें भुलाने का प्रयास करूंगी। तुम्हारी ओर मे सदैव ही मुझे अन्याय ही मित्र है। ”

टै०

वह सड़क की ओर देखती रही। डाकिया उधर से निकला। अपने पत्र को लेकर वह उसके समीप तक गई तथा फिर लौट कर खिड़की के शीशे के समीप अन्यमनस्क भाव से बैठ गई।

उस व्यक्ति के लिये लिखे गये पत्र में चाहे ऊपर जैसी उग्रता दिखलाई जाती और चाहे उसमें विनम्र प्रार्थना रहती, उसके लिये एक ही बात थी। वह विनय को कैसे मान सकता था ? सत्य घटनाओं में कोई परिवर्तन न हुआ था। उसका विचार बदलने वाली कोई नवीन घटना न हुई थी।

अँधेरा और भी बढ़ गया। अम्मी का प्रकाश कमरे में चमक रहा था। दो बड़े बालक अपनी माता के साथ बाहर गए थे। चारों छोटे-छोटे यहीं आग के समीप एकत्रित थे। उनकी वय साढ़े-तीन वर्ष से लेकर ग्यारह वर्ष तक थी। सभी काले फ्राक पहने थे तथा अपनी-अपनी रुचि के अनुसार जो मन में आता था—कह रहे थे। टैस ने आज मोमबत्ती भी न जलाई थी। वह भी इन्हीं बालकों में आकर बैठ गई।

“ प्रिय भाइयो ! आज हमारे यहां सोनेकी अन्तिम रात है। जिस घर में हम लोगों ने जन्म लिया था वहां आज हम अन्तिम बार सोवेंगे। ” टैस शीघ्रता से बोली, “ हमें इस पर विचार करना चाहिये या नहीं ? ”

वे सब चुप हो गये। उनकी अल्प-वय में कोई भी प्रभाव सुगमतापूर्वक पड सकता है। टैस ने जो चित्र इस घर में अन्तिमवार सोने के सम्बन्ध में उपस्थित किया, उस पर विचार कर वह सब रुदनोद्यत बन गये यद्यपि दिन भर वे नई नगह जाने का विचार कर प्रसन्न होते रहे थे। टैस ने विषय बदल दिया।

“ प्रिय भाइयों ! मुझे कुछ गाना सुनाओ ” वह बोली।

“ हम क्या गावें ? ”

“ जो तुम को आता हो—कुछ भी गाओ । ”

एक क्षण के लिये सन्नाटा रहा । पहले इस मौन वातावरण में एक स्वर सुन पड़ा—तब इसको दूसरे स्वर का बल मिला और अन्त में तीसरे और चौथे बालकों ने भी अपने स्वर उसमें मिला दिये । इस सामूहिक गान में जो शब्द गाये जा रहे थे वे इन बालकों ने अपनी ‘रवि-बार-पाठशाला’ में सीखे थे ।

“ कष्ट झेलते यहां और पोडाएँ सहते ।

होता है संयोग, विरह में व्याकुल रहते ॥

किन्तु स्वर्ग में विरह नहीं है । ”

चारों बालक इस प्रकार विश्वास-गन होकर गा रहे थे मानों इस प्रश्न पर बहुत पहले निर्णय हो चुका है तथा इस में कुछ भी भूल नहीं थी और न इस विषय में आगे कुछ भी विचार करने की ही आवश्यकता है । शब्दों के उच्चारण के प्रयास में उनके आननों की मुद्राएँ दर्शनीय थीं । उन्हें इस समय केवल मध्य में स्थित आग का ही ध्यान था । सब से छोटे बालक के स्वर बड़े बालकों के विश्राम-स्थलों में भी गून्जते रहते थे ।

ऐस उन बालकों के मध्य से उठकर खिड़की के समीप ही पुनः जा बैठी । बाहर सर्वत्र अँधकार व्याप्त था लेकिन उसने अपना मुख खिड़की के शीशे से इस प्रकार सटा रखा था कि मानों वह अँधकार को चीर कर सब कुछ देख लेना चाहती है । वास्तव में यह प्रयास अपने आंसुओं को छिपाने के लिये था । यदि उसे विश्वास हो जाता कि बालक गण जो गा रहे थे वह सत्य था तो सभी बातें कितनी भिन्न होतीं ; कितने विश्वास के साथ वह उन बालकों को उनके भावी राज्य

में ईश्वराधीन छोड़ सकती थी। परन्तु उस पर विश्वास न कर सकने के कारण उन के लिये कुछ करना आवश्यक था। उसे ही उनके लिये ईश्वर बननी था क्यों कि जिस प्रकार अन्य लाखों व्यक्ति कवि की इन पंक्तियों को उपहासास्पद मानते हैं—उसी प्रकार टैस भी उनमें एक भीषण कटुतापूर्ण व्यंग का अनुभव करती थी :

“ निर्जनता में; निर्धनता में—जहां न हो अपना कोई।

यश के बाल छा जाते हैं जाती है विपदा धोई ॥ ”

उसके लिये तथा उसके समान अन्य व्यक्तियों के लिये जन्म लेना ही व्यक्तिगत विवशता द्वारा पतित होना था तथा कोई भी परिणाम उसकी आवश्यकता का समर्थन न करता था। जन्म से सब से अधिक लाभ यदि कोई था तो वह यह कि जीवन द्वारा अपनी विकासोन्मुख प्रवृत्तियों को पतनोन्मुख बना दिया जाता था।

आर्ट मार्ग की पालाई में शीघ्र ही टैस ने अपनी मां—साथ में लम्बी लिजान्ट तथा अब्राहम को देखा। श्रीमती दर्वीफील्ड के जूतों की आइट द्वार तक आई तथा टैस ने द्वार खोल दिया।

“ खिडकी के बाहर किसी अश्व के पद-चिन्ह दिखाई देते हैं। ” जोन बोली। “ क्या कोई मिलने आया था ? ”

“ नहीं—” टैस ने कहा।

आग के समीप बैठे हुए बालक गंभीरता के साथ उसकी ओर देखने लगे और एक बोला—

“ क्यों टैस—वह घोड़े दर सवार कौन था ? ”

“ वह मिलने नहीं आया था। ” टैस बोली। “ रास्ता चलते, वह मुझ से कुछ बात करने लगा था। ”

“ यह व्यक्ति कौन था ? ” उसकी मां ने पूछा । “ क्या वह तुम्हारा पति था ? ”

“ नहीं । वह तो कभी आवेंगे ही नहीं । ” जड निराशा में झूठी हुई टैस ने उत्तर दिया ।

“ तब वह कौन था ? ”

“ तुम्हें इस विषय में कुछ पूछना न चाहिये । आप उसे पहले देख चुकी हैं और मैं भी उसे पहले से जानती हूँ । ”

“ अरे ! उसने क्या कहा था ? ” जोन ने उत्सुकता के साथ पूछा ।

“ जब हम लोग कल राजावाड़ी में अपने नए घर में टहर जायेंगे, तब मैं तुम्हें सभी बातें बतला दूंगी । प्रत्येक शब्द । ”

टैस ने कहा था कि उसका पति उससे मिलने न आया था । फिर भी उसके मन में एक विचार बार बार आ रहा था । वह सोचती रहती थी कि जहां तक शारीरिक क्रियाओं से सम्बन्ध था, यही मनुष्य उसका पति हो सकता था ।

दूसरे प्रभात के पूर्व रात्रि के अवशिष्ट घंटों में जब कि अंधकार चारों ओर फैला हुआ था, सड़कों के समीप के रहने वालों की रात की आराम की नींद में गाड़ियों की खड़खड़ाहट ने विघ्न डालना प्रारंभ किया । यह शोर-गुल दिन निकलने तक अबाधगति से चलता रहा । इस मास के प्रथम सप्ताह में यह शोर प्रति वर्ष इसी प्रकार सुनाई देता था जैसे इसी मास के तीसरे सप्ताह में कोयल की कूक प्रतिवर्ष सुन

पडती है। पहले-पहल जो रिक्त छकड़ों का रब मुन पडता था वह लोगों के स्थान-परिवर्तन की भूमिका थी क्योंकि यह छकड़े ही लोगों को लानेके लिये एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते थे। जो किसान किसी श्रमिक को अपने यहां काम पर रखता, उसी की भेजी हुई सवारी में श्रमिक उसके यहां जाता था। इस विचार से कि दूसरे दिन, दिन में ही सारा काम समाप्त हो जावे, यह क्रिया रात्रि रहते ही प्रारंभ हो जानी थी। गाड़ीवालों का ध्येय यह रहता था कि प्रभात के छः बजे तक वह श्रमिक के द्वार पर पहुंच जावें ताकि प्रभात होते ही गाड़ियों में सामान लदना प्रारंभ हो जावे।

लेकिन टैस और उनकी माता के यहां किसी उत्सुक किसान ने अपनी गाड़ी न भेजी थी। एक तो ये सभी स्त्रियां थीं, दूसरे वे नियमित रूप से श्रमिकों की भांति काम भी न करती थीं। विशेष रूप से उनकी कहीं भी मांग न थी। इसी कारण उन्हें तो अपने व्यय में गाड़ी मंगानी पडी थी तथा उनका कोई भी सामान मुफ्त नहीं भेजा गया।

टैस को यह देखकर शान्ति मिली कि आज पानी नहीं बरस रहा है। उस प्रभात में जब उसने बाहर झांका तो गाड़ी आचुकी थी तथा केवल हवा चल रही थी। यदि कहीं 'स्त्री-दिवस' को पानी बरस जाता, तो ऐसा दृश्य उपस्थित हो जाता कि उसे स्थान-परिवर्तन करने वाले परिवार कभी न भूलते थे। उन का सामान गीला हो जाता, बिछौने भीग जाते तथा पहनने के वस्त्र भी आर्द्र हो जाते; परिणाम-स्वरूप बहुत दिनों तक बीमारियां उनको घेरे रहतीं।

इस समय टैस की मां, लिजालू और अब्राहम भी जाग चुके

थे पर उन्होंने छोट बालकों की सोते रहने दिया । इन चारों ने क्षीण-प्रकाश में नाश्ता किया तथा घर लादने का कार्य प्रारंभ कर दिया ।

यह कार्य कुछ प्रसन्नता के साथ होता रहा । एक-दो मित्र पड़ोसी भी इस कार्य में सहयोग देने को आगए थे । जब सामान के बड़े-बड़े अंश ठीक स्थिति में रखे जा चुके तो पलंग और बिछौनों से एक गोल नीड सा बनाया गया जिसमें बैठ कर जोन दर्बीफील्ड तथा बालकों को यात्रा करनी थी । सामान लद जाने के बाद घोड़ों के जुतन में फिर विलम्ब लगा । सामान लादते समय उन्हें ढील दिया गया था । आखिरकार लगभग दो बजे सब परिवार गतिशील बन गया ; भोजन-पकाने का पात्र गाड़ी की कमानी में नीचे लटक रहा था ; ऊपर श्रीमती दर्बीफील्ड सकुटुम्ब सिरे पर विद्यमान थीं ; उनकी गोद में घड़ी का सर रखा हुआ था—जो अपनी टूटी-फूटी आवाज में कभी एक और कभी डेढ़ ब्रजाती चलती थी । यह सावधानी घड़ी के पुर्जों को और अधिक हानी से बचाने को की गई थी । टैस और उसकी छोटी बहन इस गाड़ी के साथ-साथ चल रहे थे । इस प्रकार यह लोग गांव के बाहर आ गए।

उस दिन प्रभात में तथा पूर्व-संध्या में यह लोग कतिपय पड़ोसियों से मिलने गये थे और अब कुछ लोग इन्हें विदा देने भी आये थे । सबने उनके लिये मंगल-कामनाएँ प्रकट कीं । यद्यपि अपने मन में वे सब समझते थे कि ऐसे परिवार का क्या मंगल हो सकता है जो सिवा अपने आप के किसी दूसरे की कुछ हानी करना जानते ही नहीं । थोड़ी देर पश्चात् यह खटला ऊँची भूमि पर चढ़ने लगा तथा मिट्टी और धरा-तल के बदल जाने पर हवा तीक्ष्ण हो गई ।

आज ६ अप्रैल थी, इस कारण दर्बीफील्ड के छकडे की मार्ग

में अन्य कई परिवारों के छकड़ों से भेंट हुई जिन में सभी में सामान के ऊपर परिवार के सदस्य बैठे हुए थे । जिस प्रकार मधु-चक्र मधुमक्खी के लिये उपयोगी होता है, उसी प्रकार यह छकड़ा ग्रामीण श्रमिक के लिये उपयोगी था । इन सब छकड़ों में सब से नीचे परिवार के वस्त्र मैभालने का साधन रखा हुआ था जिस के मुठियां चमक रही थीं तथा इसको प्रयोग में लानेवालों को अँगुलियों के इस पर बने हुए चिन्ह इसकी परिवार-सेवा का प्रमाण थे । जुते हुए घोड़ों की दुमों के ऊपर सीधा रखा हुआ यह किसी गिरिजाघर का कोई पवित्र स्मार्क सा प्रतीत होता था जिसे वे घौड़े आदरसहित कहीं लिये जा रहे थे ।

कुछ परिवार प्रसन्न थे तथा कुछ उदास ; कुछ परिवार मार्ग के किनारे स्थित सरायों के द्वारों पर ठहरे हुए थे ; उचित समय पर यहीं दर्बीफोल्ड परिवार भी आ पहुंचा तथा घोड़ों एवम् यात्रियों को कुछ विश्राम का अवसर देने के लिए यह लोग भी यहां ठहर गये ।

इन विश्राम के क्षणों में टैस की दृष्टि एक तीन-पिण्डवाले मधु-पाल पर पड़ी जो एक अन्य परिवार की स्त्रियों द्वारा हवा में इधर से उधर घूम रहा था । यह परिवार भी अपने सामान के ऊपर एक छकड़े में बैठा था तथा इसी सराय से कुछ दूरी पर आ गया था । टैस की दृष्टि ने मधु-पात्र के साथ-साथ एक बार ऊपर की यात्रा की तो देखा कि उस पाल को धारण करने वाले हाथों की स्वामिनी से वह भली भांति परिचित है । टैस उस छकड़े की ओर चल दी ।

“ मेरिअन और इज ” उसने चिल्लाकर उन बालिकाओं को आवाज दी । निश्चय ही वे दोनों यहां थीं । जिस परिवार के साथ टैस और वे दोनों पहले रहती थीं, वही परिवार इस में जा रहा था । “ क्वा

तुम भी अन्य श्रमिकों की भांति आज घर लाद कर जा रही हो ? ”

उन्होंने स्वीकार किया कि वे भी स्थान बदल रही थीं। फिलन्ट-कुम्ब-ऐश का जीवन उनके लिये असह्य था तथा वे दोनों बिना कुछ कहे-सुने, ग्रीवी को छोड़कर चली आई थीं। यदि वह चाहे तो उनपर मामला चला सकता था। उन्होंने टैस को बतलाया कि वे कहां जा रही हैं। टैस ने भी अपनी यात्रा का लक्ष्य उनसे स्पष्ट किया।

मेरिअन ने अपना शिर झुकाकर धीमी आवाज में पूछा—
“ क्या तुम्हें मालूम हुआ ? वह व्यक्ति जो तुम्हारे पीछे लगा है—
तुम समझ गई होगी कि मेरा मतलब किस व्यक्ति से है—तुम्हारे चले जाने के पश्चात् वह फिलन्ट-कुम्ब-ऐश में तुम्हें खोजने को आया था। हम लोगों ने उसे बताया नहीं कि तुम कहां मिलोगी, क्योंकि हम जानती हैं कि तुम्हें उस से मिलना रुचता नहीं। ”

“ हां—लेकिन उस से मेरी भेंट हो चुकी है। ” टैस ने धीमे स्वर में कहा। “ उसने मुझे ढूँढ निकाला। ”

“ और क्या उसे ज्ञात है कि तुम किधर जा रही हो ? ”

“ मैं समझती हूँ कि वह जानता है। ”

“ क्या तुम्हारे पति लौट आए ? ”

“ नहीं। ”

उसने अपनी परिचिता से विदा ली क्यों कि दोनों छकड़ों के चालक अब सराय से बाहर आ गये थे तथा दोनों छकड़ों ने अपनी यात्राएँ विपरीत दिशाओं में प्रारंभ कर दीं। जिस गाड़ी में मेरिअन, इज तथा कृषक का परिवार बैठा था, उस पर भड़कीला रंग किया हुआ था तथा उसे तीन बलवान घोड़े खींच रहे थे जिन का साज चमकीली

पीतल से निर्मित था; इज और मेरिअन का सम्बन्ध अब इसी नवीन परिवार से होगया था। जिस गाडी में श्रीमती दर्बीफील्ड तथा उनका परिवार यात्रा कर रहा था वह एक टूटी-फूटी रचना थी जो बड़ी कठिनाई से अपनी शक्ति अधिक भार सँभाले चल रही थी; रंग तो इस पर उसके निर्माण के पश्चात् कभी भी न किया गया था और उसे केवल दो घोड़े ही खींच रहे थे। इस तुलना से दोनों प्रकार के यात्रियों का भेद स्पष्ट हो जाता है। एक को तो एक संपन्न कृषक अपने यहां लिवाए जा रहा था तथा दूसरी स्वयं अपने को एक ऐसे स्थल पर लिए जा रही थी जहां कोई परिश्रामिक देकर काम लेने वाला उसकी प्रतीक्षा में न था।

दूरी बहुत थी; एक दिन की यात्रा के लिये तो उसे बहुत अधिक ही मानना पड़ेगा। अत्यधिक कठिनाई झेल कर घोड़ों ने कैसे भी उसे तै कर लिया। यद्यपि वे मारैलत से इतने तडके चले थे परन्तु जब वे ग्रीनहिल के पठार पर चढ़कर पहुँचे तो तीसरा प्रहर समाप्ति पर आ चुका था। जब घोड़े थोड़ी देर ठहर कर सुस्ता रहे थे तब टैस ने भी अपने चारों ओर देखा। पहाड़ी के नीचे तथा उनसे कुछ ही दूरी पर उनकी यात्रा का स्थान, अर्द्धमृत गांव राजाबाडी था जहां कि उनके पूर्वज पड़े हुए थे; जिस के विषय में उसके पिता कहते-कहते तथा गाते-गाते मुनने वालों को थका देते थे। संसार के समस्त स्थानों में राजाबाडी ही एक ऐसा स्थल था जिसे दरबारविलों का घर कहा जा सकता था क्योंकि यहाँ वह लोग पूरे पांच सौ वर्ष तक विशास करते रहे थे।

गांव की सीमा पर एक व्यक्ति उन लोगों की ओर आता हुआ दिखलाई दिया। और जब उसने उनका सामान से लदा छकड़ा देखा, तो अपनी गति और बढ़ा दी।

“क्या आप ही श्रीमती दर्बीफील्ड हैं ? मैं समझता हूं कि—” उसने टैम की माता से कहा। वे इस समय अवशिष्ट मार्ग पैदल ही तै करने के विचार से नीचे उतर आई थीं।

उन्होंने स्वीकृति-सूचक गरदन हिला दी। “यदि मैं अपना अधिकार चाहूँ तो मैं स्वर्गीय सर जौन दरबरविल की विधवा हूँ—जो एक गरीब सरदार थे; और अब मैं उनके पूर्वजों के राज्य में वापस लौट रही हूँ।”

“अच्छा ? खैर—इस विषय में तो मैं कुछ नहीं जानता, लेकिन यदि आप श्रीमती दर्बीफील्ड हैं तो मुझे यह सूचना देने को भेजा गया है कि जिन कमरों को आप किराये पर लेना चाहती थीं वह धिर गये हैं। हमें यह ज्ञात न था कि आप कब आरही हैं। आज प्रभात में आपका पत्र मिला परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लेकिन इस में कोई मन्देह नहीं कि आपको कहीं न कहीं दूसरा निवास-स्थान मिल जायगा।”

उस मनुष्य ने टैस का आनन देखा जो इस समाचार को सुनकर यकायक पीला पड़ गया था। इस अनजाने कष्ट पर उसकी मां निराश होकर इधर उधर देखने लगी। दुःख में डूबकर वह बोली—
“टैस ! अब हम लोग क्या करें ? यही तुम्हारे पूर्वजों की भूमि में हमारा स्वागत है ! जो भी हो, हमें और प्रयास करना चाहिये।”

वे लोग ग्राम में आगे बढ़े तथा अपनी संपूर्ण शक्ति मकान की खोज में लगा दी। टैस छकड़े के समीप ठहर कर सामान और बालकों की देखभाल करती थी तथा उसकी मां और लिजालू इधर-उधर पूछ-ताछ करते थे। जब एक घंटे की खोज के पश्चात् जौन गाडी के समीप

आई तथा उसका अब तक का सारा प्रयास निष्फल होगया तो गाड़ीवान ने कहा कि सामान तो उतरवा लेना चाहिये क्योंकि घोड़े अधमरे हो चुके हैं और वह कम से कम कुछ दूर तो उसी रात में वापस जाना चाहता है ।

“ बहुत अच्छा— सब यहीं उतार दो । ” जोन ने बिना छकु ध्यान दिए कह दिया । “ कहीं न कहीं तो मुझे रहने को स्थान मिलेगा ही । ”

गाड़ी कवरिस्तान की दीवार के पास आगई थी । यह एक ऐसा स्थल था जो सर्व-साधारण की दृष्टि में छिपा हुआ था । गाड़ीवान को भी यहा सामान उतारने में कुछ आपत्ति न थी । उसने तुरन्त ही सब घर का सामान उतार-उतार कर नीचे पटक दिया । इस क्रिया की समाप्ति पर गाड़ीवान को किराया दिया गया तथा उसके परिणाम-स्वरूप जोन के पास अन्तिम शिलिंग बच रही । गाड़ीवान उन लोगों को छोड़कर चला गया । ऐसे परिवार में अब उसे और कुछ संपर्क न रहेगा यह सोच मोच कर वह बहुत प्रसन्न था । उस दिन रात्री मेघा-च्छन्न न थी और वह समझ रहा था कि इस प्रकार उन्हें कोई कष्ट न होगा ।

ऐस निराश भाव से सामान के ढेर की ओर निहारने लगी । वसंती संध्या के सूर्य का शीतल प्रकाश उनके वर्तनों पर ; उनकी शुष्क जड़ी-बूटियों पर ; उनके वस्त्र-रक्षक की पीतल की मुठियों पर ; उनके उस खटोले पर जिसमें बारी-बारी से वे सब झूले थे ; उनकी घड़ी के टक्कन पर—पड कर यह उपालम्भ देता था कि यह वस्तुएँ तो घर के अन्दर रखने के लिए हैं ; यह छत के नीचे से हटाकर खुले स्थान में

क्यों पटक दी गई हैं—उनका निर्माण इसके लिए नहीं हुआ। उनके चारों ओर पहाड़ियाँ और उनके कंटे-छंटे ढाल थे जो बतलाते थे कि दरबारविलों की हवेली कहाँ थी तथा समीप ही इगदन हीथ का विस्तृत मैदान था जिसपर इस वंश की जमींदारी थी। और भी समीप गिरजाघर का वह भाग था जहाँ दरबारविल वंश के लोगों की समाधियाँ थीं।

“अपने परिवार के कब्रिस्तान में तो हम लोग बिना किराया दिये रह सकते हैं।” टैस की माँ जब गिरजाघर और कब्रिस्तान देख कर लौटी—तो उसने कहा। “हाँ, यही हमारा स्थान रहेगा जब तक तुम्हारे पूर्वज हमारे लिये कोई छतवाला निवास नहीं ढूँढ देते। बालिकाओ! यहीं हम अपना डेरा डालेंगे। अब टैस, लिजा और अब्राहम—तुम सब मेरी सहायता करो। हम इन बालकों के लिये एक नीड बना दें—फिर और खोज करेंगे।”

टैस ने भी बिना अधिक सोचे-विचारे थोड़ी सहायता दी तथा लगभग पन्द्रह मिनट में पुराना पलंग सामान के ढेर से अलग कर लिया गया। गिरजाघर की दक्षिण की दीवार के सहारे उसे जमाया गया। गिरजाघर की इमारत का यही भाग दरबारविलों के कब्रिस्तान के नाम से विख्यात था तथा इसी के नीचे उनकी विशाल कब्रें थीं। अब जहाँ पलंग लगाया गया था उसके सिरहाने के ऊपर दीवार में एक सजी हुई खिडकी थी जिसमें कई रंग के पत्थर लगे थे। इस पर इसके निर्माण का समय पन्द्रहवीं शताब्दी की कोई तिथि लिखी हुई थी। इस खिडकी को दरबारविल झरोखा कहते थे तथा इसके ऊपरी भाग पर वैसे ही चिन्ह बने हुए थे जैसे दर्बीफील्ड की मुद्रा और चम्मच पर थे।

जान ने चारों ओर से पर्दे खींच कर बिल्लौने को एक सुन्दर

तम्बू में बदल दिया तथा छोटे बालकों को अन्दर लिटा दिया। वह कहने लगी—“ अब चाहे कुछ हो, हम यहां एक रात्रि तो बिता ही सकते हैं। लेकिन हमें थोड़ा और प्रयत्न करना चाहिए ताकि इन छोटे बालकों के लिए कुछ खाने-पीने की व्यवस्था हो जावे। अरे टैस, तुम्हारे उस भद्र पुरुष के साथ विवाह का खेल खेलने से क्या लाभ हुआ, जब कि हमें इस प्रकार रहना पड़ रहा है। ”

लिजाबू और अब्राहम को साथ लेकर वह पुनः उसी छोटी गली में होकर ग्राम में जाने लगी। ज्योंही वे सड़क पर पहुंचे, उन्होंने एक घुड़सवार को देखा जो कभी इधर को मुड़ जाता था तथा कभी उधर को चल देता था। इन्हें देख कर वह घोड़ा दौड़ा कर इनके पास आया और बोला—“ अरे, मैं तो आप लोगों को ही खोज रहा था। यह इस ऐतिहासिक स्थल पर परिवार का सम्मेलन हो रहा है। ”

यह एलैक दरबरविल था। उसने पूछा—“ टैस कहां है ? ”

व्यक्तिगत रीति से जोन एलैक को बिल्कुल भी न चाहती थी। उसने गिरजाघर की ओर रुखासा संकेत कर दिया और आगे बढ़ गई। दरबरविल ने उनसे पुनः मिलने की बात कही। वह बोला—“ मैं ने सुना है कि आप लोगों को मकान नहीं मिल रहा है। यदि कोई स्थान न मिल सके, तो मैं कुछ व्यवस्था करूंगा। ” जब वे लोग आगे बढ़ गये, तो दरबरविल मराय की ओर घोड़ा दौड़ाए चला गया तथा कुछ ही समय पश्चात् पैदल उधर से लौट आया।

इस समय में टैस बालकों के साथ पलंग पर बैठकर कुछ देर तक बातचीत करती रही फिर यह सोचकर कि अब उन्हें और आराम पहुंचाने के लिए कुछ भी उपाय नहीं किया जा सकता, वह गिरजाघर में

टहलने लगी। रात्रि के आगमन के कारण वहाँ अब अँधकार छाता जा रहा था। गिरजाघर का द्वार खुला हुआ था और वह जीवन में प्रथम बार यहाँ प्रविष्ट हुई।

जिस खिडकी के नीचे पलंग लगाया गया था, उसी के दूसरी ओर परिवार की कब्रें थीं जिनकी तिथियाँ कई शताब्दियों तक फैली हुई थीं। यह कब्रें कई प्रकार की थीं; कुछ पर छतरी बनी थी, कुछ वेदी की शकल में थी तथा कुछ साधारण भी थीं; उनके ऊपर की लिखावट मिट चुकी थी; उनकी पीतल अपने स्थान से हट चुकी थी; तथा उनके छिद्र ऐसे प्रतीत होते थे मानों रेतीली चट्टान में चिड़ियों के बर हों। अब तक उसको जितनी भी सूचनाएँ, उसके परिवार के विनाश के सम्बन्ध में मिली थीं उन में कोई भी ऐसी प्रभावोत्पादक न थी जैसा यह कब्रों का भ्रमप्राय स्वरूप था।

वह एक काले पत्थर के समीप गई जिस पर यह लिखा हुआ था :

प्राचीन युग में सुप्रसिद्धि दरदरविल की कब्र

ऐस किसी धार्मिक-पुजारी की भाँति तो लैटिन न पढ़ी थी परन्तु इतना वह जान गई कि यह उसीके पूर्वजों की कब्र थी तथा जिन लंबे मरदारों की प्रशस्त उसके पिताजी अपनी मदिरा की प्याली के नशे में गाया करते थे वे यहीं पड़े हैं।

वह अन्य विचारों में निमग्न हों, वहाँ से मुड़ने ही वाली थी कि वह वहाँ की सब से पुरानी वेदी के खम्भे के समीप होकर निकली। वहाँ उसे एक उठा हुआ चित्र दिखलाई दिया। संध्यावेला में इधर आते समय ऐस ने उसे नहीं देखा था और न इस समय ही उसका ध्यान

उस भीर जाता परन्तु उसे ऐसा लगा कि चित्र कुछ हिल-डुल रहा है। ज्योंही वह और समीप आई, त्योंही उसे पता चल गया कि वह चित्र कोई जीवित व्यक्ति था ; यह जानकर कि वह यहां अकेली नहीं हैं, उसे एक धक्का-सा लगा और वह बेहोश होकर गिरने ही वाली थी जब कि उसने उस चित्र में एलैक दरबरविल की आकृति पहचान ली।

वह पत्थर से झपट कर उठा तथा उसने टैस को गिरने से बचा लिया।

उसने मुस्कराते हुए कहा—“ मैं ने तुम्हें अन्दर आते देखा था। यह सोचकर कि तुम्हारी विचारधारा में कोई विघ्न न पड़े मैं उस पत्थर पर जा बैठा था। यहां तो पारिवारिक सम्मेलन हो रहा है— क्यों जी ? हमारे पूर्वज यहां हमारे नीचे हैं। सुनो। ”

यह कह कर उसने अपने पैर की एडी फर्श पर जोर से मारी ; इसके प्रत्युत्तर में नीचे से एक प्रतिध्वनि चारों ओर गूँज गई।

“ मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हूँ कि इस ठोकर का उन पर कुछ प्रभाव पड़ा है। ” उसने अपनी बात समाप्त न की। “ और तुम सोच रही थी कि मैं भी उन्हीं में से उत्पन्न कोई पात्राण-प्रतिमा हूँ। लेकिन नहीं। पुराना युग बदल गया। इस कपटी दरबरविल की क्षुद्र तर्जनी इस समय तुम्हारा अधिक हित कर सकती है। नीचे पड़े हुए वास्तविक दरबरविलों का सम्पूर्ण वंश तुम्हारा कुछ भी हित नहीं कर सकता। अब आप आज्ञा दीजिए। मैं क्या करूँ ? ”

“ यहां से चले जाओ— ” टैस ने धीरे से कहा।

“ मैं चला जाऊंगा। मैं तुम्हारी माता को खोजूंगा— ” उसने लापरवाही के साथ कहा। जब वह टैस के समीप से जा रहा था

तो धीमे स्वर में बोला—“ लेकिन एक बात का ध्यान रखो । तुम्हें अब भी सभ्यता का व्यवहार करना चाहिये । ”

जब वह चला गया तो टैस उन कब्रों के द्वार की ओर झुक कर बोली—

“ न जाने क्यों मैं इस द्वार के दूसरी ओर हूँ ? ”

इस समय में मेरिअन और इजहुवेत अपनी यात्रा समाप्त कर कृषक के नूतन प्रदेश में आगई थी—जहां से आज ही दुःखित होकर एक अन्य परिवार विदा हो चुका था । लेकिन अपनी यात्रा में बहुत देर तक यह बालिकाएँ भूल गईं कि वे कहां जा रही हैं । उनकी बात-चीत एजिल क्लेअर और टैस के विषय में थी तथा वे टैस के उस हठीले प्रेमी की भी चर्चा कर रही थी जिसके पुराने इतिहास का कुछ अंश वे सुन चुकीं थीं तथा कुछ का उन्होंने अनुमान लगा लिया था ।

“ कितना अच्छा होता, यदि टैस की उससे कभी मेंट ही न हुई होती । ” मेरिअन ने कहा । “ एक बार उसने टैस पर विजय प्राप्त कर ली, तो टैस के सँसार में इतना अन्तर पड़ गया । यह बड़ी दयनीय घटना होगी, यदि फिर कहीं यही व्यक्ति टैस को बहकाने में सफल हो जाहगा । इज ! श्रीमान क्लेअर हम लोगों के तो कुछ बन नहीं सकते ; और यदि वे उसके बन सकते हैं, तो हमें बुरा भी क्यों मानना चाहिये । हमें तो उन दोनों के झगड़े को मिटाने का प्रयास करना चाहिये । यदि उसे यह पता भी लग जायें कि टैस पर क्या विपत्ति है, तथा उसके चारों ओर कोन चक्कर काटता रहता है, तो वह अवश्य अपनी वस्तु की सँभाल करने को चला आवेगा । ”

“ क्या हम उसे इस सम्बन्ध में सूचना दे सकते हैं ? ”

अपने निवास-स्थल तक पहुँचने के पूर्व मार्ग में वे यही विचार करती रहीं। परन्तु नवीन स्थान में पहुँच कर वहाँ के काम धन्धे ने उनका सारा ध्यान बटा लिया। लेकिन जब वे दोनों स्थाईरूप से वहाँ जम गईं तो एक माह के पश्चात उन्हें क्लेअर की वापसी का समाचार मिला। इस बीच में उन्हें टैस का कुछ भी समाचार न मिल सका था। इस समाचार को प्राप्त कर उनका पुराना प्रेम पुनः जाग गया तथा ईमानदारी के साथ टैस का ध्यान रखते हुए, मेरिअन ने अपनी उस छोटी दावात का ढक्कन हटाया जो उन दोनों के काम आती थी तथा उन दोनों बालिकाओं ने कुछ पंक्तियाँ लिख डालीं।

“आदरणीय महोदय; अपनी पत्नी पर ध्यान दीजिये। यदि आप भी उसे उतना ही प्रेम करते हैं, जितना वह आप से करती है, तो अवश्य ध्यान दीजिये। क्योंकि उसे एक शत्रु उसका मित्र बन कर सता रहा है। श्रीमान! उसके समीप एक ऐसा व्यक्ति है जिसे दूर रहना चाहिये। किसी स्त्री की परीक्षा उसकी शक्ति से अधिक न लेनी चाहिये। बार-बार गिरनेवाली बूँदों से पत्थर तक घिस जाता है—और तो और हीरा तक घिस जायगा।

—दो शुभचिन्तकों की ओर से

इस पर एजिल क्लेअर का पता लिखा गया। वे केवल एक ही स्थान ऐसा जानती थीं जिसका क्लेअर से सम्बन्ध था अतएव उन्होंने एमिन्स्टर के धर्मग्रह का पता उस पर लिख दिया। इसके पश्चात अपनी उदारता पर भाँति-भाँति से उमंगों में भर कर कभी वे नाचने-गाने लगती थी तथा कभी रोने लगती थीं। कभी-कभी दोनों कार्य एक ही साथ होते थे।

सातवीं—झलक

५३

एमिन्स्टर के धर्मगृह में संध्या थी। पुजारी जी के अध्ययन-कक्ष में सदैव की भांति दो मोमबत्तियाँ अपनी हरी परछाई में जल रही थीं परन्तु स्वयं पुजारी जी वहाँ न थे। कभी-कभी वह अन्दर आ जाते थे तथा वहाँ सुलगती हुई छोटी सी आग को कुछ प्रज्वलित कर बाहर चले जाते थे। वसन्तऋतु के विनम्र शीत का इस अरूप-अग्नि द्वारा भली भांति निवारण किया जा सकता था। कभी वह सामने के द्वार पर ठहर जाते; कभी बैठक में जाकर फिर सामने के द्वार पर आ जाते।

द्वार पच्छिम की ओर था और यद्यपि अन्दर कक्ष में अंधकार व्याप्त हो गया था परन्तु बाहर इतना प्रकाश था कि प्रत्येक वस्तु स्पष्ट दौख पड़ती थी। श्रीमती कलअर अब तक बैठक में बैठी थीं; इस बार

वे भी उठकर उनके समीप ही आकर खड़ी हो गई ।

“ अभी तो बहुत समय है—” पुनारी जी ने कहा । “ छः बजे तक तो वह न्यूटन-चक तक न आ सकेगा ; और मान लीजिये कि गाड़ी बिल्कुल ठीक समय पर आ भी गई तो हमारे वृद्ध घोड़े के लिये दस मील को यह यात्रा इतने थोड़े समय में पार कर लेना संभव नहीं है । इन दस मील में से पाच मील का तो टेडी-मेडी तथा तंग गलियों में होकर मार्ग है । ”

“ परन्तु मेरे प्रिय, हम लोगों के साथ तो यही घोड़ा एक घंटे में इन्हीं मीलों को पार कर लेता था । ”

“ यह तो कई वर्ष पूर्व की बात है । ”

इस प्रकार उनके मिनट व्यतीत हो रहे थे । उन दोनों में से प्रत्येक यह भली भांति समझता था कि इन बातों में केवल समय काटना है ; वास्तविक बात तो केवल एक ही थी कि वे दोनों प्रतीक्षा कर रहे थे ।

अन्त में उस गली में थोड़ी आहट सुन पड़ी और वृद्ध घोड़े द्वारा खचित बग़ी घर की सीमा के बाहर दीख पड़ी । उस बग़ी से उतरते हुए उन्होंने एक ऐसी शकल देखी जिसे पहचानने में उन्हें श्रम करना पड़ा । यदि यही व्यक्ति कहीं किसी सड़क पर मिला होता, तो यह लोग बिना पहचाने ही, उस से बिना कुछ कहे-सुने आगे निकल जाते । यदि वह इसी बग़ी से ठीक उसी समय न उतरा होता, जब की उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी, तो वह कादचित ही पहचाना गया होता ।

श्रीमती क्लेअर अंधेरे मार्ग में होकर शीघ्र ही द्वार पर आ गई

तथा उनके पति धीरे-धीरे उनके पीछे आये ।

नवागन्तुक जीस घर में प्रवेश करने ही वाला था उसके द्वार पर खड़े व्यक्तियों के उत्सुक आननों पर उसकी दृष्टि पड़ी तथा उनके चश्मों में पच्छिम की अन्तिम चमक दिखलाई दी क्योंकि वे लोंग दिवस की अन्तिम किरणों के सामने थे ; परन्तु उन लोंगों ने प्रकाश विपरीत होने के कारण केवल उसका कलेवर ही देख पाया ।

“ अरे मेरा बेटा—मेरा बेटा—फिर अन्त में घर आ गया। ” श्रीमती क्लेअर आवेश सहित बोलीं । इस समय नता उन्हें अपने बेटे की उस अधार्मिकता की चिन्ता थी, जो इस सब विछोह का कारण बनी थी और न उसके धूल-धूसरित वस्त्रों की । वास्तव में ऐसी कौनसी महिला होगी—चाहे उसका धार्मिक विश्वास कितना ही दृढ़ क्यों नहो—जो अपने बालकों से अधिक धर्म की बात पर विश्वास रखती होगी ; अथवा जो अपनी सन्तान के मुख के लिये धर्म को तिलान्जलि देने को उद्यत न होगी । ज्योंही वे सब उस कक्ष में पहुँचे, जहाँ मोमबत्तियाँ जल रही थीं, श्रीमती क्लेअर ने उसके आनन की ओर देखा ।

“ अरे । वह तो एँजिल नहीं है—मेरा बेटा नहीं है—वह एँजिल नहीं है, जो यहां से गया था । ” दुःख की सम्पूर्ण कटुता का अनुभव करती हुई वह बोली तथा उसने अपना मुख एक ओर कों मोड़ लिया ।

उसके पिता को भी उसकी इस दशा पर दुःख हुआ । चिन्ता-ओं और दूषित जलवायु ने उसे इतना क्षीण बना दिया था कि उसके आनन के पुराने आकर्षण सभी बदल गये थे । घरेलू घटनाओं से घबड़ा कर जिस जलवायु में वह भागा था, वहाँ उसकी यह दशा हुई । व्यक्ति में उसका ढाँचा स्पष्ट था और उस ढाँचे में उसका प्रेत बोलता था ।

पुराने लेखकों ने जिस प्रकार मृत ईसामसीह का चित्र खींचा था, उस चित्र से उसकी तुलना भली प्रकार की जा सकती थी। उसकी आंखों के गडों का रंग धुंधला हो गया था और उनकी ज्योति क्षीण थी। उसके वृद्ध पूर्वजों के आननों पर निद्यमान रहनेवाले चिन्ह उसके आनन पर समय से बीस वर्ष पूर्व ही आ निराजे थे।

“आप जानती हैं—मैं वहां बीमार था—” वह बोला।
 “अब मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ।”

परन्तु उसकी टांगें डगमगा रही थीं मानों वे उसके अन्तिम वाक्यांश को असत्य प्रमाणिक करने को उत्सुक हों। स्वयं को गिरने से बचाने के लिये वह एक कुर्सी पर बैठ गया। दिन भर की थकानेवाली यात्रा के उपरान्त तथा घर पर आगमन की प्रसन्नता तथा उत्साह के कारण यह क्षीणक कमजोरी आ गई थी।

“क्या अभी हाल में मेरे नाम का कोई पत्र आया है?”
 उसने पूछा। “आपका भेजा हुआ अन्तिम पत्र तो मुझे केवल संयोग-वश मिल गया; देश के आन्तरिक भाग का पता लिखा होने के कारण उसे पहुँचने में बहुत विलम्ब लग गया; नहीं तो मैं और भी पहले ही घर आ जाता।”

“हम समझते थे कि वह तुम्हारी पत्नी का पत्र था।”

“हां—उसी का था।”

एक पत्र और अभी हाल में आया था। यह जानते हुए कि वह शीघ्र ही घर लौट रहा है, वह पत्र उधर भेजा न गया था।

पत्र उसके सामने लाया गया जिसे उसने शीघ्रता से खोल डाला। स्वयं दैश के लिखे अक्षरों में नवीन प्रकार की भावनाएँ देख कर वह

बहुत चिन्तित हुआ। य वही पत्र था जिसे टैस ने शीघ्रता में घसीट डाला था।

एँजिल ! तुमने मेरे प्रति ऐसा घोर दुर्व्यवहार क्यों किया है ? मैं इसकी अधिकारिणी नहीं हूँ। मैं ने बहुत सावधानी से इस पर विचार किया है और अब मैं तुम्हें कभी भी क्षमा नहीं कर सकती। तुम जानते हो कि मेरा विचार तुम्हें किसी प्रकार का धोखा देने का न था। फिर तुमने मेरे साथ क्यों इतना अन्याय किया ? तुम निर्दय हो—वास्तव में तुम निर्दय हो। मैं तुम्हें भुलाने का प्रयास करूंगी। तुम्हारी ओर से सदैव ही मुझे अन्याय ही मिला है।

—टै०

“यह पूर्णतया सत्य है।” एँजिल ने पत्र भूमि पर पटकते हुए कहा। “अब वह कदाचित् कभी भी मेरी मित्र न बनेगी !”

“एँजिल ! एक ग्रामीण बाला के लिये इतने चिन्तित न हो।” उसकी माता ने कहा।

“ग्रामीण बाला ! हम सब एक ही प्रकार की भूमि में जन्म लेते हैं। मैं तो चाहता हूँ कि वह उसी अर्थ में ग्रामीण होती, जिसमें अपने उस शब्द का प्रयोग किया है। लेकिन अब मैं एक दूसरी बात आपको बतलाता हूँ—जो मैं ने अब तक नहीं बतलाई थी। उसके पिताजी भी एक प्राचीन नार्मन परिवार के वंशजों में हैं। जिस प्रकार अन्य कई प्रसिद्धि परिवार इन दिनों विस्मृत हो गये हैं तथा हमारे गांवों में खेती कर अपना उदर पोषण करते हैं तथा ग्रामीण कहना उसी प्रकार यह लोग भी हैं।”

वह तुरन्त ही सोने को चला गया। दूसरे दिन अत्यन्त अन्वस्थ होने के कारण वह अपने कमरे में पड़ा-पड़ा सोचता रहा। जब वह टैस का छोड़कर गया था तब स्थिति यह थी, विपुवत रेखा के दक्षिण में रहकर भी—उसका प्रेमपूर्ण पत्र पाकर—संसार में उसके लिये सबसे सुगम बात यह थी कि जिस क्षण वह टैस को क्षमा करने का निर्णय करें, वह झपट कर उसकी बाहु-पाश में आवद्ध हो सकता था, लेकिन जब वह देश में लौटकर आया—तो उसने देखा कि यह बात इतनी सुगम न थी जितनी उसे प्रतीत होती थी। वह क्रोध में थी—उसके नूतन पत्र से स्पष्ट था कि विलम्ब के कारण उस के सम्बन्ध में टैस के विचार बदल गये हैं। वह दुःखित भाव से मान लेता था कि टैस के विचारों का परिवर्तन न्यायपूर्ण है। अब वह स्वयं में ही पूछता था कि क्या ऐसी परिस्थिति में बिना कोई सूचना दिये उसके माता-पिता के मामले उसका अचानक उपस्थित होना उचित होगा। मान लीजिये कि विलाह के अन्तिम सप्ताहों में उसका प्रेम वास्तव में वृणा में बदल गया हो—तो यकायक भेंट होने पर वह कटु शब्द कह सकती है।

क्लेअर ने इसलिये यह अच्छा समझा कि मारलत को एक पत्र लिख कर टैस और उसके परिवार को अपनी वापसी की सूचना दे देवे। उसे आशा थी कि हंगैण्ड से जाते समय जैसी उसने व्यवस्था की थी उसके अनुसार टैस अपनी माता के साथ ही रहती होगी। उसने अपना पत्र उसी दिन भेज दिया और सप्ताह व्यतीत होने के पूर्व ही श्रीमती दर्बीफील्ड का उसे एक संक्षिप्त पत्र मिला—परन्तु इस से भी उसके चिन्त की चिन्ता दूर न हो सकी क्योंकि इस पर पता कहीं का न था। यह जानकर उसे और भी आश्चर्य हुआ कि पत्र मारलत से न आया था।

महाशय—ज कुछ पैक्तियां यह बतलाने को लिख रही है कि मेरी बेटी इस समय मेरे समीप नहीं है—और ज को विश्वस्त रीति नहीं ज्ञात है कि वह कब लौटेगी, लेकिन ज उसके वापस आते ही तुरन्त सूचना भेज देगी। ज तुम्हें यह बतलाने को स्वतंत्र नहीं है कि इन दिनों वह कहां रह रही है। ज कहना चाहती है कि उसने तथा उसके परिवार ने कुछ समय से मारलत में रहना छोड़ दिया है।

तुम्हारी—

ज० दर्बीफील्ड

क्लेअर को यह जान कर कुछ शांति मिली कि टैस कम से कम प्रत्यक्ष में तो सुखी है अन्यथा उस की माता उसका पता बतलाने में आनाकानी न करती। वह इन दिनों कहां थी—इस की उसे कुछ विशेष चिन्ता भी न थी। प्रत्यक्ष ही वे सब उस से अप्रसन्न थे। उसने निर्णय किया कि जब तक श्रीमती दर्बीफील्ड के पत्र द्वारा उसे टैस के लौटने का समाचार न मिलेगा, वह प्रतीक्षा करेगा। उनके पत्र से यह आशा हो रही थी कि वह शीघ्र ही लौटकर आने वाली है। इससे अधिक सुख तो उसे मिलना ही न चाहिए था। उसका प्रेम तो 'परिस्थितियों के बदलने पर बदलने वाला था।' वियोग में उसने कुछ अद्भुत अनुभव किए थे। प्राचीन लेखकों की जितनी प्रणय-कथाएँ उसने पढ़ी थीं, उन सब में यदि किसी प्रेमी ने अपनी प्रेमिका के प्रति दुर्व्यवहार किया था तो वह उसी प्रेमी से अपनी तुलना करने लगा। वह बार बार स्वयं से पूछता था कि टैस के सम्बन्ध में निर्णय करते समय उसने उसके गुणों पर ध्यान न देकर उसकी जीवनी पर क्यों ध्यान दिया; उसके मन की पवित्रता को न अपनाकर उसके कृत्य को क्यों महत्त्व दिया?

एक या दो दिन और व्यतीत हुआ। क्लेअर अपने पिताजी के मकान पर जोन दर्बीफील्ड के पत्र की प्रतीक्षा में रहा—जिसके बारे में जोन ने आश्वासन दिलाया था। इस बीच में उसने कुछ शक्ति भी प्राप्त कर ली। शक्ति तो पुनः आती जा रही थी पर जोन के पत्र का कहीं पता न था। तब उसने वह पुराना पत्र ढूँढ़ निकाला जो ब्रेजिल में उसके लिये भेजा गया था। टेस ने इसे फिफ्ट-क्यूम्ब ऐश से भेजा था। वह इसे पुनः पढ़ने लगा। इसमें लिखे गये वाक्य अब भी उसे उतने ही मर्म स्पर्शी लगे जितने कि वे पहली बार पढ़ते समय थे।

“ अपनी पीडा में मैं तुम्हारा ही ध्यान करती हूँ—मेरा और कौन है ?.....यदि तुम शीघ्र न आओगे या मुझे अपने पास न बुलाओगे—तो मैं सोचती हूँ कि मैं मर जाऊँगी। कृपया—कृपया—मेरे साथ न्याय न करिये—परन्तु थोड़ी दया अवश्य दिखलाइये..... अगर तुम आ जाओ, तो मैं तुम्हारे बाहु-पाश में सुख से मर सकूँगी। यदि तुम मुझे क्षमा कर दो—तो मुझे इस में भी सन्तोष होगा। यदि तुम एक छोटी पंक्ति में यह लिख कर भेज दोगे कि मैं जीवित ही आ रहा हूँ—तो एँजिल मैं सुख पूर्वक जीवित रह सकूँगी।...

सोचो तो सही मेरे हृदय में यह सोच कर कितनी पीडा होती है कि अब कभी भी तुम से भेट न हो सकेगी।.....यदि मैं प्रत्येक दिन में केवल एक लघु क्षण के लिये तुम्हारे हृदय में वैसी ही पीडा उत्पन्न करती होती, जैसी मेरे हृदय में प्रति दिन और हर समय होती रहती है—तो तुम अपनी एकाकिनी पर दया करना सीख जाते।..... मैं तुम्हारे साथ टहलनी बन कर भी सुखपूर्वक रह लूँगी—यदि पत्नी नहीं तो न सही।.....मैं तो तुम्हारे समीप रहना चाहती हूँ—दर्शन

की भूखी हूं—तुम्हें अपना सोचना चाहती हूं.....स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर मेरी एक ही कामना है— मेरे प्रिय ! तुम से मिलने की ! मेरे पास आइये तथा जो मुझे आशंकित करते हैं उन से मुझे बचाइये । ”

क्लेअर ने निश्चय किया कि अब वह टैस के दूसरे पत्र में प्रदर्शित अवहेलना में विश्वास न करेगा तथा जाकर तुरंत ही उसे खोज निकालेगा । उसने अपने पिताजी से पूछा कि क्या टैस ने कभी उसकी अनुपस्थिति में कुछ रुपया मंगवाया था । उसके पिता ने नकारात्मक उत्तर दिया । और तब पहली बार क्लेअर की समझ में यह बात आई कि टैस के स्वाभिमान ने उसे यहां आने से रोका है तथा उसने बहुत सी कठिनाइयां झेली हैं । क्लेअर के कथनों से उसके मातापिता भी दोनों के अलग रहने का सत्य कारण जान गये । उनका ईसाई धर्म इतना उदार था कि टैस के प्रति जो सद्भावना उसके वंश, उसकी सरलता तथा उसकी निर्धनता ने भी न उत्पन्न कर पाई थी, वह उसके पाप ने उत्पन्न करदी क्योंकि पाप-शमन ही उनका मुख्य कार्य था ।

जब वह शीघ्रता में अपना सामान बांध रहा था तो एक मद्दा लिखा हुआ पत्र भी मिला—वही जो मेरिअन और इजहुवेत ने भेजा था जिस का प्रारंभ इस प्रकार था—“ आदरनीय श्रीमान्—अपनी पत्नी की चिन्ता करो—यदि तुम उससे उतना ही प्रेम करते हो जितना वह तुमसे करती है । ” और जिस पर दो शुभ-चिन्तकों के हस्ताक्षर थे ।

लगभग पन्द्रह मिनट उपरान्त क्लेअर घर से चल दिया। उसकी माता ने उसके दुबले-पतले शरीर को सड़क के मोड़ पर विलीन होते विलोका। क्लेअर जानता था कि घर के लिए वृद्ध घोड़ी कितनी काम की है अतएव उसने अपने पिता से उसे न मांगा था। वह सीधा मराय में पहुँचा तथा एक घोड़ा-गाड़ी किंग्थे पर ले ली। घोड़ा जोतने में जो समय लग रहा था, वह उसके लिये असह्य था। थोड़े ही मिनट में वह उस गांव के बाहर गाड़ी में बैठकर उस पहाड़ी पर चढ़ रहा था जिस पर तीन या चार माह पूर्व इसी वर्ष टैम इतनी आशाओं को लेकर उतरी थी तथा अपनी अमफलता के पश्चात् पुनः चढ़ कर लौट गई थी।

गली का मौन्दर्य, उसकी झाड़ियाँ और वृक्ष—जो कलियों के कारण बैंगनी बन रहे थे—सब उसके सामने थे परन्तु उसका ध्यान कहीं अन्यत्र था। वह मार्ग के दृश्य की केवल उतनी ही चिन्ता कर रहा था जितनी से उसके मार्ग भूल जाने की भँजावना उमन्न न हो। लगभग डेढ़ घंटे में वह बहुत सा मार्ग तै कर उस वरुमवाले हाथ के समीप आगया था जहाँ एलैक दरबरविल ने अपने सुधारकपने की धुम में टैम को एक शपथ लेने पर विवश किया था कि वह (टैम) कभी जान-बूझ कर उसका चित्तापहरण न करेगी। गतवर्ष के पीले तथा सूखे फल अब भी बहुत सी वन्मृरियों में झूल रहे थे तथा उनकी जड़ों के समीप इस बसन्त ऋतु के हरे फल भी लगते जा रहे थे।

तब वह उस पठार के किनारे-किनारे चला जो उस मैदान को झाँक सा रहा था—जहाँ से वह अभी आरहा था। फिर वह दाहिनी ओर खड़ा तथा शीघ्र ही फिल्लिट-कूम्ब ऐश से मिलते हुए प्रदेश में यात्रा

कर रहा था। अपने एक पत्र में टैस ने यहीं का पता लिखा था और वह समझता था कि उसकी माता ने जिस स्थान पर टैस के जाने का संकेत अपने पत्र में किया है; वह यही स्थान होगा। परन्तु यहाँ भी टैस उसे न मिली। जिस बात ने उसकी निराशा और भी बढ़ा दी वह यह थी कि वहाँ के निवासियों ने या उस कृपक ने 'श्रीमती क्लेअर' का कभी नाम तक न सुना था। वे लोग टैस को तो पहचानते थे। यह प्रत्यक्ष था कि उससे बिछुड़ कर फिर कभी टैस ने अपने नाम के साथ उसके नाम का प्रयोग नहीं किया। इससे भी अधिक प्रमाण उन दोनों के संपूर्ण पृथक्त्व का यह था कि टैस ने उसके पिता से धन मँगवानेकी अपेक्षा अनेकों कष्ट झेलना ही अधिक उपयुक्त समझा था। टैस के इन कष्टों का परिचय उसे यहाँ आकर पड़ली बार ही मिला था।

यहाँ लोगों ने उसे बतलाया कि टैस दर्बीफील्ड विना उचित सूचना दिये ही वहाँ से अपने माता-पिता के घर कृष्ण-उपत्यका के उस ओर चली गई थी। अब क्लेअर के लिये श्रीमती दर्बीफील्ड का पता लगाना आवश्यक हो गया। उसने लिखा था कि वह मारलत में नहीं थी लेकिन वास्तव में वह कहाँ थी—इस विषय में वह पूर्णतया मौन थी। अब उसके लिए एक ही मार्ग था—मारलत जाकर उसकी पूछ-ताछ करना। वही कृपक जो टैस के प्रति इतना निष्ठुर था, क्लेअर से बातचीत में अत्यन्त मृदुभाषी बन गया था। उसने एक घोड़ा तथा एक सेवक क्लेअर को मारलत तक पहुंचाने को दे दिया। जिस बग्वी में बैठकर वह यहाँ तक आया था वह एमिन्स्टर वापस चली गई क्यों कि उसका घोड़ा दिन भर से अधिक काम न दे सकता था और यहाँ तक आते-आते वह अबाध पूर्ण हो चुकी थी।

क्लेअर ने उसे कृषक की सवारी का प्रयोग उपत्यका के बाह्य-भाग तक ही किया तथा बाद में उसे उस सेवक के साथ लौटा दिया। वह स्वयं एक सराय में पहुँचा जो उसकी प्रिय टैस का जन्म-स्थान था। अभी वर्ष का शैशव ही था अतएव वनों में नूतन पलहवाँ के अनेकानेक रंग विद्यमान न थे : कहने को तो वसन्त-ऋतु आचुकी थी ; फिर भी यह दृश्य क्लेअर की आशाओं के अनुरूप ही था ।

वह घर जिसमें टैस ने अपना शैशव व्यतीत किया था अब किसी अन्य परिवार का निवास-स्थान बन गया था। यह लोग टैस के विषय में कुछ भी न जानते थे। उद्यान में नये लोग थे, जिन्हें अपने कार्य में ऐसा आनन्द मिल रहा था मानों यह उद्यान सदैव से उन्हीं लोगों के पाम था तथा इस में कभी कोई दूसरा रहता ही न था। उनके लिये इस उद्यान का इतिहास किसी मूर्ख का प्रलाप था। इस उद्यान के मार्गों में वे अपने कार्यों से सम्बन्धित विचारों सहित इधर से उधर घूमते थे तथा उनका प्रत्येक कार्य उनके पहले यहां के निवासियों की छाया को दुःखप्रद प्रतीत होनेवाला था। वे ऐसी बातें करने मानों जिन दिनों वहां टैस रहती थी, उन दिनों उस स्थान का कुछ भी महत्त्व न था। उन लोगों के ऊपर तरुओं की शाखाओं में वसन्त के पक्षियों का गायन भी यथाविधि होता रहता था मानों उन्हें भी इनका कुछ भी ध्यान नहीं है कि यहां से कोई विशेष व्यक्ति कहीं अन्यत्र चला गया है।

इन बहुमूल्य अवोधों से पूछने पर क्लेअर को पता चला कि जौन दर्बीफील्ड की मृत्यु हो गई है। इन लोगों की स्मरण-शक्ति के लिये अपने से पूर्व इसी मकान में रहने वालों के नाम स्मरण रखना भी एक कष्टप्रद कार्य था—फिर भी थोड़ा-बहुत पता तो लग ही गया।

उन्होंने बतलाया कि दर्वीफील्ड की विधवा और उनकी सन्तान मारलत छोड़कर चले गये हैं : यहां तो वे यह कह कर गए थे कि राजाबाड़ी में रहेंगे परन्तु वे किसी दूसरी जगह चले गए हैं जिस का नाम लोगों ने बतलाया तो था । इस अवसर पर इतनी ही देर में क्लेअर को उस मकान के प्रति घृणा हो गई क्योंकि टैस उस में नहीं थी । वह एक बार भी उधर लौट कर देखे बिना ही वहां से शीघ्र ही चला आया ।

उसका मार्ग उसी खेत के समीप होकर था जहां कि उसने एक बार टैस को नृत्य करते हुए देखा था । यह दृश्य भी उसे उतना ही बुरा लगा, जितना उस घर का—बल्कि यह तो और भी बुरा प्रतीत हुआ । आगे चलकर वह कब्जिस्तान में आया जहां उसने नवीन-स्थापित पत्थरों में एक पत्थर दूसरे से अधिक आकर्षक देखा । उस पर लिखा हुआ था :

जौन दर्वीफील्ड की स्मृति में—वास्तव में जो दरबरविल थे—किमी समय इस नाम का एक यशस्वी परिवार था—विलियम विजयी के सरदारों में मर एगन दरबरविल नामक जो विख्यात सरदार था—उसी के वंशज । मृत्यु-तिथि १० मार्च, १९— ।

शक्तिशाली का पतन कैसा होता है ।

एक व्यक्ति ने, जो देखने में कब्जिस्तान का चौकीदार प्रतीत होता था, क्लेअर को वहां खड़ा हुआ देख लिया और वह क्लेअर के समीप चला आया । “ अरे श्रीमान्—यह एक ऐसे महाशय थे जो यहां दफनाया जाना पसन्द न करते थे । वह चाहते थे कि उन्हें राजा-बाड़ी में दफनाया जावे, जहां कि उनके पूर्वज थे । ”

“ और लोगों ने उनकी इच्छा-पूर्ति क्यों न की ? ”

अरे साहब, रुपया कहाँ था ! ईश्वर आपकी आत्मा को सुखी रखे ! श्रीमान्—मैं हर एक से तो यह बात नहीं कहता लेकिन सच मानियें—यह पत्थर जो यहाँ लगा है, उसका दाम भी तो अब तक नहीं चुकाया गया है ; लिखा तो इस पर न जाने क्या-क्या है ! ”

“ अच्छा ! फिर इसे लगाया किसने था ? ”

चौकीदार ने गांव के मिस्री का नाम बतला दिया और कब्रिस्तान से निकल कर क्लेअर उस मिस्री के घर आया । उसे पता चला कि यह कथन सत्य है तथा उसने उस का हिसाब चुका दिया । यह कार्य समाप्त कर वह प्रवासियों की खोज में चल दिया ।

पैदल चन्ने के लिये तो दूरी अधिक थी परन्तु क्लेअर की इच्छा एकान्त में रहने की इतनी प्रबल थी कि न तो उसने कोई गाडी ही किराये पर ली और न घूम कर किसी रेल्वे स्टेशन पर ही आया, जहाँ से वह सुगमतापूर्वक निर्दिष्ट-स्थान तक पहुँच सकता था । शास्तव पहुँचने पर उसने अनुभव किया कि उसे गाडी किराये पर लेनी ही पड़ेगी ; परन्तु मार्ग ऐसा बिकट था कि वह संध्या के सात बजे के पूर्व जोन के निवास-स्थान पर न पहुँच सका । मारलत से निकल कर वह बीस मील से कुछ अधिक ही चल चुका था ।

गांव छोटा था इस लिए उसे श्रीमती दर्वीफील्ड का स्थान खोजने में अधिक श्रम न करना पडा । वह एक दीवारों से घिरे हुए उद्यान में स्थित मकान में रहती थीं—जो बड़ी सड़क से दूर था । वह अपना छोटा-बड़ा सभी सामान यहीं ले आई थीं—तथा जैसे—कुछ वहाँ उसे रखा जा सका था—वैसे जमा लिया था । यह तो स्पष्ट था कि किसी कारण वश वह नहीं चाहती थीं कि क्लेअर वहाँ आकर उन

से मिले। वहां जाकर उनमें बैठ करने का प्रयास क्लेअर को उनकी शान्ति-भंग करने के समान लग रहा था। श्रीमती स्वयं उसके बुलावे के प्रत्युत्तर में द्वार पर आगई तथा सान्ध्य-कालील गगन का प्रकाश उनके अग्नन पर पड़ा।

यह पहला ही अवसर था जब कि क्लेअर ने उनको देखा था; परन्तु वह अपने विचारों में ऐसा लीन था कि उसने केवल यही जान पाया कि आदरास्पद विधवा के रूप में भी वे सम्प्रति एक सुन्दरी थीं। क्लेअर को विवश होकर स्पष्ट करना पड़ा कि वह टैस का पति था। इसके अतिरिक्त उसने अपने वहां तक आने का प्रयोजन भी बतलाया तथा इन सभी बातों में उसे कुछ वेतुकापन लग रहा था। अन्त में उसने कहा—“ मैं तुरन्त ही टैस से मिलना चाहता हूँ। आप ने मुझ को लिखा था कि शीघ्र ही आप दूसरा पत्र भेजेंगी परन्तु आपने वह भेजा नहीं। ”

“ क्योंकि वह तब से घर आई ही नहीं। ” जोन बोली।

“ क्या आप जानती हैं कि वह स्वस्थ है ? ”

“ मैं तो नहीं जानती। श्रीमान—यह बात तो आपको ज्ञात होना चाहिये। ” उसने उत्तर दिया।

“ मैं इसे स्वीकार करता हूँ। वह कहां ठहरी है ? ”

वार्त्तालाप के आरंभ से ही जोन के मन की चिन्ता उसके कपोल पर स्थित उसके एक कर द्वारा स्पष्ट होती रही थी।

“ मुझे—ठीक नहीं मालूम कि वह कहां ठहरी है। ” उसने उत्तर दिया। “ वह थी तो—लेकिन—”

“ वह कहां थी ? ”

“ लेकिन अब वो वहां नहीं है । ”

अपने उत्तर में कोई स्पष्ट बात न कहने की इच्छा ने उसे पुनः मौन बना दिया । अब तक छोटे बालक भी द्वार पर आगये थे । यहां आकर अपनी माता का अंचल खींचते हुए उन में से सब से छोटे ने पूछा—

“ क्या यही महाशय टैस से विवाह करने वाले हैं ? ”

“ उसने तो टैस से विवाह कर भी लिया । तुम लोग अन्दर जाओ । ” वह धीरे से बोली ।

क्लेअर ने उसकी निरुत्तरता का प्रयास समझ लिया और उसने पूछा—

“ क्या आप समझती हैं कि टैस यह चाहती है कि मैं प्रयत्न करके उसे ग्वाज निकालूँ ? यदि नहीं— तो सचमुच— ”

“ मैं तो नहीं समझती कि वह अब भी यह चाहती होगी । ”

“ क्या आपको विश्वास है ? ”

“ मुझे विश्वास है कि वह अब कभी न इस बात को पसन्द करेगी । ”

क्लेअर प्रस्थान के लिये उद्यत था ; तब उसे टैस के कोमल-भावना युक्त पत्र की याद आई ।

“ मुझे विश्वास है कि वह मेरी चिन्ता करेगी । ” उसने आवेश में आकर उत्तर दिया । “ मैं टैस को आपसे अधिक पहचानता हूँ । ”

“ यह बहुत संभव है, श्रीमान् ! क्योंकि मैं तो कभी भी उसे पूर्णतया नहीं समझ पाई । ”

“ श्रीमती दर्बीफील्ड मुझे उसका पता बतला दीजिये । आप एक अभागो मनुष्य पर बड़ा अनुग्रह करेंगी ? ”

टैस की मां ने फिर अपने कर से अपने कपोल का बार-बार स्पर्श किया और अन्त में यह देख कर कि क्लेअर बहुत व्यथित है उसने अन्त में धीमें स्वर में कहा—

“ वह सैण्डबोर्न में है । ”

“ हां—उस नगर में कहां ? लोग कहते हैं कि सैण्डबोर्न तो अब एक बड़ा नगर बन गया है । ”

“ इस से अधिक तो मुझे भी कुछ पता नहीं है । मैं भी केवल सैण्डबोर्न ही जानती हूँ । मैं स्वयं तो कभी वहां गई नहीं । ”

यह स्पष्ट था कि इस सम्बन्ध में ज्ञान सत्य ही बोल रही थी तथा उसने अब इस विषय में उससे और कोई प्रश्न न पूछा ।

“ क्या आपको किसी वस्तु की आवश्यकता है ? ” क्लेअर ने विनम्रता के साथ पूछा ।

“ नहीं श्रीमान—” उसने उत्तर दिया । “ हमारे पास अब तो सभी व्यवस्था है । ”

घर में प्रवेश किये बिना ही क्लेअर वहां से चल दिया । तीन मील की दूरी पर एक स्टेशन था । अपने गाडीवान को किराया देकर वह पैदल ही स्टेशन की ओर खाना हुआ । सैण्डबोर्न के लिये अन्तिम गाडी कुछ देर पश्चात् ही छूटती थी और उस दिन वह क्लेअर को भी बिठाकर ले चली ।

उस रात्रि में ११ बजे वह सैण्डवौर्न की गलियों में चक्कर लगा रहा था। उसने एक होटल में अपने शयन की व्यवस्था करली थी और यहां आकर तुरन्त ही तार द्वारा अपने पिता को अपने नवीन पते की सूचना भेज दी थी। अब कहीं आवाज देने या किसी से घर पूछने का समय न था अतएव उसने यह कार्य प्रभात के लिये स्थगित कर दिया। परन्तु वह अब भी सोने को उद्यत न था।

यह सुन्दर स्थल, जहां रेल के इंजन जल ग्रहण करते थे—उसे ऐसा प्रतीत होता था मानों किसी जादूगर या परी ने अपनी छड़ी घुमाकर एक क्षण में ही विरच दिया है। इसके पूर्व तथा पश्चिम में स्टेशन बने थे—जिनमें ऊँचे खंभों पर डल संकलित था : चीड़ के वृक्ष-समूह; सुन्दर खुले दृश्य तथा गुप्त उद्यान सभी इसे अप्सराओं का क्रीडा-स्थल प्रमाणिक करते थे जिस पर कुछ धूल छा गई थी। समीप ही पूर्व की ओर इगडन के जंगल का भाग था जहां कुछ भी न उगता था तो भी उस प्राचीन अनुर्वर भाग के एक किनारे पर ही ऐसी अद्भुत वस्तु—यह आनन्द—नगर उत्पन्न हो गया था। इस नगर की सीमाओं से प्रत्येक दिशा में एक मील के उपरान्त पूर्व-ऐतिहासिक काल की स्थिति सम्प्रति विद्यमान थी। भूमि ज्यों की त्यों पड़ी थी—मार्गों में कोई सुधार न हुआ था तथा सौजर के समय से अब तक यहां किसी भी किसान ने एक कूँड तक न जोता था। फिर भी यह आनन्द-नगर यहीं बन गया जैसे किसी महात्मा को यकायक तैय्यी प्राप्त हो गई थी; और ठेस भी यहीं आकर्षित होकर आगई थी।

इस प्राचीन संसार में स्थापित नूतन संसार के चक्करदार मार्गों में, अर्द्ध-रात्रि में जलते हुए दीपकों के प्रकाश में वह—पेड़ों के मध्य में, तारागणों के नीचे—ऊँची-ऊँची छतें, चिमनियाँ, झरोखे तथा मीनारें देख रहा था जो उस स्थान में निर्मित घरों से सम्बन्धित थीं। यह एक ऐसा नगर था जिसके घर एक दूसरे से पृथक थे। अंग्रेजों ग्वाडी के किनारे यह रूपसागर की जलवायु का निवास-स्थान था। और रात में तो यह जैसा था उस से भी कुछ अधिक ही आकर्षक जैचता था।

समुद्र समीप ही था—नगर वह किसी भी प्रकार से विघ्न डालने वाला न था। उसकी जो धीमी आवाज सुन पड़ती थी उसे क्लेशर चीड़-वन का शब्द समझता था। लगभग इसी प्रकार का मर्मर उसे चीड़-वन से भी सुन पड़ता था और वह समझ रहा था कि समुद्र उस श्रोत है।

ऐस यहाँ कहाँ होगी ? वह तो कुटियाँ में पड़ी हुई बालिका है। उसकी नवयुवती पत्नी कहाँ होगी ? यहाँ तो सम्पत्ति और फैशन का साम्राज्य है। जितना ही अधिक वह इस सम्बन्ध में सोचता था, उतनी ही उसके चित्त की चिन्ता अधिक बढ़ती जाती थी। क्या यहाँ कुछ गायें भी थीं जिनके दोहन के लिये टैम यहाँ आगई हो ? यहाँ कोई खेल तो ऐसे न थे जिनमें जुताई होती हो। अधिक सम्भव था कि वह यहीं किसी विशाल भवन में कुछ स्फुट कार्य करने के लिये रख ली गई हो। इन्हीं विचारों में निमग्न वह घूमता रहा। प्रत्येक शयन-कक्ष की खिड़की से आनेवाले प्रकाश पर उसकी दृष्टि पड़ती थी; परन्तु अब तो वह भी एक-एक कर बुझते जा रहे थे। वह सोचता था कि न जाने कौन सा इस में टैस के घर का होगा।

अनुमान लगाना व्यर्थ था और ठीक बारह बजे के पश्चात् वह घर में आकर लेट रहा । अपने कक्ष का दीपक बुझाने के पूर्व उसने टैस के भाव भरे पत्र को एक बार पुनः पढ़ा । कैसे भी वह उस रात्रि में सो न सका । टैस के वह इतने समीप आकर भी इतनी दूर था । वह बार-बार अपनी खिडकी का पर्दा हटा कर बाहर के मकानों के पिछले भागों को देखता था । वह सोचता था कि न जाने कौनसी खिडकी के पीछे वह इस समय सो रही होगी ।

वह लगभग समस्त रात्रि बैठा ही रहा होगा । प्रभात में सात बजे वह उठा और कुछ क्षण के उपरांत ही वह बाहर चला गया । वह बड़े डाकघर की दिशा में चला । द्वार पर एक बुद्धिमान डाकिया से उसकी भेंट हुई जिसके हाथ में प्रभात में बटनेवाले पत्रों का समूह था ।

“ क्या तुम किसी श्रीमती क्लेअर का पता जानते हो ? ”
 अँजिल ने पूछा ।

डाकिया ने शिर हिला दिया ।

तब उसे स्मरण आया कि टैस अपना कुँआरपन का नाम ही अधिक उपयुक्त समझ रही होगी । अब क्लेअर ने कहा कि “ क्या आप कुमारी दर्बीफील्ड का पता जानते हैं ? ”

“ दर्बीफील्ड ! ”

जिस डाकिया से बातचीत हो रही थी, उसके लिये यह नाम भी अपरिचित था ।

“ श्रीमान् ! आप जानते हैं कि यहां नित्य ही नये-नये यात्री आते-जाते रहते हैं और बिना घर का पता जाने उन को खोज लेना असंभव ही है । ” वह बोला ।

इसी समय उसका एक साथी उधर से शीघ्रता में निकला ।
यही नाम उसके सामने भी दहराया गया ।

“ मैं दर्बीफील्ड नाम के तो किसी भी व्यक्ति को नहीं जानता ।
परन्तु एक बंगले में जिसे ‘हेरन’ कहते हैं एक महाशय दरबरविल नाम
के रहते हैं । ” उस दूसरे ने कहा ।

“ वही है—वही है । ” क्लेअर ने जोर से कहा । यह जान
कर उसे प्रसन्नता हुई कि टैस ने अपना पुराना शुद्ध नाम ग्रहण कर
लिया है । “ यह ‘हेरन’ किधर है ? ”

“ बड़ा सुन्दर भवन है । परन्तु यहां तो सब ऐसे ही भवन हैं । ”

क्लेअर को पर्याप्त सूचना मिल गई जिसके द्वारा वह बंगला
खोज सके । वह वहां ठीक उसी समय पर पहुंचा जब कि दूधवाला दूध
लेकर आया था । ‘हेरन’ वैसे तो एक साधारण बंगला था परन्तु विल्कुल
एकांत में निर्मित होने के कारण ऐसा स्थान न प्रतीत होता था—जहां
कोई निवास करना पसन्द करे । देखने में भी वह पूर्णतया एकाकी
प्रतीत होता था । उसे आशंका थी कि बेचारी टैस यहां टहलिनी होगी
तथा वह दूध लेने उस दूधवाले के पाम पीछे के द्वार पर आवेगी ।
पहले उसका विचार उधर ही जाने का हुआ । फिर भी अपनी आँ-
काओं में लीन वह सामने के द्वार पर ही आया तथा उसने घंटी बजा
दी ।

अभी बहुत दिन न चला था । गृहस्वामिनी ने स्वयं आकर
द्वार खोला । क्लेअर ने पूछा कि वहां कोई टैसा दरबरविल या
दर्बीफील्ड हैं ।

“ श्रीमती दरबरविल ? ”

“ हां । ”

तब तो टैस ने विवाहित-स्त्री का नाम अपना लिया था । उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई यद्यपि वह देख रहा था कि इस नाम में उसका नाम संयुक्त नहीं है ।

“ क्या आप दया करके उन्हें सूचना देवेगी कि उनके कोई सम्बन्धी उनसे मिलने को उत्सुक हैं । ”

“ अभी तो बहुत सवेरा है । श्रीमान—मैं उन्हें क्या नाम बतलाऊं ? ”

“ ऐंजिल । ”

“ महाशय ऐंजिल ? ”

“ नहीं— केवल ऐंजिल कहिये । यही मेरा नाम है । वह समझ जायगी । ”

“ यदि वह जाग रही होगी—तो मैं अवश्य सूचित करूंगी । ”

वह सामने के कक्ष में ले जाया गया जो कदाचित्त भोजन-कक्ष था । वहां बैठकर वह पर्दों के बाहर स्थित लान को निहारने लगा जिस पर पुष्प तथा बेलें लगी थीं । प्रत्यक्ष ही टैस की स्थिति वैसी बुरी न थी

जैसी उसने कल्पना की थी । उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि इतना सुखप्रद जीवन व्यतीत करने के लिये संभव है टैस ने वह जवाहरात प्राप्त कर बेच डाली हो । इसके लिये उसने टैस को क्षणमात्र के लिए भी दोषी नहीं ठहराया । तुरन्त ही उसके स्वरग्राही श्रवणों ने सीडियों पर पग-ध्वनि सुनी । यह सुनकर उसके हृदय की गति ऐसी कष्टप्रद हो गई कि उसके लिये सीधा खड़ा रहना कठिन हो गया ।

“ मेरी प्रिया ! मेरी उस परिवर्तित अवस्था में वह मेरे विषय

में क्या सोचेगी ? ” उसने अपने मन में सोचा । इसी समय द्वार खुला ।

टैस द्वार में दिखलाई दी । उसका दर्शन क्लेअर की आशा के सर्वथा प्रतिकूल था । तो भी उसका दर्शन वास्तव में आश्चर्य चकित बनाने वाला था । उसका महान स्वाभाविक सौंदर्य यदि इस नवीन वेश में बढ नहीं गया था तो कम से कम पूर्णतया निखर तो आया ही था । वह एक ढीली कश्मीरे की भूरे श्वेत रंग की गाडन पहने थी जिस पर कुछ गंभीरता लिये हुए कलावतू का काम किया हुआ था । उसके पैरों के स्लीपर भी उसी रंग के थे । उसकी गर्दन एक मुँदर गोल मफलर के ऊपर शोभित थी तथा उसके काले-भूरे केश कुछ तो एक जूड़े की भांति शिर के समीप ही गुम्फित थे तथा कुछ कंधों पर लटक रहे थे । प्रत्यक्ष ही यह शीघ्रता में बाहर निकल आने का परिणाम था ।

क्लेअर ने अपने हाथ आगे बढ़ाए मगर वे पुनः अपनी पुरानी स्थिति में आगए क्यों कि टैस आगे बढ़कर उन तक न आई थी ; अब तक उसी द्वार में शांत खड़ी थी । क्लेअर अब केवल एक पीत कलेवर के रूप में अवशिष्ट था ; उसे ध्यान आया कि अब उन दोनों में कितना अन्तर है ; वह सोचने लगा कि इस परिवर्तित दशा में टैस को उसकी शक्ल से घृणा है ।

“ टैस ! ”—उसने खिन्न-भाव से कहा—“ क्या तुम मेरे तुम्हें छोड़कर चले जाने का अपराध क्षमा कर दोगी ? क्या तुम मेरे समीप नहीं आ सकती ? तुम ऐसी कैसे बन गई ? ”

“ अब तो बहुत विलम्ब हो गया । ” टैस ने कहा । उसका स्वर उस क्षण में कठोर सा प्रतीत हो रहा था तथा उसकी आंखों में अस्वाभाविक चमक थी ।

“ मैं ने तुम्हारे सम्बन्ध में उचित विचार न किया । मैं ने तुम्हारा वास्तविक स्वरूप न पहचाना—” क्लेअर ने अपना तर्क उसके सामने रखा । “ मैं ने तब से अब तक बहुत कुछ सीख लिया है । मेरी परमप्रिय टैस ! ”

“ अब तो बहुत विलम्ब होगया । बहुत विलम्ब हो चुका है । ” उसने हाथ हिलाकर अपने चित्त की अधिरता व्यक्त की ; इस समय मानों उसके कष्ट का एक-एक क्षण उसे एक घंटे के समान प्रतीत हो रहा था । “ एँजिल ! अब तुम मेरे समीप न आना । नहीं, तुम्हें न आना चाहिये । दूर ही रहो । ”

“ लेकिन मेरी प्रिय पत्नी ! क्या तुम इस कारण मुझ से प्रेम नहीं करती हो कि मैं बीमारी के कारण ऐसा शिथिल हो गया हूं । तुम ऐसी मनचली तो नहीं हो ; मैं तो केवल तुम्हारे ही लिये यहा आया हूं । अब मेरे माता-पिता भी तुम्हारा स्वागत करेंगे । ”

“ हां—यह ठीक है—हां । लेकिन मैं कहती हूं—मैं कहती हूं कि अब तक बहुत देर हो चुकी है । ”

स्वप्न में जब कोई व्यक्ति भागना चाहता है, तो वह इच्छा होते हुए भी भाग नहीं पाता । टैस की भी इस समय यही दशा थी । “ क्या तुम्हें सब हाल मालूम नहीं है ? क्या तुम यह नहीं जानते ? यदि तुम सब हाल नहीं जानते, तो यहां तक तुम आये ही कैसे ? ”

“ मैं ने इधर-उधर पूछा तो मार्ग का पता चल गया । ”

“ मैं ने तुम्हारी बहुत समय तक प्रतीक्षा की । ” टैस ने कहा । उसके स्वर्णों में यकायक पुरानी करुणा छा गई । “ लेकिन तुम न आएं ! वह बराबर कहता रहता था कि तुम अब कभी न आओगे । और मैं

भी ऐसी मूर्ख थी कि उसकी बात मान ली । पिताजी की मृत्यु के पश्चात् वह मुझ पर बड़ा दयालु था ; मेरी माता तथा हम सब पर उसने बड़ी दया की । वह—”

“ मेरी समझ में नहीं आता । ”

“ उसने मुझ पर पुनः विजय प्राप्त कर मुझे अपने समीप बुला लिया है । ”

क्लेअर उनकी ओर उत्सुकता से देख रहा था । तब उसका आशय समझकर वह सहम कर पीछे हटा तथा उसकी दृष्टि संज्ञाहीन हो गई । क्लेअर की दृष्टि अब टैस के हाथों पर पड़ी जो किसी समय गुलाबी थे । आज वे श्वेत और अधिक कोमल प्रतीत हुए ।

टैस ने फिर कहा—

“ वह ऊपर ही है । मैं उस से अब घृणा करती हूँ क्योंकि उसने मुझ से झूट बोला । उसने कहा था कि तुम नहीं आओगे ; और तुम आ गये । यह कपड़े उसने ही मुझे पहनाये हैं । अब मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि उसने मेरे साथ क्या व्यवहार किया ! लेकिन क्या तुम चले जाओगे ? एँजिल, कृपया अब यहाँ कभी न आना । ”

वे दोनों अपने-अपने स्थान पर जखत खड़े थे । उनके मिलना-धत हृदयों पर प्रतिबन्ध था तथा वे आँखों द्वारा जिस सुख-शून्य वातावरण को झाँक रहे थे उसे देखना भी एक दयनीय दृश्य था । दोनों किसी ऐसी वस्तु की खोज में थे जो उनकी इस वास्तविक परिस्थिति से रक्षा कर सके ।

“ अरे—इस में सब मेरा ही अपराध है । ” क्लेअर ने कहा।

लेकिन वह इससे अधिक कुछ न कह सका । कथन के द्वारा

भी मौन से अधिक कुछ भाव व्यक्त न हो सकते थे। परन्तु उसे एक एक बात का कुछ अस्पष्ट ज्ञान हुआ यद्यपि यह बात बहुत देर बाद तक पूर्णतः उसकी समझ में न आई थी। वह यह थी कि उसकी पहले की टैस ने उस शरीर को जो क्लेअर के सामने खड़ा था—अपनी आत्मा से अपना मानना बन्द कर दिया था। टैस ने उसे मृत मान कर जहाँ चाहे वहीं भटकने को स्वतंत्र छोड़ दिया था; वह चाहे जिस दिशा में जावे, टैस को जीवित इच्छाओं से उसका कुछ भी सम्बन्ध न था।

कुछ क्षण और व्यतीत हुए और उसने देखा कि टैस चली गई। क्लेअर का आनन और भी ठंडा और सँकुचित बन गया; वह एक-दो क्षण तक वहीं विचार-निमग्न खड़ा रहा और एक या दो मिनट के उपरांत उसने स्वयं को सड़क पर चलते हुए पाया। वह किधर जा रहा था—इस का उसे कुछ भी ध्यान न था।

५६

श्रीमती ब्रक्स; जो 'हेरन' के बैंगले तथा उसके सब सुन्दर सामान की स्वामिनी थीं, उनका स्वभाव ऐसा न था कि हर एक बात को कौतूहल के साथ देखें। वह बेचारी महिला लाभ-हानी के अंक-गणितवाले राक्षस के बहुत दिनों तक आधीन रह चुकने के कारण सांसारिकता में ऐसी डूब गई थी कि कौतूहल को केवल कौतूहल के कारण अपनाना उसके लिये सम्भव न था। उसको केवल एक बात का ही कौतूहल रहता। जिस महाशय को उसके बैंगले में ठहरना है—उनकी जेब में कितना धन है—यही उसकी जिज्ञासा का मुख्य विषय था।

फिर भी ऍजिल क्लेअर का उसे भरपूर किराया देनेवाले किरायेदारों के यहां आना समय और ढंग की दृष्टि से एक ऐसी घटना थी, जिसने कि उसके स्त्री-सुलभ स्वभाव को पुनः जागरूक कर दिया। अपने किराये-दारों का वह श्रीमान व श्रीमती दरबारविल समझती थी परन्तु आज की घटना ने उसके चित्त में कुछ शंका उत्पन्न कर दी। वही महिला जिसे अपना बंगला किराये पर उठाकर किरायेदारों से केवल किराया प्राप्त करने को चिन्ता रहा करती थी आज कुछ सतर्क हो गई।

टैस ने अपने पति से द्वार में खड़े रह कर बातचीत की थी। वह भोजन-कक्ष में आई ही न थी। और श्रीमती ब्रूक्स अपनी बैठक के अधखुले द्वार में मार्ग के पीछे खड़ी रहकर उनकी बातचीत के अंश सुनती रही थी। उन दोनों दुःस्वित प्राणियों में कुछ विशेष बातचीत तो हुई भी न थी। उसने टैस को सीडियों पर चढ़कर ऊपर जाते सुना था और उसके पश्चात् क्लेअर का जाते समय सामने का द्वार बन्द करना भी उसने सुना था। तब ऊपर के कक्ष का द्वार बन्द हुआ और श्रीमती ब्रूक्स समझ गई कि टैस अपने कक्ष में पुनः चली गई। चून्कि वह नवयुवती पूर्णतया वस्त्र न पहने थी, श्रीमती ब्रूक्स जानती थी कि वह कुछ देर तक बाहर न निकलेगी।

इस विचार के अनुसार वह दबे पांव सीडियों पर चढ़ गई और सामने के कक्ष के द्वार में खड़ी हो गई। यह एक बैठक थी जो कि पीछे के शयन कक्ष से एक पर्द द्वारा पृथक की गई थी। यही भाग श्रीमती ब्रूक्स के बँगले में सर्वोत्तम था तथा इन लोगों ने साप्ताहिक किराये पर इसे लिया था। पिछला कमरा तो इस समय शांत था परन्तु बैठक में कुछ शब्द सुन पड़ता था।

तुमने न रोका । मेरे छोटे भाई-बहनों व मेरी माता की आवश्यकताओं का बहाना कर तुमने मुझे बहकाया ।.....और तुमने कहा कि मेरे पति कभी भी वापस न आवेंगे—कभी नहीं; और तुम मेरा उपहास बनाते थे और कहते थे कि मैं कैसी मूर्खा थी कि उसकी आशा लगाये थी ।.....और अन्त में मैं ने तुम पर विश्वास कर लिया और तुम्हारी बाल मान ली !.....और तब वह लौट कर आया ! अब वह वापस चला गया ! दूसरी बार गया और अब तो मैं उसे सदैव के लिये खो चुकी.....और अब तो वह मुझ से कुछ भी प्रेम न करेगा ; केवल तुम से घृणा करेगा । हां—मैं ने उसे फिर खो दिया—फिर—केवल तुम्हारे कारण । ” .

पीड़ा से व्यथित होकर जब वह हठ रही थी, तब उसका मुख द्वार की ओर होगया और श्रीमती ब्रुकम इस पर अंकित दुःख को पहचान सकी; उसके ओठ उसी के दांतों से कटकर रक्त बहा रहे थे तथा उसके बन्द नयनों की दीर्घ-वरुणियां उसके आर्द्र कपोलों पर चिपक रहीं थीं । वह कहती रही—“ और वह मर रहा है—ऐसा ही दिखाई देता है कि वह मरा जा रहा है.....और मेरा पाप उसे मार डालेगा—मुझे न मारेगा.....अरे ! तुम्हीं ने मेरे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला मुझे वही बना दिया जिसके न बनाने की मैं ने तुमसे दयापूर्वक प्रार्थना की थी ।.....मेरा अपना सच्चा पति कभी भी नहीं अब—कभी भी नहीं.....हे परमात्मा !.....मैं यह नहीं सहन कर सकती। मैं यह नहीं सह सकती ।

उस मनुष्य के कुछ और कटु शब्द सुन पड़े । फिर कुछ कपड़ों की खडखडाहट सुन पड़ी । वह उठकर खड़ी हो गई थी । श्रीमती

ब्रक्स ने समझा कि टैस झपट कर द्वार के बाहर आ रही है—इस लिए वह शीघ्रता से सीड़ियों के नीचे उतर गई ।

उसके लिये यह कहना आवश्यक न था क्योंकि बैठक का दरवाजा खोला न गया । परन्तु श्रीमती ब्रक्स उस जीने पर खड़े रह झांकना सुरक्षित न समझती थीं अतएव वे अपने नीचे के कमरे में आ गई ।

नीचे बैठकर छत की कोई बात मुनाई न देती थी, यद्यपि वे बहुत ध्यान लगाकर सुन रही थीं । इसके पश्चात् वे गसोईघर में जाकर अपना अधूरा छूटा हुआ नाश्ता समाप्त करने लगीं । वह इस प्रतीक्षा में थी कि कब उसके किरायेदार नाश्ता हटा लेजाने के लिये घंटी देते हैं । उसका विचार था कि आज वह स्वयं ही नाश्ता हलने जायगी और यदि संभव हुआ तो पता भी लगावेगी कि बात क्या है । सर के ऊपर उसने एक दो बार ऊपर के फर्श पर कुछ आइट सुनी जिससे किसी के चलने-फिरने का अनुमान होता था ; फिर कुछ कपड़ों की खड़खड़ाहट सुनी तथा सामने के द्वार को खुल कर पुनः बन्द होते हुए देखा तथा टैस का कलेवर फाटक पार कर सड़क पर जाते देखा । वह किसी सम्पन्न परिवार की नवयुवती महिला की भांति टहलने के बख्क पहनकर बाहर निकली थी । यही बख्क पहनकर वह किसी दिन यहां आई थी । हां—आज उसके टोप और काले परों पर एक घूँघट-सा पड़ा हुआ था—यही नवीनता थी ।

श्रीमती ब्रक्स ने अपने किरायेदारों में आपस में एक दूसरे से क्षणिक अथवा किसी भी प्रकार की विदा लेने का कोई शब्द न सुना था । या तो उन दोनों में झगडा हो गया था या श्रीमान दरबारविल

अब भी सो रहे थे क्योंकि जल्द तो वह कभी भी न जागते थे ।

श्रीमती अपने पीछे के कमरे में चली गई ; यह कमरा विशेष रूप से उन्हीं का था । यहां उन्होंने अपना सोना जारी रखा । महिला किरायेदार लौटी नहीं और न उस व्यक्ति ने ही घंटी बजाई । श्रीमती ब्रक्स इस विलम्ब के कारण पर विचार करती रहीं तथा सोचती रहीं कि जो महाशय आज मिलने आये थे, उनका इन ऊपर के निवासियों से क्या सम्बन्ध हो सकता है । इसी विचार में लीन वे अपनी कुर्सी पर झुक गई ।

ऐसा करने में उनकी आंखों बार-बार छत की ओर जाती थीं । वहां उन्होंने छत की श्रैतता से मध्य एक धब्बा देखा जिस पर पहले कभी उनकी निगाह न पड़ी थी । पहले जब उनकी निगाह इस पर पड़ी, तो वह बहुत नन्हा था परन्तु शीघ्र ही वह बढ कर उसकी हथेली के बराबर होगया और तब उन्होंने देखा कि वह लाल है । वह चौकोर छत तथा उसके मध्य में यह लाल धब्बा मिल कर एक विशाल के पान का इक्का बना रहे थे ।

अब श्रीमती ब्रक्स की चिंता बढ गई । वह अपनी मेज पर चढ़ी तथा अपनी अंगुली से छत के इस धब्बे को छुआ । वह गीला था तथा श्रीमती ने अनुमान लगाया कि वह रक्त था ।

मेज से उतर कर वह कमरे से बाहर आई तथा ऊपर गई । उनका विचार ऊपर के कमरे में जाने का था जो कि बैठक के पार्श्व में शयन-कक्ष था । लेकिन अब उनके हाथ-पांव ऐसे फूल गये थे कि उस कक्ष के द्वार की मुठिया ही उनसे न घूम सकी । उसने ध्यान से सुना । अन्दर की मृत्यु जैसी शांति केवल एक नियमित आहट से भंग हो ही थी ।

टप, टप, टप ।

श्रीमती ब्रुकम झपट कर नीचे आई । उन्होंने सामने का द्वार खोला और सड़क पर दौड़ आई । उसका परिचित एक व्यक्ति जो समीप के बंगले में काम कर रहा था उधर से जा रहा था । उन्होंने उस से प्रार्थना की कि वह उनके साथ उनके घर के ऊपरी भाग में चले क्योंकि उ हैं भय था कि उनके किरायेदार को कुछ होगया है । वह पुरुष राजी हो गया तथा उनके साथ उनके घर आया ।

श्रीमती ने बैठक का द्वार खोला तथा पीछे खड़ी होगई । जब पहले वह व्यक्ति बैठक में आगया तो उसके पीछे उन्होंने ने भी कक्ष में प्रवेश किया । यह कमरा तो खाली था । मेज पर अबतक बहुत सा नाश्ता अछूता पड़ा था—काफी—अंडे व शीतल द्रव, सभी ज्यों के त्यों रखे थे जैसा वह छोड़ गई थीं । वहां से केवल काटने का चाकू गायब था । उसने अपने साथ के व्यक्ति से पर्दा हटा कर निकटवर्ती कक्ष में जाने की प्रार्थना की ।

उसने द्वार खोला तथा एक या दो पग अन्दर जाकर तुरन्त ही सूखा सा मुँह लिए वापस चला आया । “ हे ईश्वर, बिछैनों पर जो व्यक्ति पड़ा है, उसकी मृत्यु होगई है । मैं समझता हूँ कि उस पर चाकू से आक्रमण किया गया है । फर्श पर बहुत सा खून फैला हुआ है । ”

समाचार चारों ओर शीघ्र ही फैल गया । वही घर जो कुछ समय पूर्व इतना शान्त था अब उसमें अनेकों पैरों की आहट आने लगी । उस भीड़-भाड़ में एक डाक्टर भी था । उसने बतलाया कि घाव तो बड़ा नहीं है लेकिन चाकू के फल की नोंक ने घायल व्यक्ति के हृदय को स्पर्श किया है । अब तो वह अपनी पीठ के बल पीला, स्थिर

एबम् मृत पड़ा हुआ था, मुनों चोट लगने के उपरांत वह कुछ भी हिला-डुला भी न था। पन्द्रह मिनट में ही यह समाचार कि एक भद्र पुरुष जो कुछ दिनों के लिये इस नगर में रहने आये थे अपने बिछौने में मार डाले गये—नगर की हर एक गली और हर एक घर में फैल गया।

५७

इस बीच में अजिल क्लेअर बिना किसी विज्ञाप विचार के जिघर से आया था, उधर ही लौटकर चल दिया था। अपने होटल में प्रवृष्ट होकर वह जलपान करने लगा। उसके सामने जो शुन्य छा रहा था, उसी पर व ध्यान दे रहा था। वह बिना कुछ सोचे-समझे खाता-पीता रहा तथा यकायक उसने अपना बिल मांगा। बिल चुकता कर देने के उपरांत उसने अपना वस्त्रों का थैला अपने हाथ में उठाया। केवल इतना ही सामान वह अपने साथ लाया था। इसे लेकर वह बाहर निकला।

जिस समय वह होटल से प्रस्थान कर रहा था, उसे एक तार मिला जिसमें उसकी माता ने कुछ सन्देश भेजा था। उसमें लिखा था कि उसका पता जानकर उन्हें प्रसन्नता हुई। उसमें यह भी सूचना थी कि उसके भाई कथबर्ट ने मेसीचण्ट से प्रस्थाव किया था जो स्वीकार कर लिया गया।

क्लेअर ने कागज को लपेट कर रख लिया तथा वह स्टेशन की ओर चला। यहां आकर उसे पता चला कि अभी एक घंटे तक और उसके बाद भी कोई रेलगाड़ी वहां से न छूटेगी। वह वहां बैठकर

प्रतीक्षा करने लगा । लगभग १५ मिनट तक प्रतीक्षा कर लेने पर उसने अनुभव किया कि अब और प्रतीक्षा करना उसके लिये असह्य है । अपने शिथिल शरीर में भग्न हृदय को लेकर अब उसे किसी भी कार्य के लिये शीघ्रता करने की आवश्यकता न थी । परन्तु वह उस नगर के बाहर जाने को उत्सुक था जहाँ उसे ऐसा अनुभव हुआ । इसी कारण वह उठा और अगली स्टेशन तक पैदल ही आगे बढ़ा । उस ने सोचा कि उस स्टेशन से वह रेल में बैठ जायगा ।

जिस मार्ग से वह जा रहा था वह खुला था । कुछ दूर जाकर सड़क एक घाटी में उतर जाती थी तथा उसके एक छोर से दूसरे तक वह दूर से फेली हुई दिखलाई देती थी । वह इस ढाल का अधिकांश भाग तै कर चुका था तथा पश्चिम की ओर चढ़ाई प्रारंभ कर रहा था । कुछ क्षण विश्राम लेने के विचार में वह यहाँ ठहर गया और बिना किसी विज्ञाप प्रयोजन के, उसने पीछे की ओर मुड़ कर देखा ।

उसने ऐसा क्यों किया. वह कुछ न कह सकता था परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि कोई वस्तु उसे इस कार्य के लिये प्रेरित कर रही है । सड़क पर जहाँ तक उसकी दृष्टि जाती थी, पीछे की सड़क संकरी होती चली जा रही थी तथा दृश्य के अन्तिम छोर पर श्वेत शुन्यता में एक चल-वस्तु सी दिखलाई दी ।

यह एक मानवी शरीर था जो दौड़ रहा था । क्लेश ठहर गया ; उसके मन में यह बात समा गई कि कोई उसके समीप पहुँचने के लिये दौड़ा आ रहा है ।

जो शकल उस ढाल पर उतर रही थी वह किसी स्त्री की थी परन्तु उसके मन से उसकी पत्नी द्वारा उसके अनुकरण किए जान की

संभावना इतनी दूर होगई थी कि जब वह बिल्कुल समीप आगई तब भी क्लेअर उसे पहचान न सका। इस समय वह वस्त्र भी बिल्कुल नवीन पहने थी—इस कारण भी क्लेअर को उसके पहचानने में विलम्ब लगा। जब वह और भी समीप आगई तब क्लेअर को विश्वास हुआ कि वह टैस है।

“ मैं ने तुम्हें स्टेशन से इधर मुड़ते हुए देख लिया था ; उस समय मैं स्टेशन से कुछ दूरी पर थी। और मैं तुम्हारे पीछे-पीछे यहां तक चली आई हूं। ”

इस समय टैस पीली पड़ रही थी ; उसकी श्वास फूल रही थी तथा उसका प्रत्येक अवयव कांप रहा था ; इस अवस्था में क्लेअर ने उससे कोई प्रश्न न पूछा। उसने टैस का हाथ पकड़ कर उसे अपने बाहू के समीप कर लिया तथा उसके साथ-साथ वह अपने मार्ग पर अग्रसर हुआ। इस विचार से कि कोई अन्य पथिक उन्हें इस प्रकार न देखे, उसने चौड़ी सड़क छोड़ दी तथा विशाल वृक्षों की छाया में जानेवाली एक पगडंडी पर चलने लगा। अब वे उन लड़लहाती ग्राहवाओं के सघन कुँज में दहुँच गए तब वह ठहर गया तथा टैस की ओर कौ-तूहल-मिश्रित दृष्टि से देखने लगा।

टैस ने समझा कि वह कुछ जानने को उत्सुक है। वह बोली “ एँजिल, क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पीछे-पीछे क्यों भाग रही हूँ। मैं तुम्हें यह बतलाने आई हूँ कि मैं ने उस मार डाला है। ” उसके इस कथन में एक दयानीय श्वेत मुसकान उसके आनन पर छागई।

“ क्या ? ” उसके व्यवहार की विचित्रता से क्लेअर ने अनुमान लगाया कि टैस की दशा किसी सन्नपात के ऐंगी की सी है।

“ मैं ने उसका काम तमाम कर दिया । कैसे किया, यह मैं नहीं जानती । ” उसने अपना कथन जारी रखा । “ अँजिल—मुझे यह काम अपने प्रति और अपने प्रति अपना कर्त्तव्य-पालन करने के निमित्त करना ही था । बहुत दिन हुए, तब मुझे आशंका थी कि किसी न किसी दिन मुझे यह करना ही पड़ेगा । एक दिन मैं ने निश्चय कर लिया था कि इसने मेरी मुग्धा अवस्था में जो जाल डालकर मेरे द्वारा तुम्हारे प्रति अन्याय किया है उसका बदला चुकाना ही पड़ेगा । वह हमारे सुख के बीच में अवरोधक बन कर आगया और उसने हमारा सुख नष्ट कर दिया । अब वह कभी भी ऐसा न कर सकेगा । अँजिल, मैं कभी भी उस से प्रेम न करती थी क्योंकि मेरा प्रेम तो तुम से था । तुम यह जानते हो । क्या तुम्हें नहीं मालूम ? क्या तुम इस पर विश्वास नहीं करते हो ? तुम मेरे पास लौट कर न आओ और मैं विवश हो आई । मुझे उसके समीप जाना ही पड़ा । तुम चले क्यों गये थे ? तुम क्यों गये ? जब मैं तुमसे इतना प्रेम करती थी ! मैं यह सोच भी नहीं सकती कि तुमने ऐसा क्यों किया । लेकिन मैं इस का दोषारोपण तुम पर नहीं करती ! केवल अँजिल ! अब मैं ने उसे मार डाला है ; क्या तुम मेरा अपराध क्षमा कर दोगे ? जब मैं दौड़कर तुम्हारे पास आरही थी तब मैं सोचती थी कि मेरे इस कृत्य के पश्चात् तुम अवश्य ही मुझे क्षमा कर दोगे । मेरी समझ में यकायक यह बात आई कि इस प्रकार मैं तुम्हारा कुछ बदला ले सकती हूँ । तुम से अब और अधिक अलग रहना मेरे लिये असह्य होगया । तुम्हें नहीं मालूम कि मैं किस प्रकार तुम्हारे प्रेम के अभाव को सहने में असमर्थ थी । मेरे प्रिय ! मेरे प्रिय पति ! अब तो कह दीजिये कि आप प्रेम करते हैं । अब तो मैं उसे मारकर आरही हूँ । ”

कुरूप निकल आया था परन्तु टैस उसमें कोई दोष न देखती थी— यह स्पष्ट था। उसके लिये क्लेअर पूर्व की भांति ही सम्पूर्ण था ! उसका शारिरिक सौन्दर्य तथा मानसित विकास दोनों टैस को पूर्ववत् ही प्रतीत होते थे। अब भी वह टैस के लिये आदर्श पुरुष था। क्लेअर का रुग्ण आनन उस के लिये प्रभात के समान सुन्दर था तथा उसके अनुरागमय हृदय में वह आज भी वैसा ही था जैसा कि उसने उसे पहले दिन देखा था। क्योंकि पृथ्वी पर यही एक व्यक्ति था जिसने उसके प्रति विशुद्ध प्रेम किया था तथा जिसने उसकी पवित्रता में विश्वास किया था। ऐसे व्यक्ति का आनन उसकी दृष्टि में कैसे अपना सौन्दर्य कम कर सकता था।

उन संभावनाओं का ध्यान रखते हुए जो कि नवीन परिस्थिति के कारण उत्पन्न ही गई थीं, क्लेअर ने पूर्व निश्चय के अनुसार अगले स्टेशन की ओर जाना उचित न समझा। वह और भी सघन वन में प्रविष्ट होता गया जो यहां से मीलों तक फैला हुआ था। वे दोनों एक दूसरे की कटी-परिवेष्टित किए वन-वृक्षों के कंटकों को कुचलते हुए आगे बढ़ रहे थे। इस समय उन्हें केवल एक ही ध्यान था कि अन्त में वे दोनों एक हो गये तथा अब उन्हें पृथक् करनेवाला कोई नहीं है। वह यह भी भूले हुए थे कि उनमें से एक तो शव बन चुका था ! इस प्रकार वे कई मील तक चलते गये। अन्त में टैस को ही कुछ होश आया। उसने अपने चारों ओर देखा और डरते-डरते कहा—

“ क्या हम लोग किसी विशेष स्थान की ओर जा रहे हैं ? ”

“ मेरी सर्व प्रिय ! यह मैं नहीं जानता। क्यों ? ”

“ यह मैं भी नहीं जानती । ”

“ अच्छा, तो हम लोग कुछ मील आगे चलेंगे और जब

संध्या हो जायगी तो कहीं निवास योग्य स्थान खोज लेंगे । कदाचित् किसी एकांत कुटिया में स्थान मिल जावे । टैस ! तुम को चलने में तो कुछ कष्ट नहीं हो रहा ? ”

“ नहीं—नहीं ! यदि तुम्हारी बाहु मेरी कटी को घेरे रहे, तो मैं सदैव ही इसी प्रकार चलती रह सकती हूँ । ”

सब परिस्थिति पर विचार करते हुए यही उपयुक्त प्रतीत होता था । उन्होंने अपनी गती बढ़ा दी । वे बड़ी सड़कों को छोड़ कर कम प्रयोग में आनेवाली राहों पर चल रहे थे । उनका झुकाव उत्तर की ओर था । लेकिन दिन भर उनकी गति में अव्यवहारिक अनिश्चय का प्रधान्य रहा । उन में एक भी बहुत दिनों तक छिपे रहने या वेश बदलने या देश से भाग निकलने की योजना न बना रहा था । उनका प्रत्येक विचार क्षणिक और अदूरदर्शी था जैसे किन्हीं दो बालकों की योजनाओं हों ।

दोपहर के समय वे एक सराय के पास पहुंचे जो सड़क के किनारे थी । टैस कौ इच्छा थी कि वह भी क्लेअर के साथ अन्दर जाकर कुछ भोजन कर लेवे । परन्तु उसने टैस को समझा-बुझा कर उसी वन में उसकी प्रतीक्षा करने को राजी कर लिया । टैस के वस्त्र आधुनिक ढंग के थे ; हाथी-दांत की मूठ वाला झोला भी जो उसके हाथ में था वह भी इस एकांत स्थान के लिये अद्भुत वस्तु थी ; वे जिस भाग में थे वह इतना पिछड़ा हुआ था । उनके पास की प्रत्येक वस्तु की बनावट इस सराय में उपस्थित लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किये बिना न रहती । क्लेअर तुरन्त ही इतनी भोजन-सामग्री लेकर लौट आया जितनी छः व्यक्तियों के लिये पर्याप्त होती । साथ में वह दो मदिरा की बोतलें भी लाया जो कि उसके लिये आज दिन भर

के लिये तो पर्याप्त थी हों—यदि कोई अवसर आ पड़े, तो वह इस सामग्री से और भी दो-एक दिन का काम चला सकता था।

वहीं वन में कुछ मृत पक्षियां पड़ी थीं जिन पर बैठ कर उन्होंने हिल-मिल कर भोजन किया। एक और दो बजे के मध्य उन्होंने ने शेष सामान बांध लिया और वे आगे चले।

“ अब मैं कितनी भी दूर चलने को उद्यत हूं। ” वह बोली।

“ मैं समझता हूं कि हम लोग इसी प्रदेश में अन्दर ही अन्दर कुछ दिन तक घूमते रहें तो ठीक होगा क्योंकि खोजनेवाले हमें समुद्र-तट पर अधिक खोजेंगे। ” क्लेअर ने अपना मत प्रकट किया।
 “ कुछ समय उपरांत जब लोग हमें भूल जावेंगे, तो हम लोग किसी बन्दरगाह पर चलेंगे। ”

इसके उत्तर में टैस कुछ न बोली। उसने क्लेअर को और दृढ़ता से पकड़ लिया और वे उसी वन में अन्दर ही अन्दर चलते रहे। इस समय मई का महीना था—इंग्लैण्ड में इस महीने जैसी शांति और जैसी आकाश की निर्मलता रहती है, वैसी ही आज विद्यमान थी। तीसरे प्रहर में उष्णता अधिक थी। उनकी यात्रा का अन्तिम अंश उन्हें नये वन की सघनता में ले आया तथा एक गली के कोने पर मुड़कर उन्होंने एक नाले पर बने एक पुल के पीछे एक बड़ा सूचक-बोर्ड देखा जिस पर श्वेत अक्षरों में लिखा हुआ था “ यह सजा हुआ बंगला किराये पर मिल सकता है। ” विशेष जानकारी के लिये किसी लन्दन के एजेंट से पत्र-व्यवहार करने की सूचना थी। इस के फाटक में होकर निकलते समय उन्होंने घर भी देख लिया। निश्चित ढंग की पुरानी ईंटों की बनी इस इमारत में बहुत स्थान था।

“ मैं इस स्थल को पहचानता हूँ । यह ब्रह्मशर कोर्ट है । तुम देख लो यह बन्द है तथा मार्ग में घास उड रही है । ”

“ कुछ खिडकियां तो खुली हैं । ” टैस बोली ।

“ मैं समझता हूँ कि इनके द्वारा कमरों में वायु के आवागमन की व्यवस्था की गई है । ”

“ यह सब कमरे खाली पडे हैं और हमारे शिरों पर किसी भी छत की छाया नहीं । ”

“ मेरी टैस, तुम थकित हो रही हो । ” वह बोला । “ हम लोग शीघ्र ही कहीं न कहीं ठहर जायेंगे । ” यह कह कर उसने टैस का उदास मुख चूम लिखा और वे कुछ आगे बढ़े ।

क्लेअर स्वयं भी उतना ही थक रहा था क्योंकि वे दोनों बारह या पन्द्रह मील घूम चुके थे और अब यह सोचना आवश्यक था कि विश्राम की क्या व्यवस्था की जावे । दूर से उन्होंने ने छिटकी हुई कुटियों तथा छोटी छोटी सरायों को देखा तथा उनका विचार किसी छोटी सराय में जाकर ठहरने का हुआ । परन्तु अन्त तक उनके साहस ने साथ न दिया और वे उधर से लौट पडे । अन्त में उनके पांव जबाब देने लगे और वे एक स्थान पर खडे रह गये ।

“ क्या हम लोग पेड़ों के नीचे सो सकते हैं ? ” टैस ने पूछा ।

क्लेअर के मत से अभी ऋतु इतनी उष्ण न हो पाई थी ।

“ मैं उस खाली बंगले के विषय में सोच रहा हूँ, जिसके समीप होकर हम अभी निकले थे—” वह बोला । “ हम लोग लौट कर उसी में चलें । ”

वे दोनों लौट पडे परन्तु उस घर के फाटक तक आने में उन्हें

आधा घंटा लग गया। तब क्लेअर ने उस से प्रार्थना की कि वह उसी स्थान पर खड़ी रहे और तब तक स्वयं यह देखने को गया कि उसमें अन्दर कोन है।

फाटक के अन्दर झाड़ियों में वह बैठ गई और अकेला क्लेअर घर की ओर गया। उसके लौट कर आने में बहुत समय लगा तथा ऐसा बहुत चिन्तित होगई। वह अपने लिये चिन्तित न थी; उसे क्लेअर की ही चिन्ता थी। क्लेअर को एक बालक से पता लगा था कि उस बंगले की देखरेख का भार एक वृद्ध पर है और वह वहां स्वच्छ दिनों में ही आती है। वह समीप के गांव में रहती है तथा जिस दिन सूर्य स्वच्छ आकाश में निकलता है, उस दिन वहां आकर कुछ खिडकियां खोल था बन्द कर जाती है। वह सूर्यास्त के समय खिडकी बन्द करने आवेगी। “अब हम लोग किसी नीचे की खिडकी के द्वारा अन्दर चल सकते हैं तथा वहां आराम कर सकते हैं।” वह बोली।

उसके पीछे-पीछे ऐसा धीमी गति से बंगले के सामने आई जिसकी खिडकियों में लगे हुए पर्दे ज्योतिर्विहीन नेत्रों की भांति बाहर से किसी का देखा जाना असंभव बना रहे थे। कुछ कदम आगे बढ़ने पर द्वार आगया तथा इसके पार्श्व में एक खिडकी खुली थी। क्लेअर इस में चढ़कर अन्दर उतर गया तथा बाद में ऐसा को भी अन्दर खींच लिया।

हाल के अतिरिक्त सभी कमरों में अंधेरा था; और वे जीने पर चढ़ गये। ऊपर भी वहां के सभी रौशनदान दृढ़ता से बन्द थे। वायु के आवागमन की व्यवस्था विशेष प्रकार से की गई थी। हाल की खिडकी सामने खोल दी गई थी तथा पीछे की एक खिडकी ऊपरी

भाग में खुली थी। क्लेअर ने एक बड़े कक्ष का द्वार खोल लिया तथा अंधेरे में मार्ग खोजकर रोशनदान के समीप जा पहुंचा। इस रोशनदान को उसने दो या तीन इंच की चौड़ाई तक खोल दिया। कमरे में सूर्य-रश्मियों का तीव्र प्रकाश फैल गया जिस में भारी पुराने ढंग का सामान लाल-रंगीन पर्दे और एक बड़ा चार पायों का पलंग सभी स्पष्ट दिखाई दिये। पलंग का सिरे पर कुछ चित्रकारी थी जिसमें तीव्रगामी एटलाण्ट की दौड़ के चित्र बने थे।

“ अब आराम कीजिये ”—उसने अपने थैले और भोजन की पोटली को धरती पर रखते हुए कहा।

वे लोग धिक्कुल मौन बैठे रहे। बंगले की देखरेख करनेवाली वृद्धा को वे प्रतीक्षा में थे। वह आकर खिडकियां बन्द करके लौट जावे तब उन्हें स्वतंत्रता मिले। सावधानी के किये उन्होंने रोशनदान भी पूर्ववत् ही बन्द कर दिया और पूर्ण अंधकार में ही बैठे रहे। कहीं उस वृद्धा को कुछ सदेह हो जाता और यदि वह कमरा खोलती तो कठिनाई होती। छः और सात के बीज वह आई परन्तु उस भाग में न गई जहाँ ये लोग थे। उन दोनों ने उसे खिडकियां बन्द करते, उनकी चटखनी चढ़ाते तथा द्वार में ताला लगाकर जाते सुना। तब क्लेअर ने फिर प्रकाश-द्वार में एक छिद्र घनाकर थोड़ा प्रकाश अन्दर लाने की व्यवस्था की। फिर दोनों ने साथ-साथ भोजन किया। फिर धीरे-धीरे वे रात्रि के अंधकार में ढंक लिये गये जिसके निराकरण के लिये उनके पास मोम-बत्ती न थी।

रात्रि गंभीर और शान्त थी। प्रारंभ के घंटों में टैस ने धीरे-धीरे क्लेअर को वह सब कथा बतलाई कि उस रात्रि में कैसे निद्रा में वह टैस को अपनी गोद में लेकर फरूम नदी के उस पार गया था, जब कि उन दोनों के जीवन खतरे में थे और कैसे उसने उस जीर्ण-शीर्ण कब्रिस्तान में उसे ले जाकर लिटा दिया था। अब तक क्लेअर को इसका कुछ भी पता ही न था।

“तुम मुझे दूसरे ही दिन क्यों न बतला दिया,” उसने कहा।
 “संभव था कि उससे बहुत कुछ भ्रम और दुःख दूर हो जाता”

“उसका अब स्मरण न किजिये। जो बीत चुका है उसे जाने दीजिये।” वह बोली। “इस समय तो मैं विशुद्ध वर्तमान के अति-रिक्त और कुछ भी नहीं सोचना चाहती। हम सोचें ही क्यों? कौन जानता है कि कल हमारा क्या होगा?”

लेकिन दूसरे दिन प्रत्यक्ष ही उन्हें कोई दुःख न था। प्रभात में कुछ वर्षा होरही थी तथा कुहरा छाया हुआ था। यह तो उन्हें ठीक ज्ञात ही था कि वह वृद्धा केवल अच्छे मौसम में खिडकियां खोलने आती है। अतएव क्लेअर ने उस कमरे के बाहर आने का साहस किया तथा उस घर की और भी खोज की। टैस उस समय सोती रही। घर में भोजन न था परन्तु पानी था। कुहरे से लाभ उठाकर वह बंगले से बाहर गया तथा दो मील दूर एक छोटी जगह में स्थित छोटी सी दुकान से चाय, रोटी और मक्खन ले आया। उसने सब टीन के केतली तथा स्पिरिटलम्ब भी खरीद ली ताकि बिना धुएं की आग जलाई जा सके।

उसके लौटकर घर में घुमने पर टैस की आंख खुली तथा उन दीनों जो कुछ वह लाया था उसका जलपान किया।

बाहर जाने का उनका विचार न था। इसी गृह में दिन बीत गया तथा रात आई। फिर दिन आया और फिर एक दिन बीता। उन्हें कुछ पता ही न चला कि इस एकांत में उनके पांच दिन कब बीत गए। किसी भी मनुष्य की न तो उन्होंने शकल देखी और न किसी का शब्द सुना। उनकी स्थिति ही ऐसी थी। दिन और रात में होने वाले मौसम के परिवर्तन ही उनके संसार की महत्त्वपूर्ण घटनाओं थी तथा नूतनवन के पक्षी ही उनके साथी थे। दोनों की पूर्ण इच्छा से उन दोनों ने अपने विवाह के उपरांत की किसी भी घटना का वर्णन एक दूसरे के सामने न किया। उनके लिए मध्यवर्ती समय एक गडबडवाला था। जिस पर वर्तमान ने ऐसी विजय प्राप्त कर ली थी मानों उस मध्यवर्ती समय का कोई अस्तित्व ही न था। जब कभी क्लेअर यह प्रस्ताव रखता कि उन दोनों को यह स्थान छोड़कर लंदन या साडभैम्पटन चलना चाहिए तो वह सदैव ही चलने के सम्बन्ध में एक अद्भुत अनिच्छा प्रकट करती।

“ जो मधुर और सुन्दर आनन्द हमें इन दिनों यहां मिल रहा है, उसे समाप्त क्यों कर दें ”—वह कहती। “ जो होना है, वह तो होगा ही। ” वह छिद्र में देख-देख कर कहती—“ बाहर तो सर्वत्र दुःख ही दुःख है। यहां हम सुखी हैं। ”

वह भी बाहर झांक कर देखता। यह बात पूर्णतया सत्य थी। अन्दर तो प्रेम था, एकता थी, भूल के लिए क्षमा थी; बाहर सभी बातें विपरीत थीं।

“ और—और ” वह अपने कपोल को उसके कपोल का सहारा देकर कहती—“ यहां आप जो मेरे विषय में सोच रहे हैं, बाहर चलकर कदाचित न सोचें । मैं उस समय तक जीवित भी नहीं रहना चाहती तब कि तुम्हारा मेरे प्रति इस समय जैसा अनुराग न रहे । भगवान न करे कि मैं उस समय तक जिऊँ । मैं चाहती हूँ कि यदि कोई ऐसा समय आवे कि जब तुम मुझ से घृणा करो तो उसके पूर्व ही मेरी मृत्यु हो जावे और मैं दफना दी जाऊँ ताकि मुझे यह पता न चले कि तुम मुझ से घृणा करते थे । ”

“ अब मैं तुम से कभी भी घृणा कर ही नहीं सकता । ”

“ मैं भी यही आशा रखती हूँ । लेकिन यह सोच कर कि मेरा जो विगत जीवन रहा है, उसको देखते हुए कोई भी व्यक्ति आज नहीं तो कल मुझ से घृणा क्यों न करेगा...मैं भी कितनी शैतान जैसी उन्मत्त हो गई थी ! लेकिन पहले तो मैं एक मक्खी या कीट को सताना भी सहन न कर सकती थी और किसी चिड़िया को पिंजड़े में देखकर मैं रो पड़ती थी । ”

वे एक दिन वहां और रहे । रात्रि में भूरा आकाश स्वच्छ हो गया और परिणाम यह हुआ कि रक्षक वृद्धा शीघ्र ही जाग गई । आभामय सूर्योदय ने उसे असाधारण चैतन्य बना दिया । उसने निश्चय किया कि बंद बंगले को तुरन्त ही खोल देना चाहिए ताकि उसमें ऐसे सुन्दर दिवस की पूरी हवा जा सके । इस प्रकार यह हुआ कि छः बजने के पूर्व ही उसने आकर नीचे के सब कमरे खोल डाले और वह सीड़ियों पर चढ़ कर शयन-कक्ष के समीप आई । जिस कक्ष में वह दोनों सो रहे थे; वह उसके द्वार को खोलने के लिए मूठिया घमाने ही

वाली थी। उसी क्षण उसे ऐसा लगा मानों अन्दर कुछ लोग सो रहे हैं—उनकी श्वास उसने सुनी। उसके स्लिपर तथा उसकी वृद्धावस्था ने अब तक के उस के सभी कार्य बिना किसी आहट के सम्यन्त्र करा दिए थे; और इस समय वह पीछे को लौट पड़ी; तब उसने सोचा कि संभव है मेरे कानों ने सुझे धोका दिया हो और वह पुनः उसी द्वार पर आई तथा धीरे से उसने मुठिया घुमाई। उसका ताला खराब होगया था तथा अन्दर का कुछ सामान हटाकर द्वार में ऐसा रख दिया गया था कि जिसके कारण द्वार एक या दो इंच से अधिक न खोला जा सकता था। प्रकाश-द्वार के छिद्र में होकर प्रभात का प्रकाश चम्पति के आननों पर पड़ा; दोनों अगाढ़ निद्रा में थे। टैस के अधर अर्द्ध-विकसित सुमन की भांति उसके कपोल के समीप ही थे। रक्षिका उन की निरपराध झलक से ऐसी प्रभावित हुई कि उसका सारा क्रोध शांत हो गया। टैस की सुन्दर गाउन कुर्सी पर रखी हुई थी जिसके समीप ही उसकी रेशमी जुराबें थीं। सुन्दर थैला तथा अन्य वस्त्र जिन्हें वह पहन कर आई थी सब यहीं थे। पहले उसने सोचा था कि कुछ शैतान लोग यहां विघ्न डाल कर उसका अनादर करने आए हैं परन्तु इन दोनों को देख कर उसका विचार बदल गया। वह समझ गई कि यह व्यक्ति उस सुन्दरी को भगा कर लाया है तथा इस विचार ने उसके क्रोध को कम कर दिया। उस ने द्वार बन्द कर दिया और जिस नीरव गति से वह आई थी, उसी नीरवता से लौट गई। उसने जो नवीन दृश्य देखा था, उसके सम्बन्ध में अपनी पड़ोसियों से परामर्श लेना आवश्यक था।

उसको वहां से गए कठिनाई से एक मिनट हुआ था जब कि टैस की आंख खुली। और उसके पश्चात् क्लेअर भी जाग गया। दोनों

के मन में यह भावना थी कि किसी बात से उनका निद्रा में विघ्न पड़ा है ; वे यह तो न बता सकते थे कि बात क्या है ? इस विचार ने जो बेचैनी उत्पन्न कर दी थी वह बढ़ती ही गई । जैसे ही क्लेअर कपडे पहन चुका, उसने प्रकाश-द्वार के दो-तीन इंच वाले छिद्र से बाहर के लान का निरीक्षण किया ।

“ मैं समझता हूं कि हमें तुरन्त ही चल देना चाहिए । ” वह बोला । “ आज सुन्दर दिन है । और मैं समझ रहा हूं कि घर में कोई आया है । कुछ भी हो, वह वृद्धा तो अवश्य ही आज आवेगी । ”

टैस ने बिना विरोध किए स्वीकृति दे दी तथा उस कक्ष को यथावत छोड़कर और अपना सामान उठाकर वे भी नीरव गति से निकल पड़े । जब वे घन में पहुंच गये, तो टैस ने मुड़ कर उस बंगले को अन्तिम बार निहारा ।

“ हे सौख्य-सदन ! नमस्ते ! ” वह बोली । “ मेरा जीवन तो अब केवल कुछ सप्ताहों का ही प्रश्न है । हम लोग यहीं क्यों न ठहरे रहें ? ”

“ टैस ! तुम यह न कहो । हम शीघ्र ही इस जिले के बाहर निकल चलेंगे । हम अपनी वही मार्ग अपनावेंगे, जो हमने प्रारंभ किया था तथा उत्तर की ओर बढ़ते चलेंगे । हम लोगों को खोजने वहां कौन आवेगा । यदि कोई हमारी खोज करेगा भी तो वह वैसैक्स के बन्दर-गाहों में खोजेगा । जब हम उत्तर में पहुंच जायेंगे तो किसी बन्दरगाह पर पहुंच कर कहीं भाग निकलेंगे । ”

इस प्रकार टैस को राजी कर लेने पर योजना काम में लाई तथा वे उत्तर की ओर चलते रहे । उस बंगले में पर्याप्त दिन ठहर

चुकने के पश्चात् उनमें चलने की शक्ति पुनः आगई थी ; और दोपहर के समय उन्होंने देखा कि वे मैलचैस्टर के समीप आ रहे हैं जो उनके मार्ग में ही था । तीसरा प्रहर होते ही उसने टैस को एक वृक्षसमूह के नीचे ठहरा दिया तथा निश्चय किया कि अब आगे रात्रि के अंधकार में चला जायगा । संध्या के घूमिल प्रकाश में क्लेअर नित्य की भांति भोजन खरीद लाया और उनकी रात्रि की यात्रा प्रारंभ हुई । उन्होंने लगभग आठ बजे मध्य-वैसैक्य की सीमा छोड़कर उत्तरी-वैसैक्स में प्रवेश किया ।

देहात में बिना सड़कों का ध्यान रखे घूमना टैस के लिए नई बात न थी तथा इस कार्य में उसने अपनी पुरानी क्रियाशीलता दिखलाई । उनके मार्ग में पड़नेवाले प्राचीन मैलचैस्टर नगर में होकर भी वे निकले क्योंकि उनका मार्ग रोकनेवाली एक बड़ी नदी को पार करने के लिए नगर के पुल से लाभ उठाना था । उस समय अर्द्ध-रात्रि थी, जब वे उन सुनसान गलियों में पैरों की आहट बचाने को पक्की सड़क को छोड़कर एकाग्र दीपक के क्षीण प्रकाश में चले जा रहे थे । चर्च की विशाल इमारत उनके बाईं ओर थी परन्तु अब वह पीछे छूट गई थी । एक बार नगर से बाहर हो जाने पर वे पुनः छोटी सड़क पर चलने लगे जो कुछ मील के उपरांत एक मैदान में आ निकली ।

आकाश में बादल खूब घिरे थे परन्तु आंशिक चन्द्र ने अपनी ज्योति बखेर कर अब तक उनकी कुछ सहायता की थी । परन्तु अब चन्द्रमा अस्त हो गया था तथा बादल उनके शिरों पर छाये हुए थे । रात्रि किसी कंदरा के समान ही अंधकारमय हो रही थी । कैसे भी उन्हें मार्ग मिलता रहा, यथा-संभव वे घास पर ही चलते थे ताकि उनके

पैरों की आहट न हो। यहां मार्ग के दोनों ओर कोई झाड़ी या रोक न होने के कारण इसमें कोई कठिनाई न थी। उनके चारों ओर विस्तृत एकांत था और काली निर्जनता थी जिसमें तीक्ष्ण पवन प्रवाहित था।

इस प्रकार अंधेरे में टटोलते-टटोलते वे लगभग दो या तीन मील गए होंगे कि यकायक क्लेअर को अपने सामने किसी विशाल निर्माण का आभास मिला जो घास में ही बना हुआ था। उन दोनों की एक-प्रकार से उससे टक्कर ही होगई।

“यह भी क्या भयानक स्थल है ?” अँजिल ने कहा।

“यह तो कुछ गुनगुना रहा है ; ” वह बोली। “सुनो”

वह सुनने लगा। हवा उस स्थान में बने हुए खंभों से टकरा कर एक ऐसा धीमा स्वर उत्पन्न कर रही थी मानों कोई एक डोरी का विशाल इकतारा बज रहा हो। यहां कोई दूसरा शब्द न सुन पड़ता था। अपना शिर ऊंचा कर क्लेअर एक या दो पग आगे बढ़ा तथा उसने एक खंभे की सीधी खड़ी हुई सतह का स्पर्श कर लिया। यह एक ऐसे पत्थर से निर्मित था जिसमें कोई जोड़ न था। अपनी उंगलियाँ और आगे बढ़ाने पर उसने देखा कि वहां एक पुराना आयनाकार खम्भा बना हुआ था। अपने बायें हाथ को फैलाने पर उसे ज्ञात हुआ कि इस ओर भी एक ऐसा ही खम्भा है। बहुत ऊंचाई पर कोई वस्तु काले आकाश को और भी काला बना रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि इन लम्बाकार स्तम्भों पर दूसरे खम्भे रखे हुए हैं। वे दोनों सावधानी से इन स्तम्भों के नीचे और मध्य में आये। नीचे घरातल पर उनके पैरों का शब्द होता था परन्तु ऊपर से कोई

प्रतिध्वनि न आती थी। वे स्वयं को अब भी बाहर खुले हुए भाग में ही समझते थे क्योंकि इस मकान में कोई छत न थी। टैस ने भयभीत होकर सांस ली तथा ऐंजिल ने घबड़ा कर कहा—

“यह क्या हो सकता है ?”

इधर उधर टटोलने पर उन्हें एक और बड़ा स्तम्भ मिला। वह भी चौकोर और पहले के समान ही विशाल था। उसके बाद फिर और खंभा मिला; और आगे एक और खंभा था। इस स्थान में केवल खंभे ही खंभे थे तथा बीच में द्वार थे। ऊपर कुछ खंभों पर एक-दो खंभे ऐसे रखे थे जो उनमें आपस में संबन्ध स्थापित कर देते थे।

“यह तो पवन-मन्दिर प्रतीत होता है—” वह बोला।

दूसरा स्तम्भ फिर पृथक् खड़ा था; कहीं तीन खंभे ऊपर जाकर मिल रहे थे; कुछ झुके पड़े थे तथा उनके झुकाव के नीचे इतना मार्ग था कि कोई गाड़ी उसमें होकर जा सकती थी। शीघ्र ही प्रत्यक्ष होगया कि वह घास के मैदान के मध्य में प्राचीनों का पवित्र-स्थान था। दम्पति इस मन्दिर में और आगे बढ़े और उसके मध्य में पहुंच कर खड़े रह गये। उनके ऊपर केवल रात्रि का वितान तना हुआ था।

“यह स्टोनहेंज है।” क्लेअर ने कहा।

“आपका मतलब है कि यह अधार्मिकों का मन्दिर है।”

“हां। यह मसीह से भी पूर्व का है; वह दरनरविलों से भी प्राचीन है! अच्छा प्रिये, अब हम लोग क्या करें? और आगे चलने पर कहीं ठहरने योग्य स्थान मिल सकता है।”

परन्तु टैस इस समय तक वास्तव में थक गई थी; वह समीप ही पड़े हुए एक पत्थर पर लेट गई; एक स्तम्भ यहां वायु से उसको

जाण दे रहा था। पिछले दिन सूर्य खूब चमका था अतएव पत्थर सुखा और उष्ण था; उधर घास तो खुरदरी और गीली थी जिसने उसके जूते और वस्त्रों के छोर भिगो दिये थे।

“ ऐंजिल, मैं अब और दूर नहीं जाना चाहती। ” वह बोली। उसने अपना हाथ क्लेअर के हाथ की ओर बढ़ाते हुए कहा “ क्या हम लोग यहीं नहीं ठहर सकते ? ”

“ मैं समझता हूं कि यहाँ ठहरना ठीक नहीं है। दिन में यह स्थान कई मील की दूरी से दिखलाई देता है यद्यपि इस समय यह ऐसा नहीं प्रतीत होता। ”

“ यहीं कहीं मेरी माता का एक सम्बन्धी भेड़ें चराता था; अब मुझे उसका ध्यान आरहा है। और तालबोथे में तुम भी कहा करते थे कि मैं अधार्मिक हूं। इस कारण मैं तो स्वयं को अपने घर पर ही समझती हूं। ”

क्लेअर उसके फैले हुए कलेवर के पार्श्व में घुटनों के बल बैठ गया तथा उसके अपने ओठ उसके अधरों पर धर दिये।

“ प्रिये—क्या तुम्हें नोद लगी है ? मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम किसी बलि-वेदी पर पड़ी हो। ”

“ मुझे यहाँ रहना बहुत अच्छा लगता है। ” वह धीरे-धीरे बोली। “ यहाँ ऐसी गंभीरता और ऐसा एकांत है; मेरी महान प्रसन्नता के पश्चात् यह कैसा परिवर्तन है। यहाँ मेरे आनन के ऊपर आकाश के सिवा और कुछ भी नहीं है। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में हम दोनों के अतिरिक्त और कोई व्यक्ति नहीं है। मैं चाहती हूं कि और कोई होता भी नहीं—सिवा लिजालू के। ”

कलेअर सोचने लगा कि यही ठीक रहेगा कि कुछ और उजाला होनेतक वह वहीं पड़ी रहे । उसने अपना ओवरकोट उसे उढ़ा दिया और तब उसके पार्श्व में बैठ गया ।

खंभों के मध्य में प्रवाहित वायु का संगीत जब वे दोनों बहुत देर तक सुनते रहे, तब टैमने कहा “ ऐंजिल, यदि मुझे कुछ हो जाय, तो क्या तुम मेरे कहने से मेरे पश्चात मेरी लिजालू की चिंता रखोगे ? ”

“ मैं अवश्य रखूंगा । ”

“ वह इतनी भली है, इतनी सरल है और ऐसी पवित्रा है, अरे ऐंजिल, यदि तुम मुझे खो दो जिसकी कि बहुत शीघ्र ही संभावना है, तो मैं चाहती हूं कि तुम लिजालू से विवाह कर लेना । अरे, कहीं तुम ऐसा कर सकते ? ”

“ यदि मैं तुम्हें खो दूंगा तो मेरा सर्वस्व ही खो जायगा । और दूसरी बात यह कि वह मेरी साली है । ”

“ मेरे सर्वप्रिय, इसकी कुछ चिंता नहीं । मारलत के आस-पास तो अपनी सालियों से बहुधा विवाह कर लेते हैं । और लिजालू ऐसी मृदुल—ऐसी मधुर है ; वह ऐसी सुन्दरी बनती जा रही है । जब हम लोग आत्माओं बन जावेंगे, तो फिर मैं भी तुम्हारे साथ ही साथ लिजालू में अनुराग रख सकूंगी । यदि तुम उसे सिखाओगे और शिक्षा दोगे, तो वह जैसा तुम चाहोगे बन जावेगी ।... उसमें मेरी सभी अच्छाइयां हैं तथा मेरी बुराई उसमें एक भी नहीं है ; और यदि वह तुम्हारी बन गई तो मैं समझूंगी कि मृत्यु ने हम लोगों को पृथक् नहीं किया । अच्छा मैं अब कह चुकी । इस विषय में अब मैं फिर कुछ भी न कहूंगी । ”

टैसने अपना कथन समाप्त कर दिया और क्लेअर विचारों में निमग्न हो गया। सुदूर पूर्व-उत्तर के आकाश में उसने खंभों के मध्य प्रकाश की एक रेखा देखी। काले बादल का घेरा सगरीर ऐसे ऊपर को उठता जा रहा था मानों किमी वर्तन से उसका ढक्कन उठाया जा रहा हो। पृथ्वी के दूसरे छोर पर इस प्रकार दिन को प्रवेग की आज्ञा मिल रही थी और अब वह समस्त स्तम्भ केवल साधारण रूप से काले रहते जाते थे।

“क्या लोग यहीं पर ईश्वर को बलि चढ़ाते थे?” टैस ने पूछा।

“नहीं—” उसने कहा।

“फिर किसकी चढ़ाते थे?”

“मैं समझता हूँ कि सूर्य को चढ़ाते होंगे। वह ऊँचा पत्थर उसी दिशा में है, जहाँ अभी सूर्य निकलेगा।”

इससे मुझे कुछ पुरानी बातें याद आती हैं—मेरे प्रिय—” वह बोली। “तुम्हें भी स्मरण होगा कि हमारे विवाह के पूर्व तुम मेरी किसी भी बात का, किसी भी विश्वास का विरोध न करते थे। लेकिन फिर भी मैं तुम्हारे मन की बात जान लेती थी; और मेरे विचार भी वैसे ही बन जाते थे—जैसे तुम्हारे विचार होते थे। उसके लिये कुछ मेरा तर्क उपयोगी न होता था। मैं तो उसी में विश्वास कर लेती थी, जिसमें तुम्हारा विश्वास होता था। अच्छा! अब अँजिल, यह बताओ कि क्या हम मृत्यु के पश्चात् भी मिल सकेंगे। मैं यह जानना चाहती हूँ।”

ऐसे समय उत्तर देने से बचने के लिये क्लेअर ने उस का

मुन्च चूम लिया ।

“ ओ अँजिल—इसका आशय मैं यही समझती हूँ कि हम मिल न सकेंगे । ” वह अपने रुदम को छिपाती हुई बोली । “ और मैं चाहती थी कि तुम्हें बार-बार और मन भरकर देखू ! क्या अँजिल ? मैं और तुम भी नहीं मिल सकते, जो एक दूसरे से इतना प्रेम करते हैं । ”

क्लेअर के मन में इस समय न जाने क्या भाव था । वह संभवतः अपने को अपने वास्तविक स्वरूप से अधिक महत्वपूर्ण जान रहा था ; इसी कारण उस कठिन समय में पूछे गए कठिन प्रश्न के उत्तर में वह कुछ न बोला ; और वे दोनों फिर मौन हो गए । एक या दो मिनट पश्चात् उसकी स्वास और नियमित होगई तथा क्लेअर के हाथ वह जिस दृढ़ता से पकड़े हुए थी, उसमें शिथिलता आगई और उसे नींद आगई । पूर्व के क्षितिज पर चांदी की झलक लिए हुए पीतता का समूह अब उस विशाल मैदान के और भी दूरी पर स्थित भागों को कालिमामय और समीप बतलाने लगा । उसके सामने का विशाल दृश्य वैसी ही शांति और अनिश्चयता दिखलाने लगा जैसी प्रत्येक दिन प्रभात के पूर्व देखी जाती है । पूर्व की ओर के स्तम्भ अपनी ऊपरी सजावट सहित उस प्रकाश में काले दिखलाई देते थे । उनके भी आगे विशाल—लौ के अनुरूप सूर्य-पाषाण था ; मध्य में बलि का पत्थर पड़ा ही था । तुरन्त ही रात्रि की हवा बन्द होगई । पत्थरों में बने हुए प्याले जैसे छोटे-छोटे जलमय छिद्र जो अब तक प्रकम्पित थे अब शान्त होगए । उसी समय पूर्व की ओर कोई वस्तु नीचे से उठती हुई दिखाई दी । प्राग्मभ में वह केवल एक लघुबिंदु सा प्रतीत होता था । वास्तव में वह एक मनुष्य का शिर था जो उनकी

ओर सूर्य-पाषाण के आगे से चला आ रहा था। क्लेअर चाहता था कि वे लोग कुछ आगे चलते परन्तु वर्तमान स्थिति में उसने शांति पूर्वक वहीं ठहरना अधिक उद्द्युक्त समझा। वह व्यक्ति सीधा खम्भों के उसी वृत्त की ओर आया जिसमें यह लोग थे।

क्लेअर ने कोई आइट उस व्यक्ति के पीछे भी सुनी। वह भी किसी के पैरों की ही आइट थी। मुड़ कर देखने पर झुके हुए खम्भों के उस पार उसने एक दूसरा व्यक्ति देखा। और फिर बिना किसी प्रकार की सूचना मिले, उसे एक अन्य व्यक्ति अपने दाहिनी ओर तीन-खम्भों के समूह के नीचे दिखाई दिया तथा एक उसकी बाईं ओर। पश्चिम की ओर मे आनेवाले व्यक्ति पर पूर्ण प्रकाश पड़ा और क्लेअर ने देखा कि वह लम्बा था तथा ऐसे चरता था मानों उसने सैनिक-शिक्षा ग्रहण की है। वे सब किमी मुख्य एवम स्पष्ट ध्येय के अनुसार एकत्रित हो रहे थे। टैस की कहानी तब तो सत्य थी। एक छलांग मार कर वह उठ खड़ा हुआ तथा कोई हथियार खोजने लगा—कोई पत्थर मिल जावे अथवा टैसकी रक्षा का कोई अन्य उपाय हो सके। इस समय तक सब से निकट वाला व्यक्ति उसके समीप आ चुका था।

“श्रीमान! अब इस से कुछ न होगा।” वह बोला।
 “मैदान में ही हम सोलह सिपाही हैं और कुल देहात छानी जा रही है।”

“अच्छा तो कमसे कम उसे अपनी निद्रा समाप्त कर लेने दो—” उसने धीरे से उन व्यक्तियों से कहा जो उनके चारों ओर एकत्रित हो रहे थे।

जब उन लोगों ने देख लिया कि वह कहाँ और किस दशा में

पड़ी है—तो उन्होंने कोई विरोध न किया। अब तक वे उसे देख न पाए थे। अब वे सब उसकी ओर ध्यान से देखते हुए समीपस्त खंभों की भांति स्थिर खड़े रहे। क्लेअर पत्थर के समीप आया और टैस के समीप झुक कर खड़ा होगया। उसने टैस का एक छोटा हाथ अपने हाथ में ले लिया। टैस की श्वास इस समय कुछ शीघ्रता से चल रही थी मानों वह स्त्री से कम महत्व का कोई जीव थी। उस बढ़ते हुए प्रकाश में सभी लोग प्रतीक्षा कर रहे थे; उनके हाथ और मुख पर मानों चांदी फेर दी गई थी; उनके शरीर के अन्य भाग धुंधले दिखाई दे रहे थे; पत्थर हरी तथा भूरी चमक से व्याप्त थे और मैदान में अबनक छाया फैली हुई थी। शीघ्र ही प्रकाश और फैला तथा एक ज्योति टैस के वेसुध कलेवर पर भी पड़ी जिसने उसके पलकों में प्रवेश कर उसे जगा दिया।

“ ऐंजिल ! यह सब क्या है ? ” उसने चौंक कर पूछा।

“ क्या यह लोग मुझे पकड़ने आए हैं ? ”

“ हां परमप्रिय ! वे आए हैं । ” वह बोला।

“ यह तो ठीक वैसा हो हो रहा है, जैसा होना चाहिए । ” वह धीरे-धीरे बोली। “ ऐंजिस—मुझे प्रसन्नता है। मैं पर्याप्त प्रसन्न हूं। मेरा यह सुख बहुत दिन नहीं चल सकता था। इतना ही मेरे लिए बहुत था। मुझे पर्याप्त सुख मिल चुका। अब मैं उस दिन को देखने के लिए जीवित न रहूंगी जब तुम मुझसे घृणा करते । ”

वह उठकर खड़ी होगई तथा स्वयं को उद्यत बनाकर आगे बढ़ी। उन मनुष्यों में से सब के सब जहां के तहां खड़े रहे।

“ मैं तैयार हूं—” टैस ने शान्त भाव से कहा।

विण्टनैस्टर एक पुराना सुन्दर नगर था। पहले वह वैसैक्स की राजधानी रहा था। उसके चारों ओर ऊंची नीची भूमि थी। जुलाई के प्रभात में वहां सूर्य की उष्णता और उसका प्रकाश भलीभांति व्याप्त हो रहा था। पुरानी ईंटों, खपरैलों और पत्थरों से बने हुए मकानों में पिछले मौसम में उत्पन्न होनेवाले घाम-फूम सब सूख चुके थे। चरागाहों में प्रवाहित होनेवाली सरिताओं में जल की कमी थी। यहां की चौड़ी सड़क के ढाल पर पश्चिम के फाटक से मध्यवर्ती चौराहे तक तथा उस चौराहे से पुल तक एक धीमी गति से झड़ने-बुहारने का कार्य चालू था जैसा कि बहुधा किसी पैंट के दिन होता है।

जिस पश्चिम के फाटक का अभी परिचय दिया है, उस से एक मार्ग ठीक एक मील लम्बा ऊपर की चढ़ाई तक जाता है। प्रत्येक विण्टनैस्टर निवासी इस मार्ग को जानता है। इस मार्ग पर जानेवाले पुराने मकानों को नीचे हो छोड़ जाते हैं। इसी मार्ग पर नगर के मध्य से दो व्यक्ति शीघ्रता से चले जा रहे थे मानों उन्हें इस बात का ध्यान ही था कि उनके सामने एक कठिन चढ़ाई है। उनके इस ओर ध्यान न देने का कारण कोई लापरवाही न थी; वास्तव में वह पढ़ते से ही अपने विचारों में लीन थे। वे इस सड़क पर एक ऊंची दीवार में लगे छड़ों वाले फाटक से अभी ही निकल कर आए थे। वे केवल एक ही बात के लिये उत्सुक थे। कैसे भी उन मकानों से तथा उनके निवासियों से शीघ्र ही दूर निकल चलें। यह सड़क ही उन्हें इस कार्य में सब से शीघ्र सहायता पहुंचानेवाली प्रतीत होती थी। यद्यपि वे अधिक वयस्का न थे फिर भी वे अपने शिर झुकाए चले जा रहे थे। उनकी इस

दुःख भरी गति पर सूर्य-रश्मियाँ निर्दयता से मुस्करा रहीं थीं ।

इन दोनों व्यक्तियों में एक तो ऐंजिल क्लेअर था और दूसरा एक विकासोन्मुख प्राणी था—जिसे अर्द्धबालिका तथा अर्द्ध महिला कह सकते थे । वह टैस की ही आत्मा का प्रतिबिम्ब थी—उससे कुछ छोटी पर उस जैसी ही सुन्दर आँखोंवाली । वह थी क्लेअर की साली लिजालू । उनके पीताननों को देखकर अनुमान किया जा सकता था कि वे अपने स्वाभाविक विकास के इस समय आधे हैं । वे हाथ में हाथ मिलाए आगे बढ़ रहे थे तथा एक दूसरे से कुछ भी बात न कर रहे थे । उन के शिर इस समय ऐसे अवनत थे मानों वे धार्मिक पुस्तकों में वीराति 'दो महात्मा' हों ।

जब वे उस पच्छिमी पहाड़ी के सिरे के समीप पहुँच गए तो नगर की घड़ी ने आठ बजाए । इस के घंटों को सुनकर दोनों चौंक पड़े तथा थोड़े से पग और आगे बढ़ाकर वे पहले मील के पत्थर के सामने पहुँच गए जो हरी घास के मध्य अपनी श्वेतता लिए खड़ा था । इसी के समीप एक नीचा छोटासा घेरा था जिसके लिए यहीं से मार्ग था । वे इसी घास के घेरे में घुस गए तथा किसी ऐसी शक्ति के प्रभाव में, जो उनकी इच्छा पर भी शासन कर सकती थी, वे वहाँ यकायक खड़े रह गए । वहाँ खड़े होकर वे एक ओर मुड़ गए तथा एक पत्थर के पार्श्व में यथावत खड़े रहकर किसी की प्रतीक्षा करने लगे ।

इस चोटी से जो दृश्य दिखलाई देता था, उसकी कहीं भी सीमा न थी । नीचे घाटी में वह नगर था, जिसे पीछे छोड़ कर वे यहाँ आए थे तथा जिसकी प्रमुख-प्रमुख इमारतें यहाँ से चित्र-लिखी सी समझ पड़ती थीं—चौड़ी गिरिजाघर की मीनार जिसमें नार्मन दग

की खिडकियां थीं तथा सामने बहुत सा भाग खाली पड़ा था; सैं थौमस के गिरजे की चोटियां तथा कालिज की बहुत ऊन्ची मीनार; तथा और दाहिनी ओर प्राचीन अतिथ्य-गृह की मीनार तथा फाटक जहां आज भी यात्री को अपनी रोटी और पेय के पश्चात् दूसरा दृश्य दिखलाई देता था और अन्त में क्षितिज पर सूर्य की चमक के कारण प्रकाश के सिवा और कुछ न दिखलाई देता था।

देहात के इन विस्तृत दृश्यों के सामने नगर की अन्य इमारतों में एक बड़ी लाल-ईंटों की इमारत थी जिसकी छतें एक ही सतह पर भूरे रंग की थीं। इस में कई छोड़ोवाली खिडकियां लगी थीं जिनसे वहां कैदियों के रखे जाने का अनुमान लगाया जा सकता था। अन्य इमारतें नार्मन कला के अनुसार सजावट के साथ बनी हुई थीं परन्तु इसका ढंग साधारण था। सड़क पर होकर जो लोग आते थे उनकी दृष्टि से यह सामने के वृक्षों के कारण छिप जाती थी लेकिन यहां से यह साफ दिखलाई देती थी। जिस फाटक से यह जोड़ी निकल कर आई थी—वह इसी इमारत में लगा था। इसी इमारत के मध्य में एक मढ़ी सिरे पर चौड़ी अष्टभुजी मीनार पूर्वीय क्षितिज तक पहुंचती हुई बनी थी। इस स्थान से देखनेपर प्रकाश के विपरीत दिशा में होने के कारण इस पर परछाई पड़ रही थी तथा वह नगर के सौंदर्य पर एक धब्बा सा प्रतीत होता था। लेकिन इस समय तो यह दोनों देखनेवाले इसी धब्बे की ओर ध्यान लगाए थे—नगर के सौन्दर्य की ओर नहीं।

इस मीनार की कोर्निस पर एक लम्बा बांस गड़ा हुआ था। उन दोनों की आंखें इसीपर लगी हुई थीं। घंटे के बजने के कुछ ही मिनट उपरांत कोई वस्तु धीरे-धीरे बांस पर चढ़ती हुई ऊपर आई

तथा हवा में झूलने लगी । वह एक काला झंडा था ।

न्याय हो चुका था और धार्मिक ग्रन्थों की भाषा में यमराज ने टैस की जीवन-लीला समाप्त कर दी थी । और इस समय दरबारविल वंश के सरदार और उनकी रानियां इस से अनजान बनीं अपनी कब्रों में सोती रहीं । दोनों मूक दर्शकों ने अपने शीर भूमिपर झुका लिए मानों वे कुछ प्रार्थना कर रहे हों । वे दोनों बहुत देर तक इसी प्रकार गतिहीन बने रहे । वह झंडा भी चुपचाप झुकता रहा । ज्यों ही उनमें शक्ति आई, वे उठे तथा हाथ में हाथ मिलाए फिर चलने लगे ।

